



Rajesh jain

10 Jun 1972

08:33 PM

Pansemal

Model: Web-KundliDarpan

Order No: 120626501

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 10/06/1972
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 20:33:00 घंटे
इष्ट _____: 36:52:52 घटी
स्थान _____: Pansemal
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 21:42:00 उत्तर
रेखांश _____: 74:43:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:31:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 20:01:52 घंटे
वेलान्तर _____: 00:00:40 घंटे
साम्पातिक काल _____: 13:18:06 घंटे
सूर्योदय _____: 05:47:51 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:13:22 घंटे
दिनमान _____: 13:25:31 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: ग्रीष्म
सूर्य के अंश _____: 26:20:04 वृष
लग्न के अंश _____: 15:28:15 धनु

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: धनु - गुरु
राशि-स्वामी _____: वृष - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: रोहिणी - 2
नक्षत्र स्वामी _____: चन्द्र
योग _____: धृति
करण _____: चतुष्पाद
गण _____: मनुष्य
योनि _____: सर्प
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: वा-वासुदेव
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मिथुन

पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1894	ज्येष्ठ	20
पंजाबी	संवत : 2029	ज्येष्ठ	28
बंगाली	सन् : 1379	ज्येष्ठ	27
तमिल	संवत : 2029	वैकासी	28
केरल	कोल्लम : 1147	इदवम	28
नेपाली	संवत : 2029	ज्येष्ठ	28
चैत्रादि	संवत : 2029	ज्येष्ठ	कृष्ण 14
कार्तिकादि	संवत : 2029	वैशाख	कृष्ण 14

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 14
 तिथि समाप्ति काल _____ : 20:22:49
 जन्म तिथि _____ : 15
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : कृतिका
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 13:27:26 घंटे
 जन्म योग _____ : रोहिणी
 सूर्योदय कालीन योग _____ : सुकर्मा
 योग समाप्ति काल _____ : 09:22:23 घंटे
 जन्म योग _____ : धृति
 सूर्योदय कालीन करण _____ : विष्टि
 करण समाप्ति काल _____ : 10:07:55 घंटे
 जन्म करण _____ : चतुष्पाद
 भयात _____ : 17:43:55
 भोग्य _____ : 53:27:27
 भोग्य दशा काल _____ : चंद्र 6 वर्ष 8 मा 3 दि

घात चक्र

मास _____ : मार्गशीर्ष
 तिथि _____ : 5-10-15
 दिन _____ : शनिवार
 नक्षत्र _____ : हस्त
 योग _____ : शुक्ल
 करण _____ : शकुनि
 प्रहर _____ : 4
 वर्ग _____ : सिंह
 लग्न _____ : वृष
 सूर्य _____ : वृश्चिक
 चन्द्र _____ : कन्या
 मंगल _____ : धनु
 बुध _____ : कन्या
 गुरु _____ : मकर
 शुक्र _____ : मकर
 शनि _____ : तुला
 राहु _____ : मकर

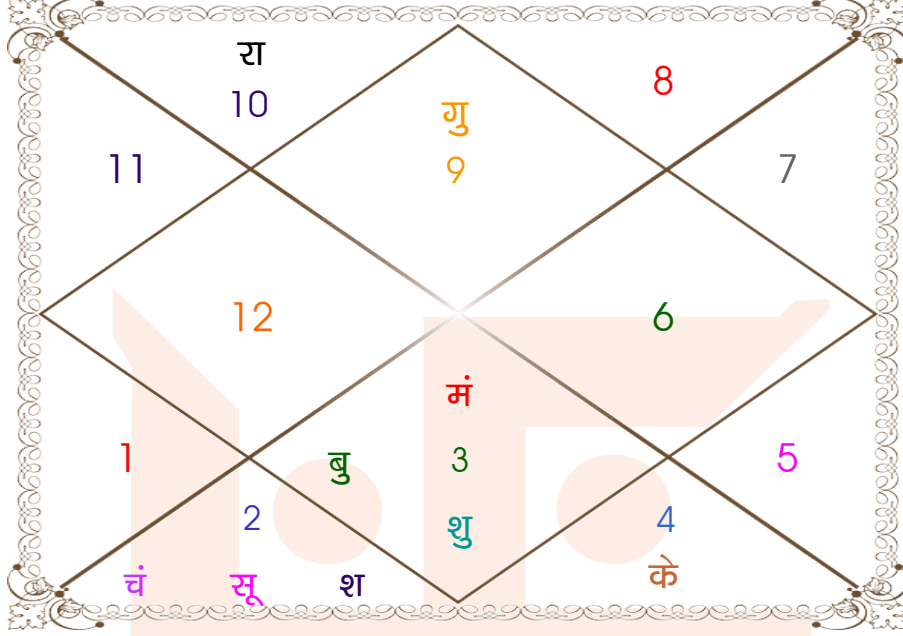
Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj

Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
 Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

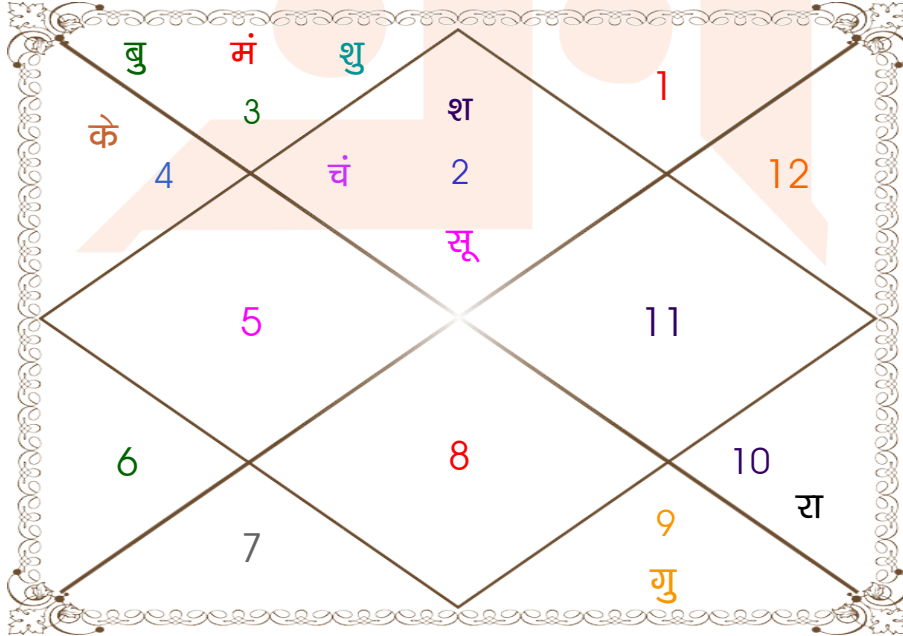
+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
 www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
 Saturnpublicatins@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj

Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

		श सू चं	शु मं बु
			के
रा			
गु ल			

लग्न कुण्डली

श चं सू		
शु बु मं		
के		रा
		ल गु

विंशोत्तरी
चन्द्र 6वर्ष 8मा 3दि
चन्द्र

10/06/1972

12/02/2089

चन्द्र	12/02/1979
मंगल	12/02/1986
राहु	13/02/2004
गुरु	13/02/2020
शनि	12/02/2039
बुध	13/02/2056
केतु	12/02/2063
शुक्र	12/02/2083
सूर्य	12/02/2089

योगिनी
सिद्धा 4वर्ष 8मा 2दि
धान्या

12/02/2024

11/02/2027

धान्या	13/05/2024
भामरी	12/09/2024
भद्रिका	11/02/2025
उल्का	13/08/2025
सिद्धा	14/03/2026
संकटा	12/11/2026
मंगला	13/12/2026
पिंगला	11/02/2027

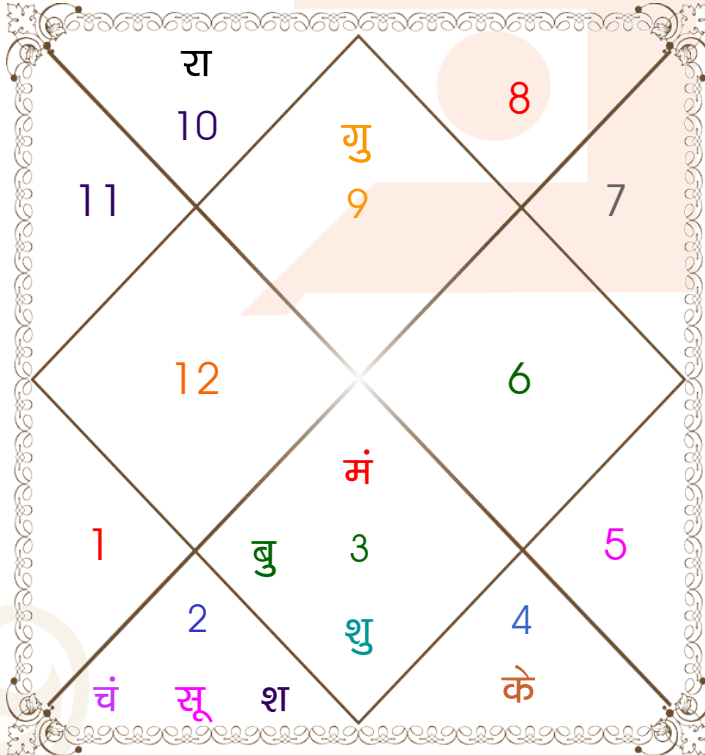
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			धनु	15:28:15	343:06:18	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	---
सूर्य			वृष	26:20:04	00:57:22	मृगशिरा	1	5	शुक्र	मंगल	गुरु	शत्रु राशि
चंद्र			वृष	14:26:01	14:59:17	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	गुरु	मूलत्रिकोण
मंगल			मिथु	25:04:33	00:38:08	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	बुध	शत्रु राशि
बुध	अ		मिथु	03:21:27	02:08:11	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगल	शुक्र	स्वराशि
गुरु	व		धनु	11:44:52	00:07:07	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	स्वराशि
शुक्र	व		मिथु	07:11:08	00:31:53	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	राहु	मित्र राशि
शनि	अ		वृष	17:48:52	00:07:45	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	बुध	मित्र राशि
राहु	व		मक	02:59:41	00:05:03	उत्तराषाढा	2	21	शनि	सूर्य	गुरु	मित्र राशि
केतु	व		कर्क	02:59:41	00:05:03	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	राहु	मित्र राशि
हर्ष	व		कन्या	20:46:15	00:00:35	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	---
नेप	व		वृश्चि	09:58:11	00:01:33	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	शुक्र	---
प्लूटो			कन्या	05:50:11	00:00:03	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	बुध	---
दशम भाव			कन्या	27:39:45	--	चित्रा	--	14	बुध	मंगल	गुरु	--

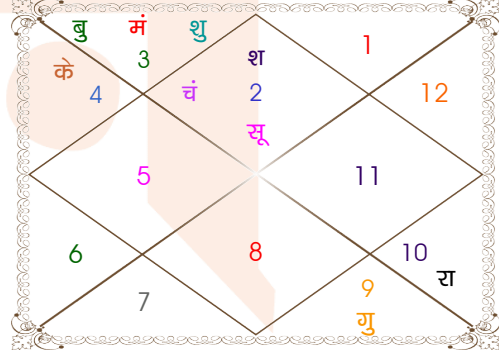
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:28:34

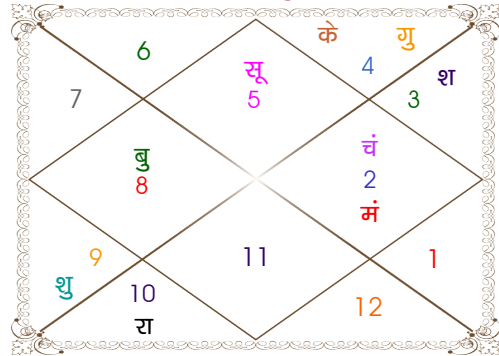
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj

Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211

www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	धनु 02:30:10	धनु 15:28:15
2	मकर 02:30:10	मकर 19:32:05
3	कुम्भ 06:34:00	कुम्भ 23:35:55
4	मीन 10:37:50	मीन 27:39:45
5	मेष 10:37:50	मेष 23:35:55
6	वृष 06:34:00	वृष 19:32:05
7	मिथुन 02:30:10	मिथुन 15:28:15
8	कर्क 02:30:10	कर्क 19:32:05
9	सिंह 06:34:00	सिंह 23:35:55
10	कन्या 10:37:50	कन्या 27:39:45
11	तुला 10:37:50	तुला 23:35:55
12	वृश्चिक 06:34:00	वृश्चिक 19:32:05

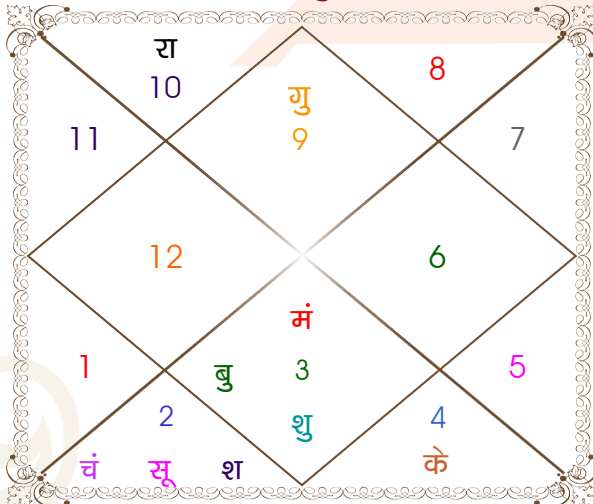
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	15:28:15
2	मकर	18:54:14
3	कुम्भ	24:26:54
4	मीन	27:39:45
5	मेष	26:05:03
6	वृष	21:02:03
7	मिथुन	15:28:15
8	कर्क	18:54:14
9	सिंह	24:26:54
10	कन्या	27:39:45
11	तुला	26:05:03
12	वृश्चिक	21:02:03

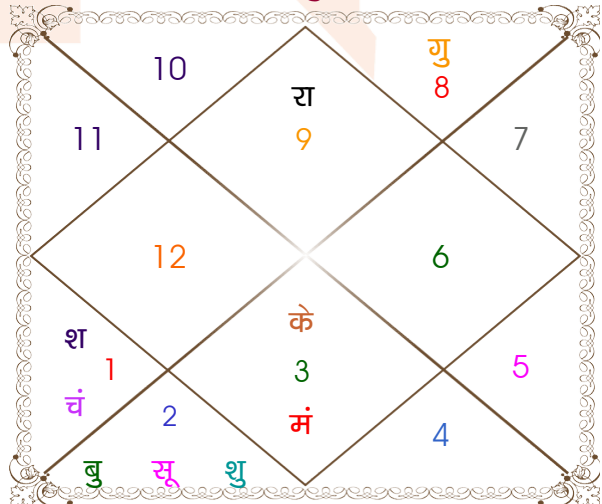
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj

Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211

www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

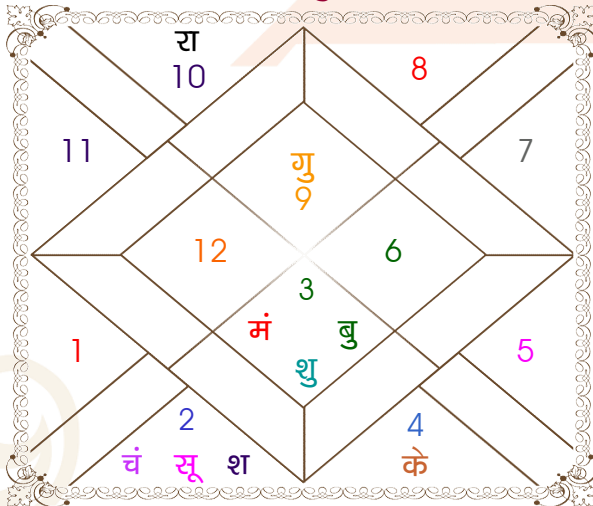
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----					
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	आत्मा	पितृ	बाल	खल	गमन	7.43	58 %
चंद्र	मातृ	मातृ	युवा	स्वस्थ	गमन	16.86	62 %
मंगल	अमात्य	भातृ	मृत	खल	शयन	0.37	45 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	बाल	विकल	गमन	0.00	78 %
गुरु	पुत्र	धन	कुमार	स्वस्थ	भोजन	1.36	33 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	कुमार	मुदित	शयन	4.88	52 %
शनि	भातृ	आयु	युवा	विकल	शयन	1.03	29 %
राहु	---	ज्ञान	मृत	मुदित	शयन	0.00	97 %
केतु	---	मोक्ष	मृत	मुदित	प्रकाश	0.00	97 %
कुल						31.92	

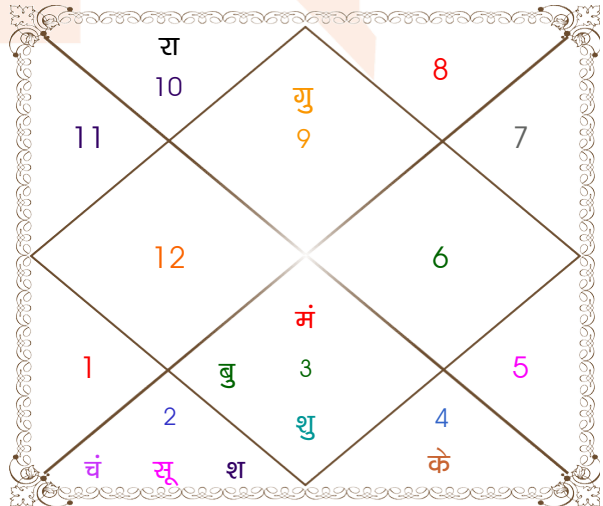
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली



लग्न-चलित



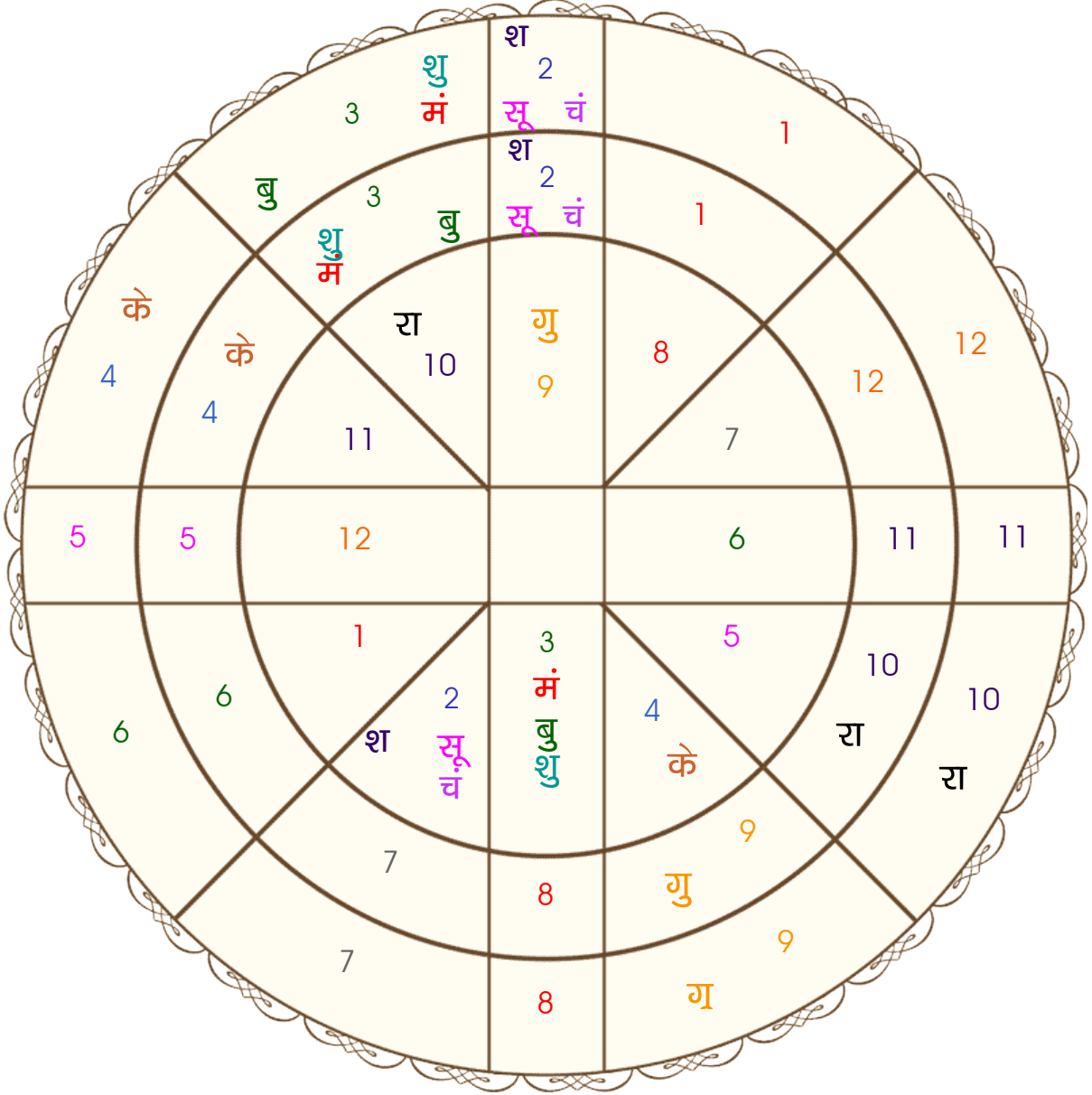
Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj

Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211

www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

सुदर्शन चक्र



नोट: सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत्त से अन्तः वृत्त तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

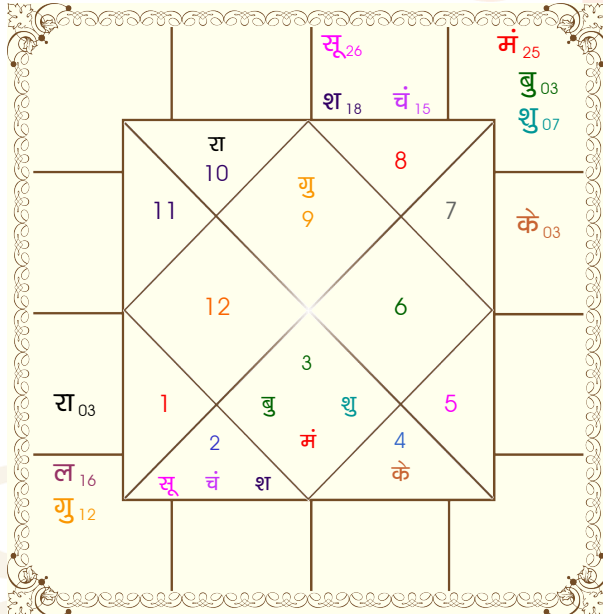
भोग्य दशा काल : चन्द्र 6 वर्ष 7 मास 4 दिन

ग्रह							निरयण भाव						
ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं. प्र.	भाव	राशि	अंश	रा	न	अं. प्र.	
सूर्य		वृष	26:26:26	शुक्र	मंगल	गुरु शनि	1	धनु	15:34:37	गुरु	शुक्र	सूर्य सूर्य	
चंद्र		वृष	14:32:22	शुक्र	चंद्र	गुरु बुध	2	मक	19:00:36	शनि	चंद्र	बुध राहु	
मंगल		मिथु	25:10:55	बुध	गुरु	बुध राहु	3	कुंभ	24:33:15	शनि	गुरु	बुध शुक्र	
बुध		मिथु	03:27:49	बुध	मंगल	शुक्र राहु	4	मीन	27:46:07	गुरु	बुध	गुरु राहु	
गुरु	व	धनु	11:51:14	गुरु	केतु	बुध शुक्र	5	मेष	26:11:25	मंगल	शुक्र	केतु मंगल	
शुक्र	व	मिथु	07:17:30	बुध	राहु	राहु शनि	6	वृष	21:08:25	शुक्र	चंद्र	शुक्र मंगल	
शनि		वृष	17:55:13	शुक्र	चंद्र	बुध बुध	7	मिथु	15:34:37	बुध	राहु	शुक्र शुक्र	
राहु	व	मक	03:06:02	शनि	सूर्य	शनि शनि	8	कर्क	19:00:36	चंद्र	बुध	केतु गुरु	
केतु	व	कर्क	03:06:02	चंद्र	गुरु	राहु चंद्र	9	सिंह	24:33:15	सूर्य	शुक्र	बुध शुक्र	
हर्ष	व	कन्या	20:52:37	बुध	चंद्र	शुक्र सूर्य	10	कन्या	27:46:07	बुध	मंगल	गुरु राहु	
नेप	व	वृश्चि	10:04:33	मंगल	शनि	शुक्र बुध	11	तुला	26:11:25	शुक्र	गुरु	केतु राहु	
प्लूटो		कन्या	05:56:33	बुध	सूर्य	बुध चंद्र	12	वृश्चि	21:08:25	मंगल	बुध	शुक्र बुध	

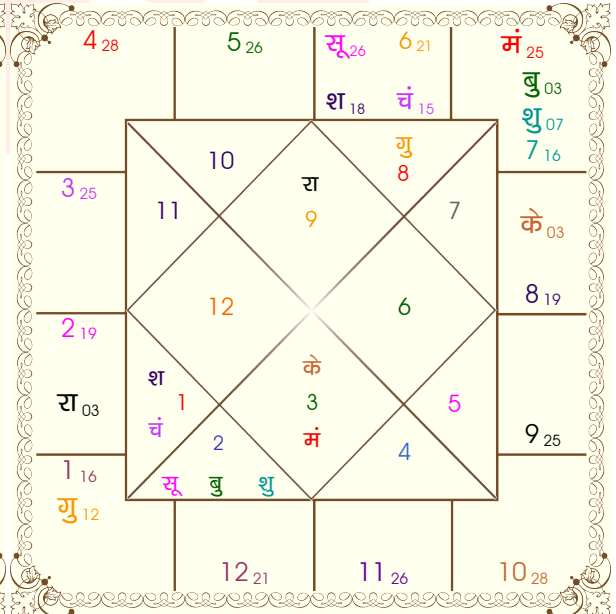
के.पी. अयनांश : 23:22:12

फॉरच्युना : धनु 03:40:34

लग्न कुंडली



भाव कुंडली



Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj

Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211

www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल- गुरु- शुक्र, राहु, केतु-
2	शनि-
3	शनि-
4	मंगल- गुरु- केतु-
5	सूर्य- चंद्र+ मंगल- बुध- शनि+
6	सूर्य, बुध, शुक्र, राहु,
7	सूर्य, मंगल, बुध+ गुरु, केतु,
8	चंद्र, शनि-
9	सूर्य- राहु-
10	बुध-
11	शुक्र-
12	सूर्य- मंगल+ बुध- गुरु, केतु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	5- 6, 7, 9- 12-
चंद्र	5+ 8,
मंगल	1- 4- 5- 7, 12+
बुध	5- 6, 7+ 10- 12-
गुरु	1- 4- 7, 12,
शुक्र	1, 6, 11-
शनि	2- 3- 5+ 8-
राहु	1, 6, 9-
केतु	1- 4- 7, 12,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शुक्र
लग्न राशि स्वामी	गुरु
राशि नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	शनि
लग्न अन्तर स्वामी	सूर्य
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

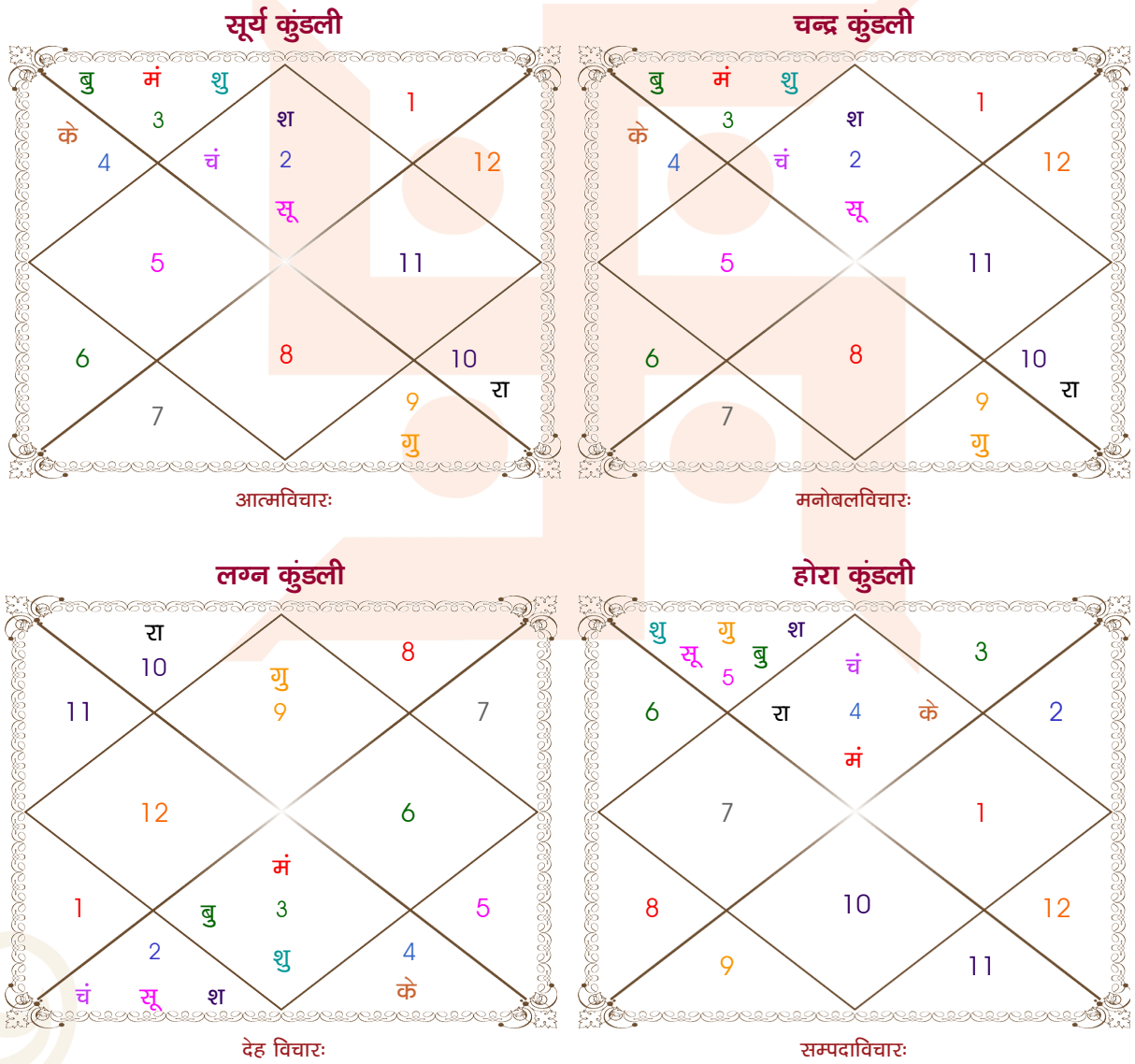
Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj

Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिए, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।



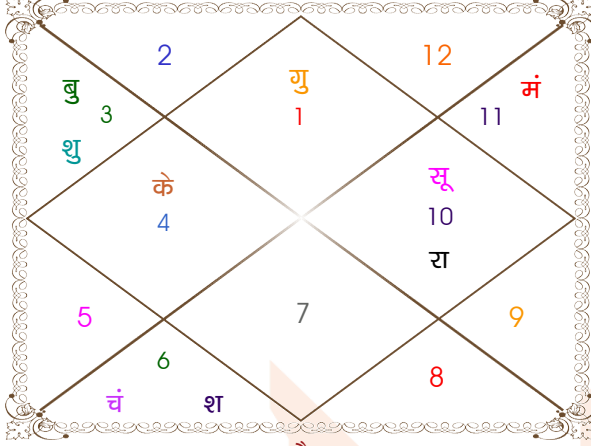
Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj

Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
 Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

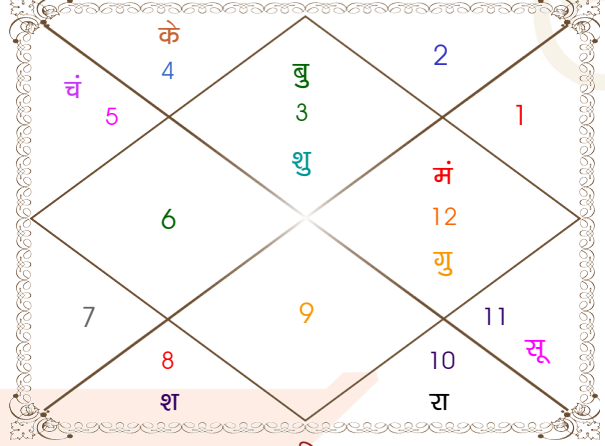
षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली



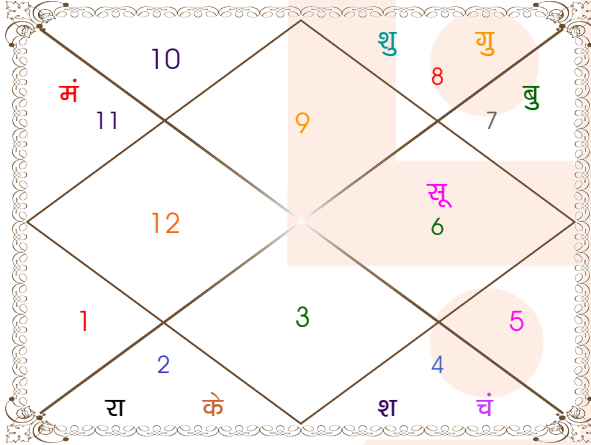
भातृसौख्यम्

चतुर्थाश कुंडली



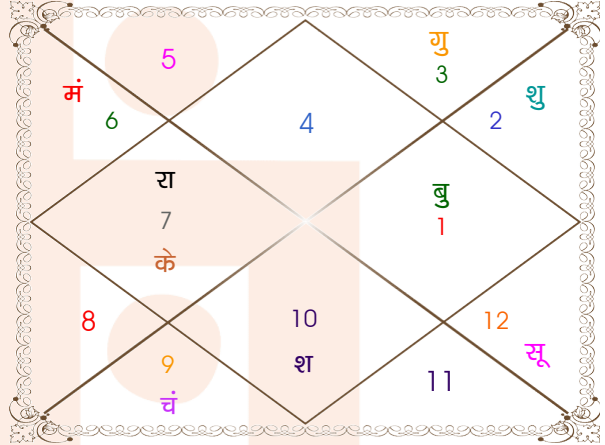
भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली



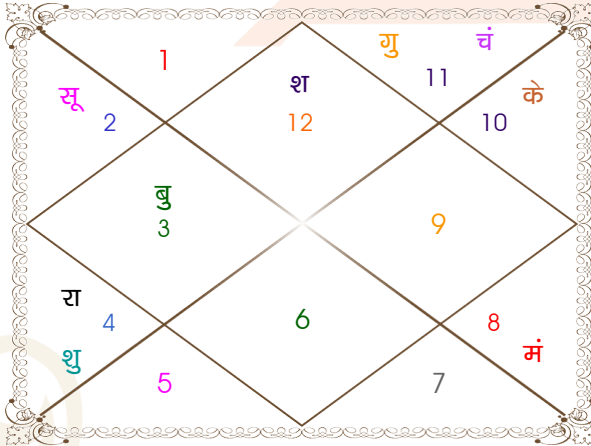
ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली



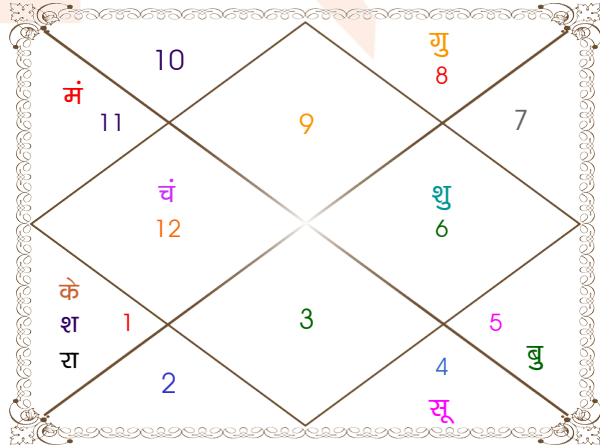
रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली



पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली



आयुविचारः

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj

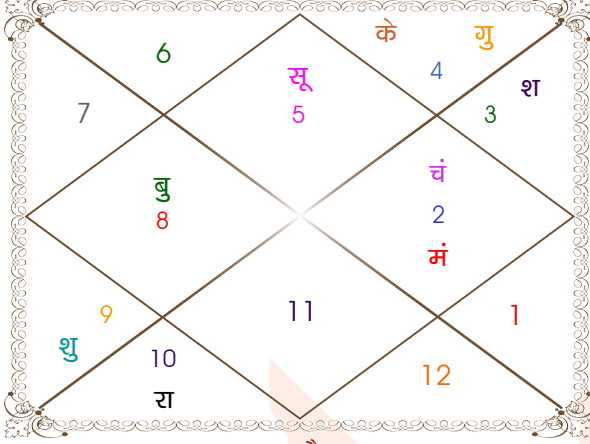
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211

www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

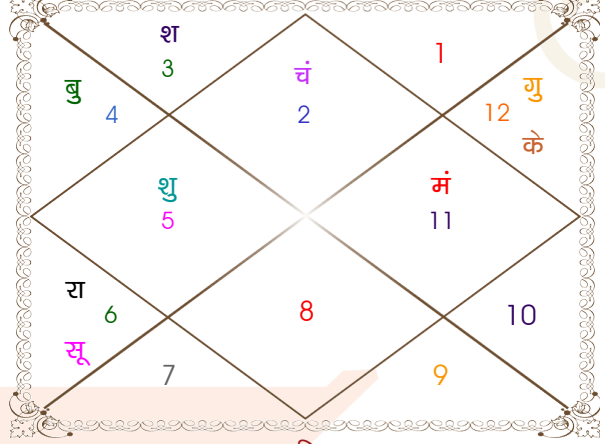
षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली



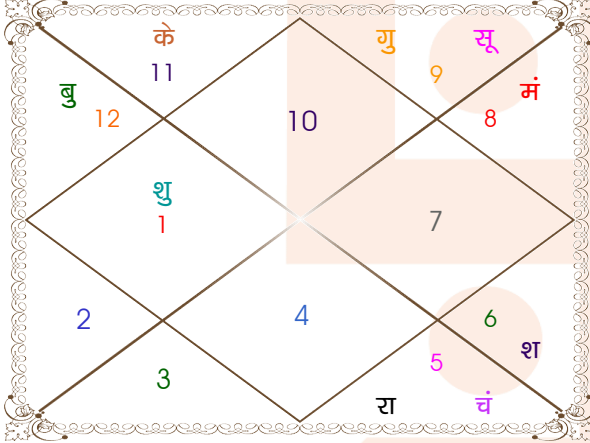
कलत्र सौख्यम्

दशमांश कुंडली



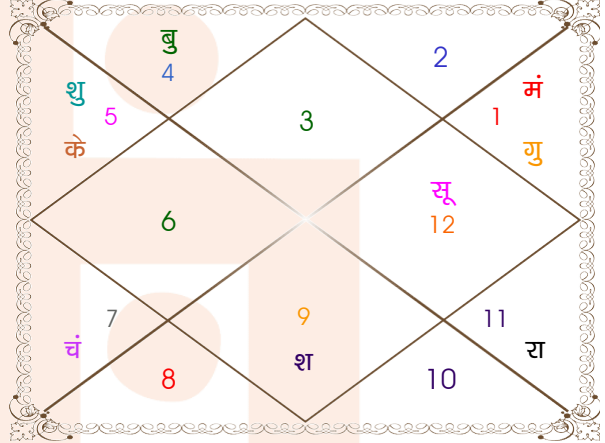
राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली



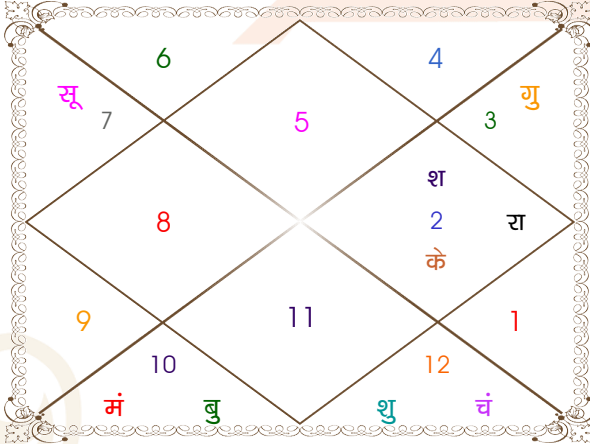
लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली



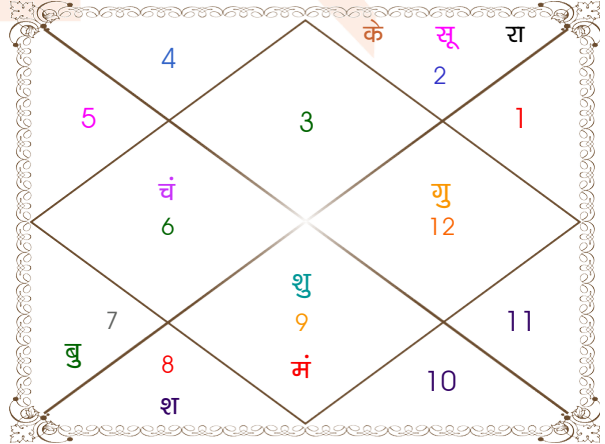
पितृसौख्यम्

षोडशांश कुंडली



वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली



उपासनाज्ञानम्

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj

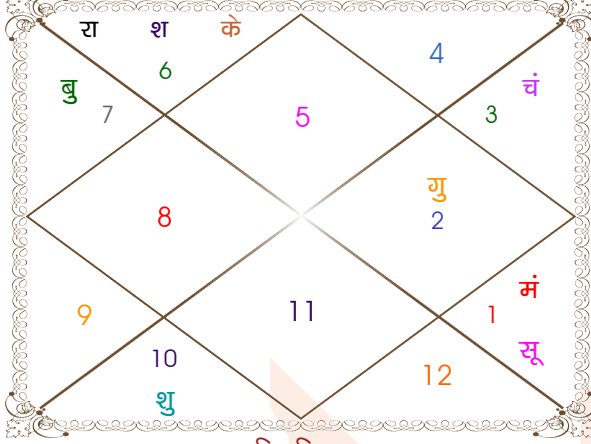
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211

www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

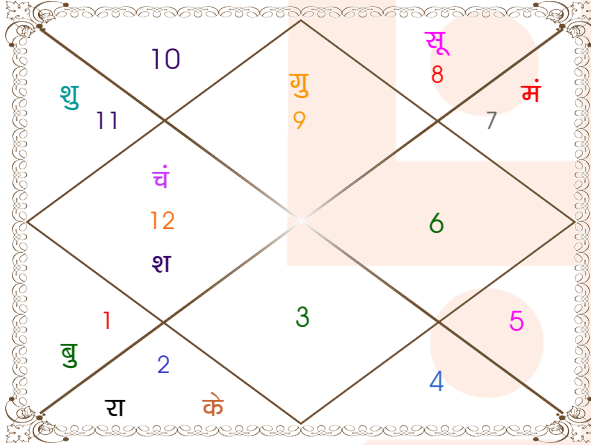
षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशश कुंडली



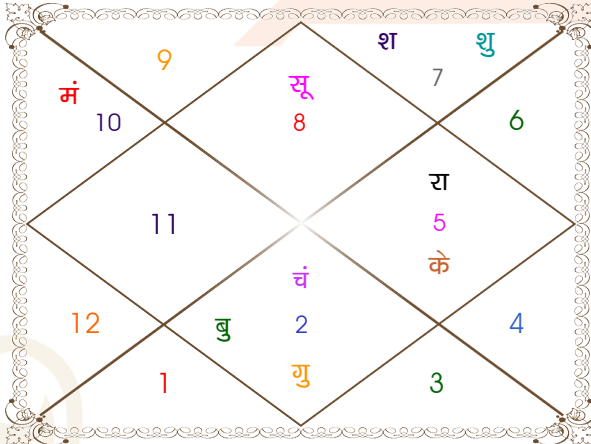
विद्याविचारः

त्रिंशश कुंडली



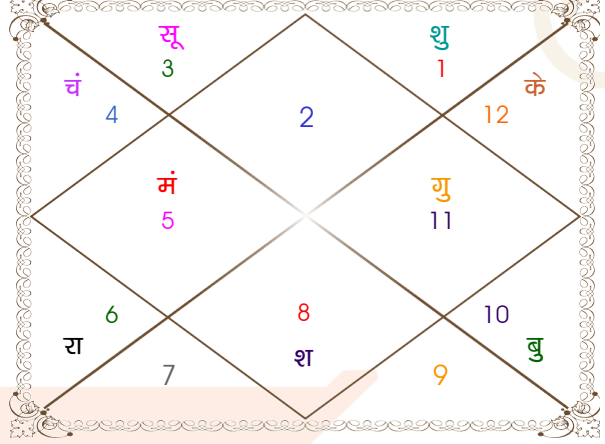
अरिष्टज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली



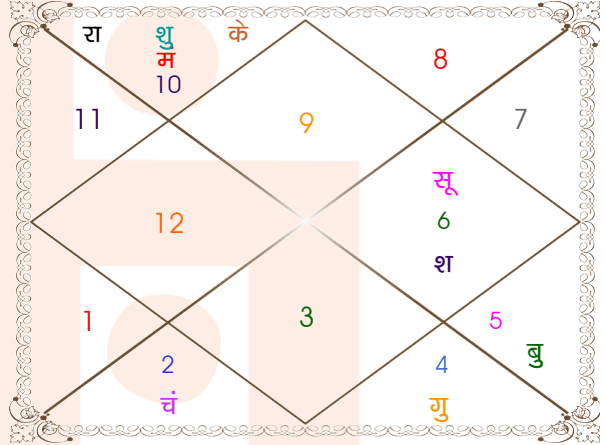
सर्वास्थितिविचारः

सप्तविंशश कुंडली



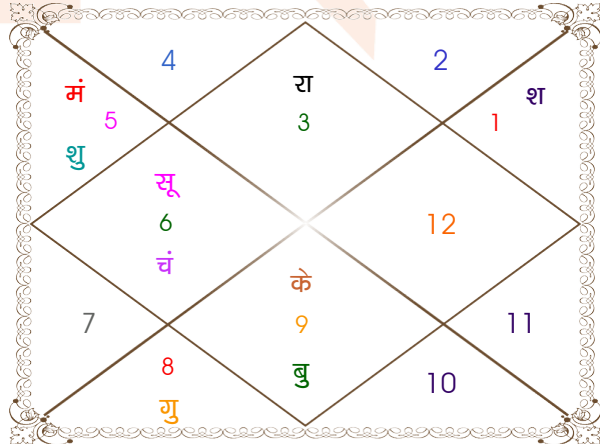
बलाबलज्ञानम्

खवेदांश कुंडली



शुभाशुभज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली



सर्वास्थितिविचारः

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj

Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211

www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com

Saturnpublicatins@gmail.com

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	धनु	वृष	वृष	मिथु	मिथु	धनु	मिथु	वृष	मक	कर्क
होरा	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	मेष	मक	कन्या	कुंभ	मिथु	मेष	मिथु	कन्या	मक	कर्क
चतुर्थांश	मिथु	कुंभ	सिंह	मीन	मिथु	मीन	मिथु	वृश्चि	मक	कर्क
सप्तमांश	मीन	वृष	कुंभ	वृश्चि	मिथु	कुंभ	कर्क	मीन	कर्क	मक
नवमांश	सिंह	सिंह	वृष	वृष	वृश्चि	कर्क	धनु	मिथु	मक	कर्क
दशमांश	वृष	कन्या	वृष	कुंभ	कर्क	मीन	सिंह	मिथु	कन्या	मीन
द्वादशांश	मिथु	मीन	तुला	मेष	कर्क	मेष	सिंह	धनु	कुंभ	सिंह
षोडशांश	सिंह	तुला	मीन	मक	मक	मिथु	मीन	वृष	वृष	वृष
विंशांश	मिथु	वृष	कन्या	धनु	तुला	मीन	धनु	वृश्चि	वृष	वृष
चतुर्विंशांश	सिंह	मेष	मिथु	मेष	तुला	वृष	मक	कन्या	कन्या	कन्या
सप्तविंशांश	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	मक	कुंभ	मेष	वृश्चि	कन्या	मीन
त्रिंशांश	धनु	वृश्चि	मीन	तुला	मेष	धनु	कुंभ	मीन	वृष	वृष
खवेदांश	धनु	कन्या	वृष	मक	सिंह	कर्क	मक	कन्या	मक	मक
अक्षवेदांश	वृश्चि	वृश्चि	वृष	मक	वृष	वृष	तुला	तुला	सिंह	सिंह
षष्ट्यंश	मिथु	कन्या	कन्या	सिंह	धनु	वृश्चि	सिंह	मेष	मिथु	धनु

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम
चन्द्र	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	7 कल्पवृक्ष
मंगल	1 ---	2 किंसुक	3 उत्तम	6 केरल
बुध	2 किंसुक	3 व्यंजन	3 उत्तम	4 नागपुष्प
गुरु	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	7 कल्पवृक्ष
शुक्र	0 ---	0 ---	1 ---	2 भेदक
शनि	0 ---	0 ---	0 ---	1 ---
राहु	0 ---	0 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
केतु	0 ---	0 ---	2 पारिजात	3 कुसुम

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	12.90	15.70	10.40	14.90	13.50	9.65	15.05	9.50	10.40
सप्तवर्ग	12.90	14.55	11.73	15.23	12.63	9.72	13.68	8.88	10.40
दशवर्ग	13.35	14.55	14.03	12.78	12.40	10.15	12.55	8.28	10.23
षोडशवर्ग	13.80	14.75	12.60	12.78	12.10	10.15	14.05	8.68	10.78

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj

Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
चंद्र	शत्रु	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	मित्र
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु
केतु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	मित्र	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम
चंद्र	सम	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु	सम	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	सम	शत्रु	---	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	सम	सम	सम	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	सम	शत्रु	सम	शत्रु	---	अतिमित्र	सम	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	---	सम	सम
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	---	अधिशत्रु
केतु	सम	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	45	56	11	26	8	37	9
सप्तवर्गज बल	107	135	107	128	109	64	81
ओजयुग्मक बल	15	30	15	15	15	0	15
केन्द्र बल	15	15	60	60	60	60	15
द्रेष्काण बल	0	0	0	0	0	0	15
कुल स्थान बल	181	236	193	229	192	160	135
कुल दिग्बल	20	44	29	4	59	37	51
नतोन्नत बल	20	40	40	60	20	20	40
पक्ष बल	56	112	56	56	4	4	56
त्रिभाग बल	0	60	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	15	0	0	0
मास बल	30	0	0	0	0	0	0
वार बल	0	0	0	0	0	0	45
होरा बल	0	0	0	0	0	0	60
अयन बल	119	2	58	60	0	60	2
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	225	214	155	191	84	84	203
कुल चेष्टाबल	0	0	11	10	54	57	3
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	7	1	11	11	-45	13	3
कुल षट्बल	493	548	416	470	378	394	403
रूप षट्बल	8.2	9.1	6.9	7.8	6.3	6.6	6.7
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.6	1.5	1.4	1.1	1.0	1.2	1.3
संबंधित पद	1	2	3	6	7	5	4

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	50.22	14.93	11.19	16.25	20.48	45.86	5.14
कष्ट फल	7.24	14.61	48.81	41.12	17.56	7.72	53.84

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	378	403	403	378	416	394	470	548	493	470	394	416
भावदिग्बल	30	40	40	60	10	20	0	20	50	30	40	10
भावदृष्टि बल	22	16	20	38	48	16	58	27	62	18	-6	-4
कुल भाव बल	430	459	463	476	474	430	528	595	606	518	428	423
रूप भाव बल	7.2	7.7	7.7	7.9	7.9	7.2	8.8	9.9	10.1	8.6	7.1	7.0
संबंधित पद	9	8	7	5	6	10	3	2	1	4	11	12

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj

Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

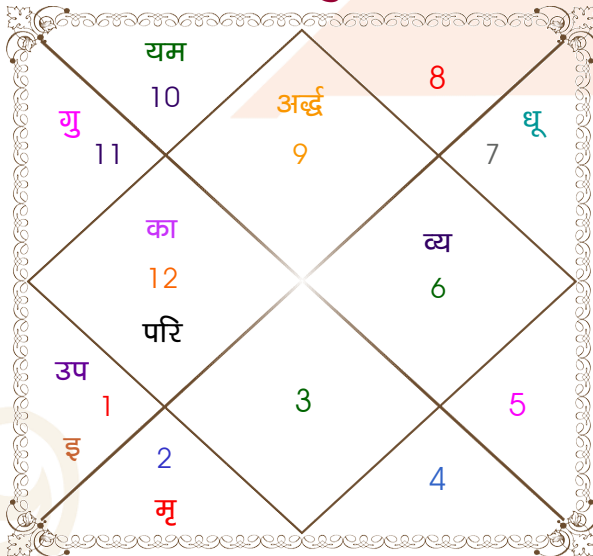
+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

उपग्रह एवं आरुढ़

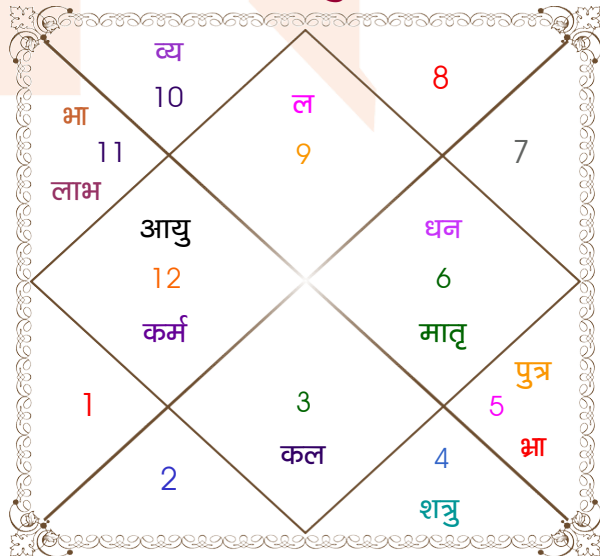
उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	धनु	15:28:15	--	--	पूर्वाषाढ़ा	1	20
गुलिक	गु	कुंभ	22:33:11	--	मूल	पू०भाद्रपद	1	25
काल	का	मीन	18:38:04	--	--	रेवती	1	27
मृत्यु	मृ	वृष	06:04:05	--	--	कृतिका	3	3
यमघंटक	यम	मक	05:28:05	--	--	उत्तराषाढ़ा	3	21
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	धनु	15:37:47	--	--	पूर्वाषाढ़ा	1	20
धूम	धू	तुला	09:40:04	--	--	स्वाति	1	15
व्यतिपात	व्य	कन्या	20:19:56	--	--	हस्त	4	13
परिवेश	परि	मीन	20:19:56	--	--	रेवती	2	27
इन्द्रचाप	इ	मेष	09:40:04	--	--	अश्विनी	3	1
उपकेतु	उप	मेष	26:20:04	--	--	भरणी	4	2

प्राणपद	:	वृष	12:04:04	कारकौश लग्न	:	सिंह	27:00:35
भाव लग्न	:	मक	07:37:16	होरा लग्न	:	सिंह	18:54:28
घटी लग्न	:	मिथु	22:46:04	वर्णद लग्न	:	कुंभ	25:37:17

उपग्रह कुंडली



आरुढ़ कुंडली



Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj

Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
गुरु	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
लग्न	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	6
कुल	6	3	2	4	2	4	5	4	3	6	6	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
मंगल	0	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	6
सूर्य	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	6
शुक्र	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	7
बुध	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	4
कुल	2	2	5	3	5	8	3	4	3	4	7	3	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	मे	वृकुल	
शनि	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	7
गुरु	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	5
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	4
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	5
कुल	1	3	2	4	5	4	3	3	3	4	3	4	39

बुध का अष्टकवर्ग

	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	मे	वृकुल
शनि	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1 8
गुरु	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1 4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0 8
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0 5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0 8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1 8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0 6
लग्न	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1 7
कुल	5	4	4	4	6	3	4	5	5	6	4	4 54

गुरु का अष्टकवर्ग

	ध	म	कु	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृ	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
सूर्य	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	9
शुक्र	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	6
बुध	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	5
लग्न	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9
कुल	4	5	4	7	5	2	6	6	2	6	5	4	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	मे	वृकुल
शनि	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0 7
गुरु	0	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0 5
मंगल	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1 6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0 3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0 9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0 5
चंद्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1 9
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0 8
कुल	2	5	7	5	4	2	4	4	5	5	7	2 52

शनि का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	6
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	3
बुध	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	6
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	6
कुल	6	1	2	2	2	5	5	2	1	3	6	4	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
गुरु	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9
मंगल	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	5
सूर्य	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
शुक्र	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	0	7
बुध	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	7
चंद्र	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	1	3	5	6	5	3	4	5	5	4	6	2	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	6	1	2	2	2	5	5	2	1	3	6	39
गुरु	5	2	6	6	2	6	5	4	4	5	4	7	56
मंगल	3	4	1	3	2	4	5	4	3	3	3	4	39
सूर्य	3	6	3	2	4	2	4	5	4	3	6	6	48
शुक्र	7	2	2	5	7	5	4	2	4	4	5	5	52
बुध	4	4	5	4	4	4	6	3	4	5	5	6	54
चंद्र	3	2	2	5	3	5	8	3	4	3	4	7	49
बिन्दु	29	26	20	27	24	28	37	26	25	24	30	41	337
रेखा	27	30	36	29	32	28	19	30	31	32	26	15	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	5	0	0	0	1	4	3	0	0	2	4	21
गुरु	3	0	2	2	0	4	1	0	2	3	0	3	20
मंगल	1	1	0	0	0	1	4	1	1	0	2	1	12
सूर्य	0	4	0	0	1	0	1	3	1	1	3	4	18
शुक्र	3	0	0	3	3	3	2	0	0	2	3	3	22
बुध	0	0	0	1	0	0	1	0	0	1	0	3	6
चंद्र	0	0	0	2	0	3	6	0	1	1	2	4	19
रेखा	9	10	2	8	4	12	19	7	5	8	12	22	118

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	5	0	0	0	1	0	1	0	0	2	4	15
गुरु	3	0	2	2	0	2	1	0	2	3	0	1	16
मंगल	0	1	0	0	0	1	3	0	1	0	2	0	8
सूर्य	0	4	0	0	1	0	0	3	1	1	2	3	15
शुक्र	3	0	0	3	3	3	2	0	0	2	1	3	20
बुध	0	0	0	1	0	0	1	0	0	1	0	3	6
चंद्र	0	0	0	2	0	3	6	0	1	1	1	3	17
रेखा	8	10	2	8	4	10	13	4	5	8	8	17	97

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	146	126	67	52	107	149	147
ग्रह पिंड	70	10	25	0	60	0	75
शोध्य पिंड	216	136	92	52	167	149	222

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj

Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग	सर्वाष्टकवर्ग	चंद्र का अष्टकवर्ग
मंगल का अष्टकवर्ग	बुध का अष्टकवर्ग	गुरु का अष्टकवर्ग
शुक्र का अष्टकवर्ग	शनि का अष्टकवर्ग	लग्न का अष्टकवर्ग

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 6 वर्ष 8 मास 3 दिन

चंद्र 10 वर्ष 10/06/1972 12/02/1979	मंगल 7 वर्ष 12/02/1979 12/02/1986	राहु 18 वर्ष 12/02/1986 13/02/2004	गुरु 16 वर्ष 13/02/2004 13/02/2020	शनि 19 वर्ष 13/02/2020 12/02/2039
00/00/0000	मंगल 12/07/1979	राहु 25/10/1988	गुरु 02/04/2006	शनि 15/02/2023
00/00/0000	राहु 29/07/1980	गुरु 21/03/1991	शनि 13/10/2008	बुध 26/10/2025
10/06/1972	गुरु 05/07/1981	शनि 25/01/1994	बुध 19/01/2011	केतु 04/12/2026
गुरु 14/05/1973	शनि 14/08/1982	बुध 13/08/1996	केतु 26/12/2011	शुक्र 03/02/2030
शनि 13/12/1974	बुध 11/08/1983	केतु 01/09/1997	शुक्र 26/08/2014	सूर्य 16/01/2031
बुध 14/05/1976	केतु 07/01/1984	शुक्र 31/08/2000	सूर्य 14/06/2015	चंद्र 16/08/2032
केतु 13/12/1976	शुक्र 08/03/1985	सूर्य 26/07/2001	चंद्र 13/10/2016	मंगल 25/09/2033
शुक्र 14/08/1978	सूर्य 14/07/1985	चंद्र 25/01/2003	मंगल 19/09/2017	राहु 01/08/2036
सूर्य 12/02/1979	चंद्र 12/02/1986	मंगल 13/02/2004	राहु 13/02/2020	गुरु 12/02/2039
बुध 17 वर्ष 12/02/2039 13/02/2056	केतु 7 वर्ष 13/02/2056 12/02/2063	शुक्र 20 वर्ष 12/02/2063 12/02/2083	सूर्य 6 वर्ष 12/02/2083 12/02/2089	चंद्र 10 वर्ष 12/02/2089 00/00/0000
बुध 11/07/2041	केतु 11/07/2056	शुक्र 14/06/2066	सूर्य 02/06/2083	चंद्र 13/12/2089
केतु 08/07/2042	शुक्र 10/09/2057	सूर्य 14/06/2067	चंद्र 02/12/2083	मंगल 14/07/2090
शुक्र 08/05/2045	सूर्य 16/01/2058	चंद्र 12/02/2069	मंगल 07/04/2084	राहु 13/01/2092
सूर्य 15/03/2046	चंद्र 17/08/2058	मंगल 14/04/2070	राहु 02/03/2085	गुरु 10/06/2092
चंद्र 14/08/2047	मंगल 13/01/2059	राहु 14/04/2073	गुरु 19/12/2085	00/00/0000
मंगल 10/08/2048	राहु 31/01/2060	गुरु 14/12/2075	शनि 01/12/2086	00/00/0000
राहु 28/02/2051	गुरु 06/01/2061	शनि 12/02/2079	बुध 08/10/2087	00/00/0000
गुरु 04/06/2053	शनि 15/02/2062	बुध 13/12/2081	केतु 13/02/2088	00/00/0000
शनि 13/02/2056	बुध 12/02/2063	केतु 12/02/2083	शुक्र 12/02/2089	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 6 वर्ष 8 मा 6 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - गुरु	चंद्र - शनि	चंद्र - बुध	चंद्र - केतु	चंद्र - शुक्र
10/06/1972	14/05/1973	13/12/1974	14/05/1976	13/12/1976
14/05/1973	13/12/1974	14/05/1976	13/12/1976	14/08/1978
00/00/0000	शनि 14/08/1973	बुध 25/02/1975	केतु 26/05/1976	शुक्र 24/03/1977
10/06/1972	बुध 04/11/1973	केतु 27/03/1975	शुक्र 01/07/1976	सूर्य 24/04/1977
बुध 11/08/1972	केतु 07/12/1973	शुक्र 21/06/1975	सूर्य 12/07/1976	चंद्र 14/06/1977
केतु 09/09/1972	शुक्र 14/03/1974	सूर्य 17/07/1975	चंद्र 29/07/1976	मंगल 19/07/1977
शुक्र 29/11/1972	सूर्य 12/04/1974	चंद्र 29/08/1975	मंगल 11/08/1976	राहु 18/10/1977
सूर्य 23/12/1972	चंद्र 30/05/1974	मंगल 28/09/1975	राहु 12/09/1976	गुरु 08/01/1978
चंद्र 02/02/1973	मंगल 03/07/1974	राहु 15/12/1975	गुरु 10/10/1976	शनि 14/04/1978
मंगल 02/03/1973	राहु 27/09/1974	गुरु 22/02/1976	शनि 13/11/1976	बुध 09/07/1978
राहु 14/05/1973	गुरु 13/12/1974	शनि 14/05/1976	बुध 13/12/1976	केतु 14/08/1978
चंद्र - सूर्य	मंगल - मंगल	मंगल - राहु	मंगल - गुरु	मंगल - शनि
14/08/1978	12/02/1979	12/07/1979	29/07/1980	05/07/1981
12/02/1979	12/07/1979	29/07/1980	05/07/1981	14/08/1982
सूर्य 23/08/1978	मंगल 21/02/1979	राहु 07/09/1979	गुरु 12/09/1980	शनि 07/09/1981
चंद्र 07/09/1978	राहु 15/03/1979	गुरु 28/10/1979	शनि 05/11/1980	बुध 03/11/1981
मंगल 18/09/1978	गुरु 04/04/1979	शनि 28/12/1979	बुध 24/12/1980	केतु 27/11/1981
राहु 15/10/1978	शनि 28/04/1979	बुध 20/02/1980	केतु 13/01/1981	शुक्र 02/02/1982
गुरु 08/11/1978	बुध 19/05/1979	केतु 14/03/1980	शुक्र 10/03/1981	सूर्य 23/02/1982
शनि 07/12/1978	केतु 28/05/1979	शुक्र 17/05/1980	सूर्य 27/03/1981	चंद्र 28/03/1982
बुध 02/01/1979	शुक्र 22/06/1979	सूर्य 05/06/1980	चंद्र 25/04/1981	मंगल 21/04/1982
केतु 13/01/1979	सूर्य 29/06/1979	चंद्र 07/07/1980	मंगल 15/05/1981	राहु 21/06/1982
शुक्र 12/02/1979	चंद्र 12/07/1979	मंगल 29/07/1980	राहु 05/07/1981	गुरु 14/08/1982
मंगल - बुध	मंगल - केतु	मंगल - शुक्र	मंगल - सूर्य	मंगल - चंद्र
14/08/1982	11/08/1983	07/01/1984	08/03/1985	14/07/1985
11/08/1983	07/01/1984	08/03/1985	14/07/1985	12/02/1986
बुध 04/10/1982	केतु 20/08/1983	शुक्र 18/03/1984	सूर्य 15/03/1985	चंद्र 01/08/1985
केतु 25/10/1982	शुक्र 13/09/1983	सूर्य 08/04/1984	चंद्र 25/03/1985	मंगल 13/08/1985
शुक्र 25/12/1982	सूर्य 21/09/1983	चंद्र 14/05/1984	मंगल 02/04/1985	राहु 14/09/1985
सूर्य 12/01/1983	चंद्र 03/10/1983	मंगल 08/06/1984	राहु 21/04/1985	गुरु 13/10/1985
चंद्र 11/02/1983	मंगल 12/10/1983	राहु 11/08/1984	गुरु 08/05/1985	शनि 15/11/1985
मंगल 04/03/1983	राहु 03/11/1983	गुरु 07/10/1984	शनि 28/05/1985	बुध 16/12/1985
राहु 27/04/1983	गुरु 23/11/1983	शनि 13/12/1984	बुध 15/06/1985	केतु 28/12/1985
गुरु 15/06/1983	शनि 17/12/1983	बुध 11/02/1985	केतु 23/06/1985	शुक्र 01/02/1986
शनि 11/08/1983	बुध 07/01/1984	केतु 08/03/1985	शुक्र 14/07/1985	सूर्य 12/02/1986

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु 12/02/1986 25/10/1988	राहु - गुरु 25/10/1988 21/03/1991	राहु - शनि 21/03/1991 25/01/1994	राहु - बुध 25/01/1994 13/08/1996	राहु - केतु 13/08/1996 01/09/1997
राहु 10/07/1986 गुरु 19/11/1986 शनि 24/04/1987 बुध 10/09/1987 केतु 07/11/1987 शुक्र 19/04/1988 सूर्य 08/06/1988 चंद्र 29/08/1988 मंगल 25/10/1988	गुरु 19/02/1989 शनि 08/07/1989 बुध 09/11/1989 केतु 30/12/1989 शुक्र 25/05/1990 सूर्य 08/07/1990 चंद्र 19/09/1990 मंगल 09/11/1990 राहु 21/03/1991	शनि 02/09/1991 बुध 27/01/1992 केतु 28/03/1992 शुक्र 17/09/1992 सूर्य 08/11/1992 चंद्र 03/02/1993 मंगल 05/04/1993 राहु 08/09/1993 गुरु 25/01/1994	बुध 06/06/1994 केतु 30/07/1994 शुक्र 01/01/1995 सूर्य 17/02/1995 चंद्र 06/05/1995 मंगल 29/06/1995 राहु 16/11/1995 गुरु 19/03/1996 शनि 13/08/1996	केतु 05/09/1996 शुक्र 08/11/1996 सूर्य 27/11/1996 चंद्र 29/12/1996 मंगल 20/01/1997 राहु 19/03/1997 गुरु 09/05/1997 शनि 08/07/1997 बुध 01/09/1997
राहु - शुक्र 01/09/1997 31/08/2000	राहु - सूर्य 31/08/2000 26/07/2001	राहु - चंद्र 26/07/2001 25/01/2003	राहु - मंगल 25/01/2003 13/02/2004	गुरु - गुरु 13/02/2004 02/04/2006
शुक्र 02/03/1998 सूर्य 26/04/1998 चंद्र 26/07/1998 मंगल 28/09/1998 राहु 12/03/1999 गुरु 05/08/1999 शनि 25/01/2000 बुध 29/06/2000 केतु 31/08/2000	सूर्य 17/09/2000 चंद्र 14/10/2000 मंगल 03/11/2000 राहु 22/12/2000 गुरु 04/02/2001 शनि 28/03/2001 बुध 13/05/2001 केतु 01/06/2001 शुक्र 26/07/2001	चंद्र 10/09/2001 मंगल 12/10/2001 राहु 02/01/2002 गुरु 16/03/2002 शनि 11/06/2002 बुध 27/08/2002 केतु 28/09/2002 शुक्र 29/12/2002 सूर्य 25/01/2003	मंगल 16/02/2003 राहु 15/04/2003 गुरु 05/06/2003 शनि 05/08/2003 बुध 28/09/2003 केतु 21/10/2003 शुक्र 23/12/2003 सूर्य 12/01/2004 चंद्र 13/02/2004	गुरु 27/05/2004 शनि 27/09/2004 बुध 15/01/2005 केतु 02/03/2005 शुक्र 10/07/2005 सूर्य 18/08/2005 चंद्र 21/10/2005 मंगल 06/12/2005 राहु 02/04/2006
गुरु - शनि 02/04/2006 13/10/2008	गुरु - बुध 13/10/2008 19/01/2011	गुरु - केतु 19/01/2011 26/12/2011	गुरु - शुक्र 26/12/2011 26/08/2014	गुरु - सूर्य 26/08/2014 14/06/2015
शनि 26/08/2006 बुध 04/01/2007 केतु 27/02/2007 शुक्र 01/08/2007 सूर्य 16/09/2007 चंद्र 02/12/2007 मंगल 25/01/2008 राहु 12/06/2008 गुरु 13/10/2008	बुध 07/02/2009 केतु 28/03/2009 शुक्र 13/08/2009 सूर्य 23/09/2009 चंद्र 01/12/2009 मंगल 18/01/2010 राहु 23/05/2010 गुरु 10/09/2010 शनि 19/01/2011	केतु 08/02/2011 शुक्र 06/04/2011 सूर्य 23/04/2011 चंद्र 21/05/2011 मंगल 10/06/2011 राहु 31/07/2011 गुरु 15/09/2011 शनि 08/11/2011 बुध 26/12/2011	शुक्र 05/06/2012 सूर्य 24/07/2012 चंद्र 13/10/2012 मंगल 09/12/2012 राहु 04/05/2013 गुरु 11/09/2013 शनि 12/02/2014 बुध 30/06/2014 केतु 26/08/2014	सूर्य 10/09/2014 चंद्र 04/10/2014 मंगल 21/10/2014 राहु 04/12/2014 गुरु 12/01/2015 शनि 27/02/2015 बुध 09/04/2015 केतु 26/04/2015 शुक्र 14/06/2015

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj

Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - चंद्र 14/06/2015 13/10/2016	गुरु - मंगल 13/10/2016 19/09/2017	गुरु - राहु 19/09/2017 13/02/2020	शनि - शनि 13/02/2020 15/02/2023	शनि - बुध 15/02/2023 26/10/2025
चंद्र 25/07/2015 मंगल 22/08/2015 राहु 03/11/2015 गुरु 07/01/2016 शनि 24/03/2016 बुध 01/06/2016 केतु 30/06/2016 शुक्र 19/09/2016 सूर्य 13/10/2016	मंगल 02/11/2016 राहु 23/12/2016 गुरु 07/02/2017 शनि 02/04/2017 बुध 20/05/2017 केतु 09/06/2017 शुक्र 05/08/2017 सूर्य 22/08/2017 चंद्र 19/09/2017	राहु 29/01/2018 गुरु 25/05/2018 शनि 11/10/2018 बुध 12/02/2019 केतु 04/04/2019 शुक्र 29/08/2019 सूर्य 11/10/2019 चंद्र 23/12/2019 मंगल 13/02/2020	शनि 05/08/2020 बुध 07/01/2021 केतु 12/03/2021 शुक्र 11/09/2021 सूर्य 05/11/2021 चंद्र 05/02/2022 मंगल 10/04/2022 राहु 22/09/2022 गुरु 15/02/2023	बुध 05/07/2023 केतु 31/08/2023 शुक्र 11/02/2024 सूर्य 31/03/2024 चंद्र 21/06/2024 मंगल 17/08/2024 राहु 12/01/2025 गुरु 23/05/2025 शनि 26/10/2025
शनि - केतु 26/10/2025 04/12/2026	शनि - शुक्र 04/12/2026 03/02/2030	शनि - सूर्य 03/02/2030 16/01/2031	शनि - चंद्र 16/01/2031 16/08/2032	शनि - मंगल 16/08/2032 25/09/2033
केतु 18/11/2025 शुक्र 25/01/2026 सूर्य 14/02/2026 चंद्र 20/03/2026 मंगल 12/04/2026 राहु 12/06/2026 गुरु 05/08/2026 शनि 08/10/2026 बुध 04/12/2026	शुक्र 15/06/2027 सूर्य 12/08/2027 चंद्र 16/11/2027 मंगल 23/01/2028 राहु 14/07/2028 गुरु 16/12/2028 शनि 17/06/2029 बुध 28/11/2029 केतु 03/02/2030	सूर्य 20/02/2030 चंद्र 21/03/2030 मंगल 10/04/2030 राहु 02/06/2030 गुरु 18/07/2030 शनि 11/09/2030 बुध 30/10/2030 केतु 19/11/2030 शुक्र 16/01/2031	चंद्र 05/03/2031 मंगल 08/04/2031 राहु 04/07/2031 गुरु 19/09/2031 शनि 19/12/2031 बुध 10/03/2032 केतु 13/04/2032 शुक्र 18/07/2032 सूर्य 16/08/2032	मंगल 09/09/2032 राहु 09/11/2032 गुरु 02/01/2033 शनि 07/03/2033 बुध 03/05/2033 केतु 27/05/2033 शुक्र 02/08/2033 सूर्य 22/08/2033 चंद्र 25/09/2033
शनि - राहु 25/09/2033 01/08/2036	शनि - गुरु 01/08/2036 12/02/2039	बुध - बुध 12/02/2039 11/07/2041	बुध - केतु 11/07/2041 08/07/2042	बुध - शुक्र 08/07/2042 08/05/2045
राहु 28/02/2034 गुरु 17/07/2034 शनि 29/12/2034 बुध 25/05/2035 केतु 25/07/2035 शुक्र 15/01/2036 सूर्य 07/03/2036 चंद्र 01/06/2036 मंगल 01/08/2036	गुरु 02/12/2036 शनि 28/04/2037 बुध 06/09/2037 केतु 30/10/2037 शुक्र 02/04/2038 सूर्य 18/05/2038 चंद्र 04/08/2038 मंगल 27/09/2038 राहु 12/02/2039	बुध 17/06/2039 केतु 07/08/2039 शुक्र 01/01/2040 सूर्य 14/02/2040 चंद्र 27/04/2040 मंगल 17/06/2040 राहु 27/10/2040 गुरु 22/02/2041 शनि 11/07/2041	केतु 01/08/2041 शुक्र 01/10/2041 सूर्य 19/10/2041 चंद्र 18/11/2041 मंगल 09/12/2041 राहु 01/02/2042 गुरु 22/03/2042 शनि 18/05/2042 बुध 08/07/2042	शुक्र 28/12/2042 सूर्य 17/02/2043 चंद्र 15/05/2043 मंगल 14/07/2043 राहु 16/12/2043 गुरु 02/05/2044 शनि 13/10/2044 बुध 09/03/2045 केतु 08/05/2045

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य 08/05/2045 15/03/2046	बुध - चंद्र 15/03/2046 14/08/2047	बुध - मंगल 14/08/2047 10/08/2048	बुध - राहु 10/08/2048 28/02/2051	बुध - गुरु 28/02/2051 04/06/2053
सूर्य 24/05/2045 चंद्र 18/06/2045 मंगल 07/07/2045 राहु 22/08/2045 गुरु 03/10/2045 शनि 21/11/2045 बुध 04/01/2046 केतु 22/01/2046 शुक्र 15/03/2046	चंद्र 27/04/2046 मंगल 27/05/2046 राहु 12/08/2046 गुरु 20/10/2046 शनि 10/01/2047 बुध 25/03/2047 केतु 24/04/2047 शुक्र 19/07/2047 सूर्य 14/08/2047	मंगल 04/09/2047 राहु 28/10/2047 गुरु 16/12/2047 शनि 11/02/2048 बुध 02/04/2048 केतु 24/04/2048 शुक्र 23/06/2048 सूर्य 11/07/2048 चंद्र 10/08/2048	राहु 28/12/2048 गुरु 01/05/2049 शनि 26/09/2049 बुध 05/02/2050 केतु 31/03/2050 शुक्र 02/09/2050 सूर्य 19/10/2050 चंद्र 04/01/2051 मंगल 28/02/2051	गुरु 18/06/2051 शनि 27/10/2051 बुध 21/02/2052 केतु 10/04/2052 शुक्र 26/08/2052 सूर्य 06/10/2052 चंद्र 14/12/2052 मंगल 31/01/2053 राहु 04/06/2053
बुध - शनि 04/06/2053 13/02/2056	केतु - केतु 13/02/2056 11/07/2056	केतु - शुक्र 11/07/2056 10/09/2057	केतु - सूर्य 10/09/2057 16/01/2058	केतु - चंद्र 16/01/2058 17/08/2058
शनि 07/11/2053 बुध 26/03/2054 केतु 23/05/2054 शुक्र 03/11/2054 सूर्य 22/12/2054 चंद्र 14/03/2055 मंगल 10/05/2055 राहु 05/10/2055 गुरु 13/02/2056	केतु 21/02/2056 शुक्र 17/03/2056 सूर्य 25/03/2056 चंद्र 06/04/2056 मंगल 15/04/2056 राहु 07/05/2056 गुरु 27/05/2056 शनि 20/06/2056 बुध 11/07/2056	शुक्र 20/09/2056 सूर्य 11/10/2056 चंद्र 16/11/2056 मंगल 10/12/2056 राहु 12/02/2057 गुरु 10/04/2057 शनि 17/06/2057 बुध 16/08/2057 केतु 10/09/2057	सूर्य 16/09/2057 चंद्र 27/09/2057 मंगल 04/10/2057 राहु 24/10/2057 गुरु 10/11/2057 शनि 30/11/2057 बुध 18/12/2057 केतु 25/12/2057 शुक्र 16/01/2058	चंद्र 02/02/2058 मंगल 15/02/2058 राहु 19/03/2058 गुरु 16/04/2058 शनि 20/05/2058 बुध 19/06/2058 केतु 02/07/2058 शुक्र 06/08/2058 सूर्य 17/08/2058
केतु - मंगल 17/08/2058 13/01/2059	केतु - राहु 13/01/2059 31/01/2060	केतु - गुरु 31/01/2060 06/01/2061	केतु - शनि 06/01/2061 15/02/2062	केतु - बुध 15/02/2062 12/02/2063
मंगल 25/08/2058 राहु 17/09/2058 गुरु 07/10/2058 शनि 30/10/2058 बुध 20/11/2058 केतु 29/11/2058 शुक्र 24/12/2058 सूर्य 31/12/2058 चंद्र 13/01/2059	राहु 11/03/2059 गुरु 02/05/2059 शनि 01/07/2059 बुध 25/08/2059 केतु 16/09/2059 शुक्र 19/11/2059 सूर्य 08/12/2059 चंद्र 09/01/2060 मंगल 31/01/2060	गुरु 17/03/2060 शनि 10/05/2060 बुध 27/06/2060 केतु 17/07/2060 शुक्र 12/09/2060 सूर्य 29/09/2060 चंद्र 27/10/2060 मंगल 16/11/2060 राहु 06/01/2061	शनि 11/03/2061 बुध 08/05/2061 केतु 31/05/2061 शुक्र 07/08/2061 सूर्य 27/08/2061 चंद्र 30/09/2061 मंगल 23/10/2061 राहु 23/12/2061 गुरु 15/02/2062	बुध 07/04/2062 केतु 29/04/2062 शुक्र 28/06/2062 सूर्य 16/07/2062 चंद्र 15/08/2062 मंगल 05/09/2062 राहु 30/10/2062 गुरु 17/12/2062 शनि 12/02/2063

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र 12/02/2063 14/06/2066	शुक्र - सूर्य 14/06/2066 14/06/2067	शुक्र - चंद्र 14/06/2067 12/02/2069	शुक्र - मंगल 12/02/2069 14/04/2070	शुक्र - राहु 14/04/2070 14/04/2073
शुक्र 03/09/2063 सूर्य 03/11/2063 चंद्र 13/02/2064 मंगल 24/04/2064 राहु 23/10/2064 गुरु 04/04/2065 शनि 13/10/2065 बुध 04/04/2066 केतु 14/06/2066	सूर्य 02/07/2066 चंद्र 02/08/2066 मंगल 23/08/2066 राहु 17/10/2066 गुरु 04/12/2066 शनि 31/01/2067 बुध 24/03/2067 केतु 14/04/2067 शुक्र 14/06/2067	चंद्र 04/08/2067 मंगल 08/09/2067 राहु 09/12/2067 गुरु 28/02/2068 शनि 03/06/2068 बुध 28/08/2068 केतु 03/10/2068 शुक्र 12/01/2069 सूर्य 12/02/2069	मंगल 09/03/2069 राहु 12/05/2069 गुरु 07/07/2069 शनि 13/09/2069 बुध 12/11/2069 केतु 07/12/2069 शुक्र 16/02/2070 सूर्य 09/03/2070 चंद्र 14/04/2070	राहु 25/09/2070 गुरु 18/02/2071 शनि 11/08/2071 बुध 13/01/2072 केतु 17/03/2072 शुक्र 16/09/2072 सूर्य 10/11/2072 चंद्र 09/02/2073 मंगल 14/04/2073
शुक्र - गुरु 14/04/2073 14/12/2075	शुक्र - शनि 14/12/2075 12/02/2079	शुक्र - बुध 12/02/2079 13/12/2081	शुक्र - केतु 13/12/2081 12/02/2083	सूर्य - सूर्य 12/02/2083 02/06/2083
गुरु 22/08/2073 शनि 23/01/2074 बुध 10/06/2074 केतु 06/08/2074 शुक्र 15/01/2075 सूर्य 05/03/2075 चंद्र 25/05/2075 मंगल 21/07/2075 राहु 14/12/2075	शनि 14/06/2076 बुध 25/11/2076 केतु 31/01/2077 शुक्र 12/08/2077 सूर्य 09/10/2077 चंद्र 13/01/2078 मंगल 22/03/2078 राहु 11/09/2078 गुरु 12/02/2079	बुध 09/07/2079 केतु 07/09/2079 शुक्र 27/02/2080 सूर्य 19/04/2080 चंद्र 14/07/2080 मंगल 12/09/2080 राहु 14/02/2081 गुरु 02/07/2081 शनि 13/12/2081	केतु 07/01/2082 शुक्र 19/03/2082 सूर्य 09/04/2082 चंद्र 15/05/2082 मंगल 09/06/2082 राहु 12/08/2082 गुरु 08/10/2082 शनि 14/12/2082 बुध 12/02/2083	सूर्य 18/02/2083 चंद्र 27/02/2083 मंगल 05/03/2083 राहु 22/03/2083 गुरु 05/04/2083 शनि 23/04/2083 बुध 08/05/2083 केतु 15/05/2083 शुक्र 02/06/2083
सूर्य - चंद्र 02/06/2083 02/12/2083	सूर्य - मंगल 02/12/2083 07/04/2084	सूर्य - राहु 07/04/2084 02/03/2085	सूर्य - गुरु 02/03/2085 19/12/2085	सूर्य - शनि 19/12/2085 01/12/2086
चंद्र 17/06/2083 मंगल 28/06/2083 राहु 25/07/2083 गुरु 19/08/2083 शनि 16/09/2083 बुध 12/10/2083 केतु 23/10/2083 शुक्र 22/11/2083 सूर्य 02/12/2083	मंगल 09/12/2083 राहु 28/12/2083 गुरु 14/01/2084 शनि 03/02/2084 बुध 22/02/2084 केतु 29/02/2084 शुक्र 21/03/2084 सूर्य 28/03/2084 चंद्र 07/04/2084	राहु 27/05/2084 गुरु 10/07/2084 शनि 31/08/2084 बुध 16/10/2084 केतु 04/11/2084 शुक्र 29/12/2084 सूर्य 15/01/2085 चंद्र 11/02/2085 मंगल 02/03/2085	गुरु 10/04/2085 शनि 26/05/2085 बुध 07/07/2085 केतु 24/07/2085 शुक्र 10/09/2085 सूर्य 25/09/2085 चंद्र 19/10/2085 मंगल 05/11/2085 राहु 19/12/2085	शनि 12/02/2086 बुध 02/04/2086 केतु 23/04/2086 शुक्र 19/06/2086 सूर्य 07/07/2086 चंद्र 05/08/2086 मंगल 25/08/2086 राहु 16/10/2086 गुरु 01/12/2086

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - केतु - शुक्र 18/11/2025 15:36 25/01/2026 02:52	शनि - केतु - सूर्य 25/01/2026 02:52 14/02/2026 08:39	शनि - केतु - चंद्र 14/02/2026 08:39 20/03/2026 02:17	शनि - केतु - मंगल 20/03/2026 02:17 12/04/2026 17:02
शुक्र 29/11/2025 21:28 सूर्य 03/12/2025 06:26 चंद्र 08/12/2025 21:23 मंगल 12/12/2025 19:50 राहु 22/12/2025 22:44 गुरु 31/12/2025 22:38 शनि 11/01/2026 15:01 बुध 21/01/2026 04:25 केतु 25/01/2026 02:52	सूर्य 26/01/2026 03:09 चंद्र 27/01/2026 19:38 मंगल 28/01/2026 23:59 राहु 01/02/2026 00:51 गुरु 03/02/2026 17:37 शनि 06/02/2026 22:32 बुध 09/02/2026 19:21 केतु 10/02/2026 23:41 शुक्र 14/02/2026 08:39	चंद्र 17/02/2026 04:07 मंगल 19/02/2026 03:21 राहु 24/02/2026 04:48 गुरु 28/02/2026 16:45 शनि 06/03/2026 00:56 बुध 10/03/2026 19:38 केतु 12/03/2026 18:52 शुक्र 18/03/2026 09:48 सूर्य 20/03/2026 02:17	मंगल 21/03/2026 11:21 राहु 25/03/2026 00:22 गुरु 28/03/2026 03:56 शनि 31/03/2026 21:40 बुध 04/04/2026 05:57 केतु 05/04/2026 15:01 शुक्र 09/04/2026 13:28 सूर्य 10/04/2026 17:48 चंद्र 12/04/2026 17:02
शनि - केतु - राहु 12/04/2026 17:02 12/06/2026 10:23	शनि - केतु - गुरु 12/06/2026 10:23 05/08/2026 09:48	शनि - केतु - शनि 05/08/2026 09:48 08/10/2026 12:07	शनि - केतु - बुध 08/10/2026 12:07 04/12/2026 20:30
राहु 21/04/2026 19:38 गुरु 29/04/2026 21:57 शनि 09/05/2026 12:42 बुध 18/05/2026 03:09 केतु 21/05/2026 16:10 शुक्र 31/05/2026 19:03 सूर्य 03/06/2026 19:56 चंद्र 08/06/2026 21:22 मंगल 12/06/2026 10:23	गुरु 19/06/2026 15:06 शनि 28/06/2026 04:13 बुध 05/07/2026 19:44 केतु 08/07/2026 23:18 शुक्र 17/07/2026 23:12 सूर्य 20/07/2026 15:58 चंद्र 25/07/2026 03:55 मंगल 28/07/2026 07:29 राहु 05/08/2026 09:48	शनि 15/08/2026 13:22 बुध 24/08/2026 15:18 केतु 28/08/2026 09:02 शुक्र 08/09/2026 01:25 सूर्य 11/09/2026 06:20 चंद्र 16/09/2026 14:31 मंगल 20/09/2026 08:16 राहु 29/09/2026 23:00 गुरु 08/10/2026 12:07	बुध 16/10/2026 15:06 केतु 19/10/2026 23:23 शुक्र 29/10/2026 12:47 सूर्य 01/11/2026 09:36 चंद्र 06/11/2026 04:18 मंगल 09/11/2026 12:36 राहु 18/11/2026 03:03 गुरु 25/11/2026 18:34 शनि 04/12/2026 20:30
शनि - शुक्र - शुक्र 04/12/2026 20:30 15/06/2027 15:00	शनि - शुक्र - सूर्य 15/06/2027 15:00 12/08/2027 10:57	शनि - शुक्र - चंद्र 12/08/2027 10:57 16/11/2027 20:12	शनि - शुक्र - मंगल 16/11/2027 20:12 23/01/2028 07:28
शुक्र 05/01/2027 23:35 सूर्य 15/01/2027 14:54 चंद्र 31/01/2027 16:27 मंगल 11/02/2027 22:20 राहु 12/03/2027 20:18 गुरु 07/04/2027 13:10 शनि 08/05/2027 01:42 बुध 04/06/2027 09:07 केतु 15/06/2027 15:00	सूर्य 18/06/2027 12:24 चंद्र 23/06/2027 08:03 मंगल 26/06/2027 17:01 राहु 05/07/2027 09:13 गुरु 13/07/2027 02:16 शनि 22/07/2027 06:02 बुध 30/07/2027 10:40 केतु 02/08/2027 19:37 शुक्र 12/08/2027 10:57	चंद्र 20/08/2027 11:43 मंगल 26/08/2027 02:39 राहु 09/09/2027 13:39 गुरु 22/09/2027 10:05 शनि 07/10/2027 16:21 बुध 21/10/2027 08:03 केतु 26/10/2027 23:00 शुक्र 12/11/2027 00:32 सूर्य 16/11/2027 20:12	मंगल 20/11/2027 18:39 राहु 30/11/2027 21:33 गुरु 09/12/2027 21:27 शनि 20/12/2027 13:50 बुध 30/12/2027 03:14 केतु 03/01/2028 01:41 शुक्र 14/01/2028 07:34 सूर्य 17/01/2028 16:32 चंद्र 23/01/2028 07:28

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - शुक्र - राहु	शनि - शुक्र - गुरु	शनि - शुक्र - शनि	शनि - शुक्र - बुध
23/01/2028 07:28	14/07/2028 19:19	16/12/2028 00:31	17/06/2029 03:42
14/07/2028 19:19	16/12/2028 00:31	17/06/2029 03:42	28/11/2029 00:13
राहु 18/02/2028 08:03	गुरु 04/08/2028 08:49	शनि 14/01/2029 00:26	बुध 10/07/2029 08:48
गुरु 12/03/2028 11:14	शनि 28/08/2028 18:50	बुध 08/02/2029 23:05	केतु 19/07/2029 22:12
शनि 08/04/2028 22:30	बुध 19/09/2028 15:11	केतु 19/02/2029 15:28	शुक्र 16/08/2029 05:37
बुध 03/05/2028 12:23	केतु 28/09/2028 15:05	शुक्र 22/03/2029 03:59	सूर्य 24/08/2029 10:15
केतु 13/05/2028 15:17	शुक्र 24/10/2028 07:57	सूर्य 31/03/2029 07:45	चंद्र 07/09/2029 01:58
शुक्र 11/06/2028 13:15	सूर्य 01/11/2028 01:00	चंद्र 15/04/2029 14:01	मंगल 16/09/2029 15:21
सूर्य 20/06/2028 05:27	चंद्र 13/11/2028 21:26	मंगल 26/04/2029 06:24	राहु 11/10/2029 05:14
चंद्र 04/07/2028 16:26	मंगल 22/11/2028 21:21	राहु 23/05/2029 17:40	गुरु 02/11/2029 01:34
मंगल 14/07/2028 19:19	राहु 16/12/2028 00:31	गुरु 17/06/2029 03:42	शनि 28/11/2029 00:13
शनि - शुक्र - केतु	शनि - सूर्य - सूर्य	शनि - सूर्य - चंद्र	शनि - सूर्य - मंगल
28/11/2029 00:13	03/02/2030 11:30	20/02/2030 19:53	21/03/2030 17:51
03/02/2030 11:30	20/02/2030 19:53	21/03/2030 17:51	10/04/2030 23:38
केतु 01/12/2029 22:41	सूर्य 04/02/2030 08:19	चंद्र 23/02/2030 05:43	मंगल 22/03/2030 22:12
शुक्र 13/12/2029 04:34	चंद्र 05/02/2030 19:01	मंगल 24/02/2030 22:12	राहु 25/03/2030 23:04
सूर्य 16/12/2029 13:31	मंगल 06/02/2030 19:18	राहु 01/03/2030 06:18	गुरु 28/03/2030 15:50
चंद्र 22/12/2029 04:28	राहु 09/02/2030 09:46	गुरु 05/03/2030 02:49	शनि 31/03/2030 20:45
मंगल 26/12/2029 02:55	गुरु 11/02/2030 17:17	शनि 09/03/2030 16:42	बुध 03/04/2030 17:34
राहु 05/01/2030 05:49	शनि 14/02/2030 11:12	बुध 13/03/2030 19:01	केतु 04/04/2030 21:54
गुरु 14/01/2030 05:43	बुध 16/02/2030 22:12	केतु 15/03/2030 11:30	शुक्र 08/04/2030 06:52
शनि 24/01/2030 22:06	केतु 17/02/2030 22:29	शुक्र 20/03/2030 07:10	सूर्य 09/04/2030 07:10
बुध 03/02/2030 11:30	शुक्र 20/02/2030 19:53	सूर्य 21/03/2030 17:51	चंद्र 10/04/2030 23:38
शनि - सूर्य - राहु	शनि - सूर्य - गुरु	शनि - सूर्य - शनि	शनि - सूर्य - बुध
10/04/2030 23:38	02/06/2030 00:48	18/07/2030 07:09	11/09/2030 05:42
02/06/2030 00:48	18/07/2030 07:09	11/09/2030 05:42	30/10/2030 09:28
राहु 18/04/2030 19:01	गुरु 08/06/2030 04:51	शनि 26/07/2030 23:56	बुध 18/09/2030 04:50
गुरु 25/04/2030 17:34	शनि 15/06/2030 12:39	बुध 03/08/2030 18:43	केतु 21/09/2030 01:40
शनि 03/05/2030 23:21	बुध 22/06/2030 01:57	केतु 06/08/2030 23:38	शुक्र 29/09/2030 06:17
बुध 11/05/2030 08:19	केतु 24/06/2030 18:43	शुक्र 16/08/2030 03:24	सूर्य 01/10/2030 17:16
केतु 14/05/2030 09:11	शुक्र 02/07/2030 11:47	सूर्य 18/08/2030 21:19	चंद्र 05/10/2030 19:35
शुक्र 23/05/2030 01:22	सूर्य 04/07/2030 19:18	चंद्र 23/08/2030 11:12	मंगल 08/10/2030 16:24
सूर्य 25/05/2030 15:50	चंद्र 08/07/2030 15:50	मंगल 26/08/2030 16:07	राहु 16/10/2030 01:22
चंद्र 29/05/2030 23:56	मंगल 11/07/2030 08:36	राहु 03/09/2030 21:54	गुरु 22/10/2030 14:40
मंगल 02/06/2030 00:48	राहु 18/07/2030 07:09	गुरु 11/09/2030 05:42	शनि 30/10/2030 09:28

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : सिद्धा 4 वर्ष 8 मास 2 दिन

सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष
10/06/1972	11/02/1977	11/02/1985	11/02/1986	12/02/1988
11/02/1977	11/02/1985	11/02/1986	12/02/1988	11/02/1991
10/06/1972	संक 22/11/1978	मंग 21/02/1985	पिंग 24/03/1986	धांय 13/05/1988
संक 12/01/1973	मंग 11/02/1979	पिंग 13/03/1985	धांय 24/05/1986	भ्राम 12/09/1988
मंग 24/03/1973	पिंग 24/07/1979	धांय 13/04/1985	भ्राम 13/08/1986	भद्रि 11/02/1989
पिंग 13/08/1973	धांय 23/03/1980	भ्राम 23/05/1985	भद्रि 22/11/1986	उल्क 13/08/1989
धांय 14/03/1974	भ्राम 11/02/1981	भद्रि 13/07/1985	उल्क 24/03/1987	सिद्ध 14/03/1990
भ्राम 23/12/1974	भद्रि 24/03/1982	उल्क 12/09/1985	सिद्ध 13/08/1987	संक 12/11/1990
भद्रि 13/12/1975	उल्क 24/07/1983	सिद्ध 22/11/1985	संक 22/01/1988	मंग 13/12/1990
उल्क 11/02/1977	सिद्ध 11/02/1985	संक 11/02/1986	मंग 12/02/1988	पिंग 11/02/1991

भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष
11/02/1991	11/02/1995	12/02/2000	11/02/2006	11/02/2013
11/02/1995	12/02/2000	11/02/2006	11/02/2013	11/02/2021
भ्राम 24/07/1991	भद्रि 23/10/1995	उल्क 11/02/2001	सिद्ध 23/06/2007	संक 22/11/2014
भद्रि 12/02/1992	उल्क 22/08/1996	सिद्ध 13/04/2002	संक 12/01/2009	मंग 11/02/2015
उल्क 12/10/1992	सिद्ध 13/08/1997	संक 13/08/2003	मंग 24/03/2009	पिंग 24/07/2015
सिद्ध 23/07/1993	संक 22/09/1998	मंग 13/10/2003	पिंग 13/08/2009	धांय 23/03/2016
संक 13/06/1994	मंग 12/11/1998	पिंग 12/02/2004	धांय 14/03/2010	भ्राम 11/02/2017
मंग 24/07/1994	पिंग 22/02/1999	धांय 12/08/2004	भ्राम 23/12/2010	भद्रि 24/03/2018
पिंग 13/10/1994	धांय 24/07/1999	भ्राम 13/04/2005	भद्रि 13/12/2011	उल्क 24/07/2019
धांय 11/02/1995	भ्राम 12/02/2000	भद्रि 11/02/2006	उल्क 11/02/2013	सिद्ध 11/02/2021

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई है।

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj

Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

योगिनी दशा

मंगला 1 वर्ष 11/02/2021 11/02/2022	पिंगला 2 वर्ष 11/02/2022 12/02/2024	धान्या 3 वर्ष 12/02/2024 11/02/2027	भ्रामरी 4 वर्ष 11/02/2027 11/02/2031	भद्रिका 5 वर्ष 11/02/2031 12/02/2036
मंग 21/02/2021 पिंग 13/03/2021 धांय 13/04/2021 भ्राम 23/05/2021 भद्रि 13/07/2021 उल्क 12/09/2021 सिद्ध 22/11/2021 संक 11/02/2022	पिंग 24/03/2022 धांय 24/05/2022 भ्राम 13/08/2022 भद्रि 22/11/2022 उल्क 24/03/2023 सिद्ध 13/08/2023 संक 22/01/2024 मंग 12/02/2024	धांय 13/05/2024 भ्राम 12/09/2024 भद्रि 11/02/2025 उल्क 13/08/2025 सिद्ध 14/03/2026 संक 12/11/2026 मंग 13/12/2026 पिंग 11/02/2027	भ्राम 24/07/2027 भद्रि 12/02/2028 उल्क 12/10/2028 सिद्ध 23/07/2029 संक 13/06/2030 मंग 24/07/2030 पिंग 13/10/2030 धांय 11/02/2031	भद्रि 23/10/2031 उल्क 22/08/2032 सिद्ध 13/08/2033 संक 22/09/2034 मंग 12/11/2034 पिंग 22/02/2035 धांय 24/07/2035 भ्राम 12/02/2036
उल्का 6 वर्ष 12/02/2036 11/02/2042	सिद्धा 7 वर्ष 11/02/2042 11/02/2049	संकटा 8 वर्ष 11/02/2049 11/02/2057	मंगला 1 वर्ष 11/02/2057 11/02/2058	पिंगला 2 वर्ष 11/02/2058 12/02/2060
उल्क 11/02/2037 सिद्ध 13/04/2038 संक 13/08/2039 मंग 13/10/2039 पिंग 12/02/2040 धांय 12/08/2040 भ्राम 13/04/2041 भद्रि 11/02/2042	सिद्ध 23/06/2043 संक 12/01/2045 मंग 24/03/2045 पिंग 13/08/2045 धांय 14/03/2046 भ्राम 23/12/2046 भद्रि 13/12/2047 उल्क 11/02/2049	संक 22/11/2050 मंग 11/02/2051 पिंग 24/07/2051 धांय 23/03/2052 भ्राम 11/02/2053 भद्रि 24/03/2054 उल्क 24/07/2055 सिद्ध 11/02/2057	मंग 21/02/2057 पिंग 13/03/2057 धांय 13/04/2057 भ्राम 23/05/2057 भद्रि 13/07/2057 उल्क 12/09/2057 सिद्ध 22/11/2057 संक 11/02/2058	पिंग 24/03/2058 धांय 24/05/2058 भ्राम 13/08/2058 भद्रि 22/11/2058 उल्क 24/03/2059 सिद्ध 13/08/2059 संक 22/01/2060 मंग 12/02/2060
धान्या 3 वर्ष 12/02/2060 11/02/2063	भ्रामरी 4 वर्ष 11/02/2063 11/02/2067	भद्रिका 5 वर्ष 11/02/2067 12/02/2072	उल्का 6 वर्ष 12/02/2072 11/02/2078	सिद्धा 7 वर्ष 11/02/2078 00/00/0000
धांय 13/05/2060 भ्राम 12/09/2060 भद्रि 11/02/2061 उल्क 13/08/2061 सिद्ध 14/03/2062 संक 12/11/2062 मंग 13/12/2062 पिंग 11/02/2063	भ्राम 24/07/2063 भद्रि 12/02/2064 उल्क 12/10/2064 सिद्ध 23/07/2065 संक 13/06/2066 मंग 24/07/2066 पिंग 13/10/2066 धांय 11/02/2067	भद्रि 23/10/2067 उल्क 22/08/2068 सिद्ध 13/08/2069 संक 22/09/2070 मंग 12/11/2070 पिंग 22/02/2071 धांय 24/07/2071 भ्राम 12/02/2072	उल्क 11/02/2073 सिद्ध 13/04/2074 संक 13/08/2075 मंग 13/10/2075 पिंग 12/02/2076 धांय 12/08/2076 भ्राम 13/04/2077 भद्रि 11/02/2078	सिद्ध 23/06/2079 संक 10/06/2080 00/00/0000 00/00/0000 00/00/0000 00/00/0000 00/00/0000 00/00/0000

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

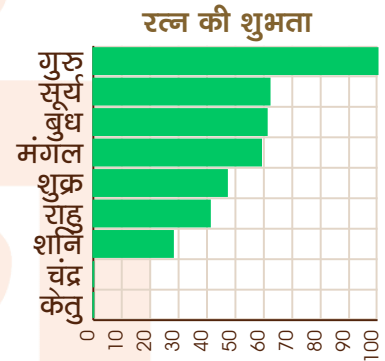
मूलांक	1
भाग्यांक	8
मित्र अंक	1, 4, 8, 9
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19, 28, 37, 46, 55
शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	स्वास्थ्य, सुख
माणिक्य	सूर्य	62%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
पन्ना	बुध	61%	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	59%	दम्पति, सन्तति सुख, कम खर्च
हीरा	शुक्र	47%	दाम्पत्य कष्ट, शत्रु व रोग, हानि
गोमेद	राहु	41%	धन हानि, शत्रु व रोग
नीलम	शनि	28%	शत्रु व रोग, धन हानि, पराक्रम हानि
मोती	चंद्र	0%	शत्रु व रोग, दुर्घटना
लहसुनिया	केतु	0%	दुर्घटना, शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	12/02/1979	69%	1%	59%	67%	100%	47%	28%	16%	0%
मंगल	12/02/1986	69%	0%	72%	46%	100%	47%	28%	16%	0%
राहु	13/02/2004	50%	0%	44%	61%	100%	55%	41%	58%	0%
गुरु	13/02/2020	69%	0%	66%	46%	100%	22%	28%	41%	0%
शनि	12/02/2039	50%	0%	44%	67%	100%	55%	52%	52%	0%
बुध	13/02/2056	69%	0%	59%	73%	100%	55%	28%	41%	0%
केतु	12/02/2063	50%	0%	66%	61%	100%	55%	3%	16%	12%
शुक्र	12/02/2083	50%	0%	59%	67%	100%	61%	41%	52%	0%
सूर्य	12/02/2089	75%	0%	66%	61%	100%	22%	3%	16%	0%

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj

Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए पुखराज रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

पुखराज आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा। आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख सम्पत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्य करने पर जो श्रेय नहीं मिल पाता है वह प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने से आपको कुछ ही समय में सुख की अनुभूति होगी। अतः यह रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें तो लाभ होगा।

आपके लिए माणिक्य, पन्ना एवं मूंगा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

हीरा, गोमेद व नीलम रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

मोती व लहसुनिया रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु लग्न भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने से आपकी विद्वता, ज्ञान अर्जन योग्यता, विनम्रता भाव का विकास होगा। पुखराज रत्न आपके लिए जीवन रत्न है। शुभ कार्य निर्विघ्न पूर्ण होंगे। लग्नस्थ गुरु पंचम, सप्तम एवं नवम भाव को देखता है। अतः यह पुखराज रत्न संतान सुख को प्रबल करेगा। धार्मिक कार्यों में अभिरुचि देगा। पुखराज रत्न आपके लिए सुख, धन व यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न आपके वैवाहिक जीवन को स्थिरता देगा। संतान स्वास्थ्य वृद्धि कर संतान सुख को बढ़ाएगा।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में गुरु लग्नेश एवं चतुर्थेश है। गुरु आपके लिए विशेष शुभ ग्रह है अतः आप गुरु रत्न पुखराज धारण कर गुरु की पूर्ण शुभता प्राप्त कर सकते हैं। पुखराज रत्न धारण से आपको स्वास्थ्य बेहतर होगा। आपके रोगग्रस्त होने की संभावनाएं कम हो सकती हैं। पुखराज रत्न आपको प्रसन्नचित्त, विवेकी, विनम्र और सौम्य स्वभाव का स्वामी बनाएगा। रत्न प्रभाव से आप धर्म, दया, सेवा विषयों से जुड़ेंगे। पुखराज रत्न चतुर्थेश का रत्न होने के कारण आपको माता सुख, भूमि-भवन का सुख, संतान से पूर्ण सुख, विद्वान, गुणी, मनोवांछित जीवनसाथी, धर्मपरायण, धनी एवं यशस्वी बना सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ वृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य छठे भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपको पराक्रमी बनाएगा और आप अपने शत्रुओं को परास्त करने में समर्थ होंगे। रत्न की शुभता से आपकी कठोरता में कमी होगी। आप भाग्यशाली बनेंगे। रत्न शुभता से आपकी न्यायप्रियता बढ़ेगी। आपको सरकारी नौकरी में उच्चाधिकारियों की ओर से यथासंभव सहयोग प्राप्त होगा। ननिहाल पक्ष से संबंध मजबूत होंगे। सूर्य रत्न माणिक्य आपको समाज में सम्मान दिलायेंगे। रत्न शुभता से आप तेजस्वी बनेंगे।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में सूर्य दशम भाव के स्वामी है। सूर्य के बेहतर फल प्राप्त करने के लिए आप सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर सकते हैं। माणिक्य रत्न आपका भाग्य रत्न है। यह रत्न आपको भाग्य का अनुकूल सहयोग देगा। माणिक्य रत्न धारण कर आप

आत्मिक रूप से बली हो सकते हैं। यह रत्न आपको शक्तिशाली कर सकता है। आप धर्मपरायण की ओर उन्मुख होंगे। आपकी सुरुचि धार्मिक गतिविधियों की ओर हो सकती है। माणिक्य रत्न आपके वैवाहिक सुख के सुखों में वृद्धि करेगा। आपको व्यापार में उन्नति देगा।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध सप्तम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको धनवान बनाएगा। रत्न शुभता से आपका विवाह कुलीन परिवार में होगा। यह रत्न आपको उदार और धार्मिक प्रवृत्ति का रखेगा। आपके लिये यह शुभ रत्न होने के कारण इसे धारण कर आप विद्वान, लेखक या सम्पादक हो सकते हैं। पन्ना आपको शिल्पकला में निपुण, चतुर और विनोदी बनाएगा। रत्न शुभता से आप एक कुशल व्यवसायी बनेंगे। क्रय-विक्रय विषयों से आपको लाभ प्राप्त होगा। व्यावसायिक साझेदारी से आपके अनुकूल फल प्राप्त होंगे।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में बुध सप्तमेश एवं दशमेश है। आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न आपको बुद्धिमान और विनोदी प्रवृत्ति दे सकता है। यह रत्न आपको राज्य एवं आजीविका क्षेत्र में बौद्धिक योग्यता से सफलता प्राप्ति दे सकता है। कार्यक्षेत्र में उन्नति और लाभ देने के साथ साथ पन्ना रत्न आपको सहयोगियों से संबंध मधुर कर सकता है। पन्ना रत्न धारण कर आप ससुराल से धन प्राप्ति के योग बना सकता है। बुध रत्न पन्ने की शुभता आपको धन, यश भी दे सकती है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न ३ रत्ती का कम से कम, अन्यथा ६ रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल सप्तम भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने से आपका वैवाहिक जीवन सुखमय बनाये रखने में सहयोग प्राप्त होगा। रत्न की शक्तियां आपकी मेहनत प्रवृत्ति का विस्तार करेंगी। क्रोध में कमी करने के लिए भी मूंगा रत्न धारण करना सही रहेगा। इस रत्न को धारण करने से आपकी वाणी की कठोरता में कमी होगी। व्यर्थ के व्यर्थों पर नियंत्रण होगा। आर्थिक पक्ष से मूंगा रत्न आपके लिए शुभ फलदायक सिद्ध होगा। आजीविका क्षेत्र में अपने नेतृत्व गुण का विकास करने के लिए आप मूंगा रत्न धारण करें।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में मंगल पंचमेश एवं द्वादशेश है। मंगल रत्न मूंगा आपके लिए शुभ रत्न है। मूंगा रत्न धारण करने से नौकरी में बदलाव करना आपके लिए सहज हो सकता है। मूंगा रत्न आप सदाचारी, बुद्धिमान एवं विनम्र हो सकते हैं। रत्न आपको जीवनसाथी से लाभ, पिता की धार्मिक आस्था, पिता की विदेश यात्रा, कोर्ट-कचहरी के फैसलों में आपके अनुकूल फल प्राप्त करा सकता है। इस रत्न की शुभता आपको संतान से सुख, शयन सम्बन्धी परेशानियां एवं समझौते आपके पक्ष में हो सकते हैं।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करने पर आपको दूर देश की यात्राओं के अवसर कम ही प्राप्त हो पाएंगे। यह रत्न आपको सरकार के द्वारा सम्मान दिला सकता है। हीरा रत्न गायन और अभिनय में रुचि की कमी आपको दे सकता है। रत्न धारण से विवाह में विलम्ब हो सकता है। व्यवहार कुशलता और चातुर्य की कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी लोकप्रियता को कम कर आपकी भाग्य वृद्धि को बाधित कर सकता है। हीरा रत्न

धारण से आप भोग विलास विषयों को अधिक महत्व देंगे। आपको विलासिता और व्यभिचार से बचाव करना चाहिए।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में शुक्र एकादशेश एवं षष्ठेश है। षष्ठेश शुक्र का हीरा रत्न आपको रोग, ऋण एवं शत्रुओं से कष्ट दे सकता है। इसे पहनने के बाद अपमान, चिंता, शंका, पीड़ा एवं असत्य भाषा की प्रवृत्ति आपमें जन्म ले सकती है। एकादश भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण हीरा आपमें लोभ, स्वार्थ एवं बेईमानी के अवगुण आ सकते हैं। यह रत्न आपके मामा-मौसी से सुखों में कमी दे सकता है। शत्रुओं को परास्त करने में आपको सामान्य से अधिक मेहनत करनी पड़ सकती है। शुक्र रत्न हीरा प्रभाव से आपको पिता से अल्पसुख प्राप्त हो सकता है। राज्य व कार्यक्षेत्र से अल्प लाभ व सम्मान न्यून मिलता है। हीरा रत्न आपको रोग एवं ऋण की समस्याएं दे सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु दूसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहु का गोमेद रत्न धारण करने पर आप धन संचय के लिए असत्य वचन कह सकते हैं। आपके पारिवारिक कार्यों में अस्थिरता रहेगी। रत्न धारण से धनार्जन करना भी आपके लिए कष्टकारी रहेगा। घर में बने भोजन से अधिक आपको फास्ट फूड अधिक रुचिकर लग सकता है। संतान कम संख्या में हो सकती है। आपके कामों में अक्सर रुकावटें आ सकती हैं। आप असत्य बोलने में अधिक विश्वास कर सकते हैं। व्यर्थ बोलने की आपको आदत हो सकती है। रत्न प्रभाव से वाणी में किसी प्रकार का दोष हो सकता है। रत्न प्रभाव से किसी अखाद्य य अपेय का सेवन आपके द्वारा हो सकता है। आपके द्वारा पैतृक सम्पदा का विनाश हो सकता है। पैसों का दुरुपयोग हो सकता है। आप कुपात्रों पर धन खर्च कर सकते हैं।

राहु मकर राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि छठे भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपको विशेष समय पर बौद्धिक योग्यता का सहयोग प्राप्त नहीं होने देगा। बुद्धि बल की कमी आपको शत्रु पक्ष से पराजय दे सकती है। रत्न प्रभाव से आप रोग, ऋण और शत्रुओं से पीड़ित होंगे। इसके कारण विशेष कार्य करने के अवसर अन्य किसी को प्राप्त हो सकते हैं। बड़े कार्यों में योग्यता दिखाने के अवसर आपको नहीं मिल पाएंगे। आपको कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके रोगों में वृद्धि करेगा। कोर्ट कचहरी के मामलों में धन हानि होगी। इस रत्न को पहनने पर आपको विभिन्न षड्यंत्रों से निपटना पड़ेगा।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम पहनने से आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है। यह रत्न आपकी पाचनशक्ति को कमजोर कर सकता है। आपकी कम भूख की परेशानी हो सकती है। यह रत्न आपको शत्रुओं से भयभीत रख सकता है। आप प्रतिवादियों से भय खा सकते हैं। बंधु-बांधवों का सुख आपको समय पर न मिल पाए। रत्न प्रभाव आपमें

अहंकार भाव ला सकता है। यश, संपत्ति के अधिकारों में कमी हो सकती है। विषय वासनाओं में आप अधिक रत हो सकते हैं। गुणीजनों का अनजाने में आपके द्वारा अनादर हो सकता है। नीलम रत्न धारण से आपके ऋण भुगतान मानसिक चिंता का कारण बन सकते हैं।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में शनि दूसरे भाव एवं तीसरे भाव के स्वामी है। शनि रत्न नीलम धारण करने पर आपके कुटुंब में तनाव आ सकता है। रत्न प्रभाव से भाई बंधुओं का आपको अल्प सुख मिलेगा। नीलम रत्न आपको भूमि व संपत्ति संबंधित विषयों में मानसिक कष्ट दे सकता है। इस रत्न से आपके पुरुषार्थ भाव में कमी हो सकती है। इसके अलावा इस रत्न को धारण करने पर आपको सगे संबंधियों से मधुरता की कमी हो सकती है। गला, मुंह, नाक और वाणी संबंधी रोग शीघ्र प्रभावी हो सकते हैं। शनि रत्न नीलम आपके सेवकों के सुख में कमी कर रहे हैं। इस रत्न को धारण करने के बाद आपकी संचार व्यवस्था खराब हो सकती है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्रमा का मोती रत्न धारण करने पर किसी विशेष मामले में आपको अपमानित होना पड़ सकता है। आपके अपने मामा-मौसी से संबंध प्रतिकूल हो सकते हैं। अपने शत्रुओं की पहचान करना आपके लिए सरल नहीं होगा। यह रत्न आपको कफ रोगी, नेत्र रोगी, अल्पायु, आसक्त, व्यथी बना सकता है। इसके प्रभाव से आप अस्वस्थता का अनुभव करेंगे। बढ़ते कर्ज आपको मानसिक चिंताएं दे सकते हैं। कर्ज का भुगदान ज्यादा आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। कार्यों को शीघ्रता से करने की प्रवृत्ति कार्यों में गुणवत्ता का अभाव ला सकती है। मोती रत्न आपमें असंतोष का भाव ला सकता है। आपको आंखों और पेट से संबंधित परेशानियां हो सकती हैं।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में चंद्र अष्टम भाव के स्वामी है। अष्टमेश चंद्र का मोती रत्न धारण करना आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। मोती रत्न आपके रोगों में वृद्धि एवं आयु में कमी दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपको गहरे जल से कष्ट का भय हो सकता है। मोती रत्न आपको नकारात्मक विचारधारा के साथ मानसिक चिंताएं भी अधिक दे सकता है। इस रत्न को पहनने के बाद आप आर्थिक संकटों के कारण दरिद्रता की स्थिति में पहुंच सकते हैं। मोती रत्न की प्रतिकूलता आपको दुर्भाग्य और ससुराल पक्ष से संबंध खराब कर सकती है। यह रत्न आपके जीवन के सुखों में कमी कर दुःखों में वृद्धि कर सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपको जल के कारण होने वाले रोग हो सकते हैं।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने आप कुछ विषयों में आप लोभी और चालाक हो सकते हैं। आपके द्वारा दूसरों को शारीरिक और मानसिक कष्ट हो सकते हैं। अनजाने में आपसे पाप हो सकते हैं। आपके द्वारा किये गये कार्यों से विवेकहीनता परिलक्षित हो सकती है। रत्न प्रतिकूलता से आपको मुखरोग या दंत रोग हो सकता है। केतु

रत्न आपको अकस्मात हानि करा सकता है। यह रत्न आपका ऑपरेशन करा सकता है। आपको विरासत मिलने में तकलीफ हो सकती है। सरकार के द्वारा आपकी धन हानि हो सकती है।

केतु कर्क राशि में स्थित है व इसका स्वामी चन्द्र छठे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न आपको विशेष समय पर बौद्धिक योग्यता का सहयोग प्राप्त नहीं होने देगा। बुद्धि बल की कमी आपको शत्रु पक्ष से पराजय दे सकती है। रत्न प्रभाव से आप रोग, ऋण और शत्रुओं से पीड़ित होंगे। इसके कारण विशेष कार्य करने के अवसर अन्य किसी को प्राप्त हो सकते हैं। बड़े कार्यों में योग्यता दिखाने के अवसर आपको नहीं मिल पाएंगे। आपको कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके रोगों में वृद्धि करेगा। कोर्ट कचहरी के मामलों में धन हानि होगी। इस रत्न को पहनने पर आपको विभिन्न षड्यंत्रों से निपटना पड़ेगा।

दशानुसार रत्न विचार

शनि

(13/02/2020 - 12/02/2039)

शनि की दशा में आपका पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, हीरा, नीलम, गोमेद व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और मोती व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध

(12/02/2039 - 13/02/2056)

बुध की दशा में आपका पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, माणिक्य, मूंगा व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद व नीलम रत्न नेष्ट हैं और मोती व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(13/02/2056 - 12/02/2063)

केतु की दशा में आपका पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, पन्ना, हीरा व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद, लहसुनिया, नीलम व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(12/02/2063 - 12/02/2083)

शुक्र की दशा में आपका पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, हीरा, मूंगा, गोमेद व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और मोती व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(12/02/2083 - 12/02/2089)

सूर्य की दशा में आपका पुखराज व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा, गोमेद, नीलम, मोती व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - टोपाज

आपका जन्म धनु राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी गुरु होता है। गुरु सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह ज्योतिष शास्त्र में सबसे शुभ ग्रह माना जाता है तथा गुरु को ज्योतिष में अमृत के समान माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः धनु राशि के लग्न वाले जातकों को धनु राशि के स्वामी ग्रह गुरु को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। गुरु ग्रह के लिये टोपाज रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी गुरु सलाहकार एवं धन का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को सभा में वाणीपटुता के कारण मार्गदर्शक के रूप में सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को घर के बुजुर्गों तथा गुरुओं का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। गुरु ग्रह ज्ञान एवं धन लाभ का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको लीवर या गुर्दे से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जिसको धन आगमन में व्यवधान हो रहे हों उनको यह रत्न अल्प प्रयास से धन प्राप्ति करवाता है।

टोपाज रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि तर्जनी अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में गुरु की अंगुली मानी जाती है। टोपाज रत्न गुरु का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् गुरुवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल गुरु की होरा में श्रेष्ठ होता है। गुरुवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय गुरु की होरा का होता है। टोपाज को यदि गुरुवार के साथ-साथ गुरु के नक्षत्र अर्थात् पुनर्वसु, विशाखा और पूर्वा भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

टोपाज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर पीले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, गुरु के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण करना चाहिए।

गुरु का मंत्र - ॐ वृं बृहस्पतये नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि गुरु से संबंधित पदार्थ जैसे चने की दाल, गुड़, सवा मीटर पीले कपड़े का दान करें तो टोपाज रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन गुरु का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और कैले की जड़ में जल दें तथा विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें और उनकी उपासना करें तो यह टोपाज रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक गुरुवार को विष्णु जी की उपासना करें तथा विष्णु जी को गुड़ व चने की दाल का भोग लगायें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

धनु लग्न वाले जातक यदि टोपाज रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली धनु लग्न की हैं। आदर्शवादी होने के कारण आप उत्साही रहते हैं। छल-कपट की भावना आपमें नहीं होती और कभी इनके साथ ऐसा होने पर ये लोग काफी समय तक उस बारे में सोचते रहते हैं, तो इन्हें अपनी इस आदत का बदलने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में आपके धन संयम/प्रबंधन (वर्तमान में वित्तीय प्रबंधक या सलाहकार) की कला से ओतप्रोत बने रह सकते हैं। आपमें दूरदर्शिता का गुण भी देखा जाता है जिस कारण इनके कार्यों में हानि की मात्रा में भी कमी आती है।

ईश्वरप्रिय होने के कारण गलत कार्यों से दूरी बनाये रखते हैं और कभी-कभी चिन्तित भी हो जाते हैं। आप हमेशा प्रसन्नचित्त अवस्था में रहने का प्रयास करते हैं। आप अपनी

बातों में गंभीरता लिये होते हैं। धनी, सम्मानित और समाज में प्रतिष्ठित होने की योग्यता रखते हैं। आप अच्छे सलाहकार साबित हो सकते हैं, परन्तु बिना मांगे किसी को सलाह देने से बचें अन्यथा आलोचना के पात्र बन सकते हैं। आपकी वित्त प्रबंधन / सलाह अच्छी होती है।

षष्ठ, अष्टम व द्वादश भाव दुष्ट व अशुभ स्थान हैं। अपनी कुंडली की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको छः, आठ व बारहवें भाव - भावेश को शुभता प्रदान करनी होगी। कुंडली के ये भाव आपको रोग, ऋण, शत्रु, बाधाएं, देने के साथ साथ दैहिक, सामाजिक, मानसिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्ट दे सकते हैं। इन सभी विषयों के साथ साथ षष्ठ भाव प्रतियोगिता, संघर्ष तथा सौतेली माता का भी भाव है।

कुंडली में षष्ठ भाव का पीड़ित होना या इस भाव में अन्य ग्रहों का स्थित होना उपरोक्त सभी वस्तुओं में अशुभता लाता है। धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग लग्न से आठवां भाव अष्टम कहलाता है। इस भाव से आयु, बिना कमाया हुआ धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग की जानकारी प्राप्त होती है। अष्टम भाव की तरह द्वादश भाव में भी सभी ग्रह अनिष्ट करते हैं। द्वादश भाव भी त्रिक भाव है। यह भाव आपकी निद्रा, धन का निवेश, विवाह में विलम्ब, अधिकार का नाश, कैद, शरीर विकार तथा हानियों की जानकारी देता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते हैं।

आपके लग्न के लिए शुक्र षष्ठेश व एकादशेश है, आप की संतान विद्रोही हो सकती है, जीवन साथी से अनबन, मन में खिन्नता, व्यभिचारी तथा बन्धु विरोधी हो सकते हैं।

चन्द्र अष्टमेश हैं। आपके धनु लग्न में अष्टमेश चन्द्र है, चन्द्र की यह स्थिति आपको बचपन में कष्ट, पानी के दुष्प्रभाव से होने वाले रोगों के प्रभाव में शीघ्र आने की संभावना, यह योग धन व सम्मान की हानि का कारण बनता है।

मंगल द्वादशेश तथा पंचमेश होते हैं। व्यय अधिक, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, भाई-बहनों से सामान्य सुख, सामान्य पराक्रमी, शत्रु से संघर्ष में सफल, जीवन साथी से कष्ट दे सकता है।

आपकी कुंडली के छठे भाव में सूर्य स्थित हैं। इस भाव में सूर्य शत्रुनाशक, क्रोधी, घमंडी, कामातुर, मामा -मौसी को कष्ट, निरुत्साही, छाती के रोग, ऋणी सम्बन्धी कष्ट दे सकते हैं। हृदय सम्बन्धी रोग भी स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकते हैं।

आपकी कुंडली में चन्द्र षष्ठ भाव में स्थित हैं। इसके परिणाम से शत्रुओं से कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। आप रोग पीड़ित, चिंताग्रस्त, व्याधिक्य करने की प्रवृत्ति से ग्रस्त हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त चन्द्र की अशुभता से आपके ऋण लेन-देन में बाधाएं आ

सकती हैं।

आपकी कुंडली में शनि सौतेली माता से कष्ट, संपत्तिनाश, अल्पभाषी, एकांतप्रिय, शारीरिक कष्ट का कारक बन सकता है।

अष्टम भाव में केतु अशुभ फलदायक होते हैं। आपको अपनी बुद्धि को गलत कार्यों में लगाने से बचना चाहिए। आपका उद्यम बाधित हो सकता है। साथ ही यह योग आपको परिश्रम का उचित प्रतिफल नहीं देता। जीवन साथी से शत्रुता भाव उत्पन्न हो सकता है। स्वजनों से संबंधों को मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 3, 6, 7, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	10/06/1972-10/06/1973	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	10/06/1973-23/07/1975	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/09/1977-04/11/1979	15/03/1980-27/07/1980	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया

फल

शुभ
शुभ
सम
सम
सम

क्षेत्र

शत्रु व रोग मुक्ति
दम्पति
बदनामी
स्वास्थ्य
सन्तति कष्ट

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj

Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति सप्तम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं चूंकि आपका मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। साथ ही स्वभाव से ही उनमें उग्रता रहेगी। यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं लेकिन यह अल्प समय के लिए होगा तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही आप भी यदा कदा पित या गर्मी आदि से परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह कार्य में विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध रहेगा लेकिन अंत में आप को सफलता अवश्य प्राप्त होगी तथा सामान्य रूप से दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जन्म दोषों से आपको परेशानी हो सकती है। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम एवं पराक्रम से इच्छित सफलता अर्जित करेंगे। समाज से भी न्यूनाधिक मान सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा। यदा कदा मानसिक अशान्ति की भी अनुभूति हो सकती है। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति प्रभावित होगी लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं सम्पन्न बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम,

अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इससे आपके सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में कुलिक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। इस योग के कारण जातक के खर्च सामान्य से कुछ अधिक रहता है। जिससे आर्थिक क्लेश समय-समय पर होता रहता है। सुख का थोड़ा अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक के जीवन में समय-समय पर संघर्ष करना पड़ता है और स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव आती रहती है एवं स्वास्थ्य में गिरावट के कारण जातक अपने भविष्य (वृद्धावस्था) को लेकर चिन्तित रहता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी कभी अशान्त हो जाता है। मित्रगण समय पर थोड़ा बहुत धोखा देते हैं और जातक को अपने परिवार के सदस्यों से कभी मनमुटाव हो जाता है।

इस योग के कारण जातक को सन्तान सुख में थोड़ा बहुत बाधा रहती है। पुत्र होकर भी आज्ञा का प्रायः पालन नहीं करता और सन्तान प्रायः क्रूर एवं दुष्ट स्वभाव का हो जाता है। कभी-कभी भूत प्रेतों से जातक परेशान होता है। जीवन का उत्तरार्ध थोड़ा बहुत कष्टमय व्यतीत होता है एवं जातक मानसिक रूप से परेशानी महसूस करता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक को व्यापार में मनोवांछित सफलता प्राप्त होती है और अपने जीवन में अनेक सम्मान भी प्राप्त करता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य और चन्द्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक दस है। एक एवं शून्य का जोड़ एक होता है जोकि अंक ज्योतिषानुसार आपका मूलांक होता है। मूलांक एक का स्वामी सूर्य और शून्य को ब्रह्म या शिव माना गया है। इनके प्रभाववश आप अपने क्षेत्र में एक प्रभावशील व्यक्ति होंगे। सूर्य जिस तरह से प्रकाशित एवं अस्त होता है वैसे ही आपके जीवन में काफी ऐसे अवसर आयेंगे जिनमें आपको सफलताएं प्राप्त होंगी। कभी-कभी अस्त सूर्य के समान असफलता का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आप असफलता से पीछे नहीं हटेंगे। कुछ दिन शिव की तरह शांत रहकर पुनः सफलता अर्जित करेंगे। संघर्ष, साहस, धैर्य एवं उच्च महत्वाकांक्षायें आप में अधिक रहेंगी।

आप स्थिरवादी, दृढ़ निश्चयी, वचनशील व्यक्ति रहेंगे। इन गुणों, वश मेहनत एवं ईमानदारी से सफलता अर्जित करेंगे। संघर्षों से पीछे नहीं हटेंगे। समाज में नाम तथा यश प्राप्त करेंगे। आप परोपकारवादी, बहुतों के पोषक बनेंगे। आर्थिक स्थिति आपकी मध्य अवस्था में काफी ठीक रहेगी। समाज में आपका अच्छा नाम होगा।

मानसिक स्थिति आपकी स्वतंत्र विचारधारा की रहेगी। इससे आपको पराधीन रहकर कार्य करना अच्छा नहीं लगेगा। आप किसी के आधीन कार्य करने की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से कार्य करने पर अपनी प्रतिभा का उपयोग अधिक करेंगे। आप अपने कार्य करने के ढंग में स्वतंत्रता, निष्पक्षता, अधिक पसन्द करेंगे।

भाग्यांक आठ का स्वामी शनि ग्रह को माना गया है। शनि ग्रह अति धीमा होने से तीस वर्ष में एक राशिपथ भ्रमणचक्र पूर्ण करता है। इसके प्रभाव से आपका भाग्योदय भी धीरे-धीरे होगा। आप भले ही कितनी भी गरीबी में उत्पन्न हुए हों आपका भाग्य सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ता चला जायेगा। इस मध्य रुकावटें भी आयेंगी, जिन्हें आप धैर्य एवं अपने श्रम से पार कर लेंगे। आलस्य एवं निराशा आपकी तरक्की की बाधाएं रहेंगी। इन पर विजय प्राप्त करना आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।

आप अपने कार्यक्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्राप्त करेंगे। आपकी सभी सफलताएं विधनों से युक्त होते हुये भी आप आसानी से अपनी तरक्की के रास्ते स्वयं निर्मित कर लेंगे। आपका भाग्योदय 35 वर्ष की अवस्था के पश्चात ही होगा। बचपन की अपेक्षा मध्य तथा अन्तिम अवस्था आपके भाग्योदय में विशेष सहायक होगी। अन्तिम अवस्था आपकी अच्छी रहेगी एवं धन सम्पत्ति का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे।

आपका मूलांक 1 तथा भाग्यांक 8 है। मूलांक के स्वामी सूर्य ग्रह का भाग्यांक 8 के स्वामी ग्रह शनि से मित्र संबंध होने के कारण आपको इन दोनों ही ग्रहों के मिलेजुले फल प्राप्त होंगे। सूर्य एवं शनि के प्रभाव से आपकी सामाजिक स्थिति धीरे-धीरे उन्नतिशील हो कर स्थायी ख्याति एवं लाभ प्राप्त होगा। सूर्य के प्रभाव से आप प्रकाशित होंगे एवं शनि के प्रभाव से स्थिरता प्राप्त होगी। सूर्य शीघ्र सफलता देता है, शनि अवरोध पैदा करता है। अतः आपके कार्य रुकावटों के साथ पूर्ण होंगे। शनि के प्रभाव से आप नीचे से, अपनी मेहनत के द्वारा, धीरे-धीरे ऊपर की ओर उच्चता को प्राप्त करेंगे। आपके कार्यों में देरी अवश्य होगी, लेकिन कार्य स्थायी

बनेंगे।

मूलांक 1 तथा भाग्यांक 8 के प्रभाववश आपका प्रारंभिक भाग्योदय 26 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 28 वर्ष की अवस्था तक विशेष सफलताएं अर्जित करेगा। इसके पश्चात् 35 वर्ष की अवस्था से 37 वर्ष की अवस्था के मध्य विशेष लाभ प्राप्त होंगे।

आपके मूलांक 1 की मित्रता 4 एवं 8 से है तथा भाग्यांक 8 की मित्रता 1 एवं 4 से है। अतः आपके जीवन में 1, 4, 8 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक की आपके भाग्यांक से मित्रता होने से मूलांक-भाग्यांक के फल आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास, या उपर्युक्त वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, अप्रैल, अगस्त के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 4, 8 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73

4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67

8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

ग्रह फल

सूर्य

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जातक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान्, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

वृष राशि में रवि हो तो जातक शान्त, व्यवहार कुशल, पाप भीरु, स्वाभिमानी मुखरोगी एवं स्त्रीद्वेषी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य छठे भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आयु भी अच्छी होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इसके साथ ही वे आपको शत्रुओं तथा अन्य सांसारिक कष्टों से नित्य सुरक्षित रखने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे एवं नित्य उनकी आज्ञा पालन करने में भी तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे कुछ समय के लिए संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु उसके बाद सब कुछ सामान्य एवं पूर्ववत् हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उन्हें हमेशा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता करते रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, सुखी, कुशा बुद्धिवाला, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, परलिंगी के प्रति आकर्षण, खाने-पीने का शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

मिथुन राशि में मंगल हो तो जातक शिल्पकार, परदेशवासी, कार्यदक्ष, सुखी, जनहितैषी, विद्वान, बलवान शरीर, कवि, संगीतकार, नीतिज्ञ, कुशाबुद्धिवाला एवं चतुर होता है।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

बुध

सातवें भाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

मिथुन राशि में बुध हो तो जातक मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ, वक्ता, लेखक, अल्पसन्ततिवाला, विवेकी, सदाचारी, खोज के काम में चतुर, दीर्घायु, यात्रा का शौकीन, संगीत में रुचि एवं हास परिहास करने वाला होता है।

गुरु

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

धनु राशि में गुरु हो तो जातक धनी, प्रभावशाली, विद्वान्, विश्वस्त, सज्जन, दानशील संगठनकर्ता, अच्छा वक्ता, धर्माचार्य, दम्भी, रतिप्रेमी एवं धूर्त होता है।

शुक्र

सप्तमभाव में शुक्र हो तो जातक लोकप्रिय, धनिक, चिन्तित, विवाह के बाद भाग्योदय, साधुप्रेमी, स्त्री से सुख, कामी, भाग्यवान् गानप्रिय, विलासी, अल्पव्यभिचारी चंचल एवं उदार होता है।

मिथुन राशि में शुक्र हो तो जातक कवि, साहित्यिक, चित्रकला निपुण, साहित्यिक स्रष्टा, प्रेमी, सज्जन, लोकहितैषी धनी, उदार, सम्मानित, कुशाबुद्धि, विद्वान् एवं परस्त्रियों में रुचि रखने वाला होता है।

शनि

षष्ठभाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, व्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

वृष राशि में शनि हो तो जातक असत्य भाषी, द्रव्यहीन, मूर्ख, वचनहीन, सफल, एकान्तप्रिय, छोटी-छोटी बातों के कारण चिन्तित एवं संयमी होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

मकर राशि में राहु हो तो जातक मितव्ययी, कुटुम्बहीन एवं दाँत रोगी होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

कर्क राशि में केतु हो तो जातक वातविकारी, भूतप्रेत पीड़ित एवं दुःखी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया धनु लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ, बलवान एवं शांत स्वभाव के व्यक्ति होते हैं परन्तु यदाकदा ये अभिमान के भाव का प्रदर्शन करते हैं। धार्मिकता की भावना इनमें विद्यमान रहती है तथा अत्यंत ही बुद्धिमता से सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करते हैं तथा उनमें सफलता भी प्राप्त करते हैं फलतः जीवन में धनैश्वर्य एवं सुख संसाधनों को अर्जित करने में ये समर्थ रहते हैं। आदर्शवाद एवं अध्यात्मवाद के मध्य प्रवृत्त रहकर ये भौतिक सुखों का भी उपभोग करते हैं। अन्य जनों के ये विश्वास पात्र होते हैं परन्तु स्वयं दूसरों पर विश्वास कम ही करते हैं। दानशीलता की भी इनकी प्रवृत्ति होती है तथा सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश की प्राप्ति होती रहती है। धर्म, राजनीति, कानून तथा गणित या ज्योतिष आदि में इनकी रुचि रहती है तथा परिश्रमपूर्वक इन क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करते हैं। भौतिक प्रलोभनों की अपेक्षा इन्हें प्रेम से आसानी से वश में किया जा सकता है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलशाली पुरुष होंगे तथा परिश्रम एवं बुद्धिमतापूर्वक अपने महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगे। आप एक अध्ययनशील व्यक्ति होंगे अतः विभिन्न विषयों का आपको अच्छा ज्ञान होगा। कला के प्रति भी आपकी रुचि रहेगी तथा जीवन में निहित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष करेंगे। साथ ही अन्य जनों से कभी भी द्वेष या ईर्ष्या का भाव नहीं रखेंगे। शत्रु एवं प्रतिद्वन्द्वियों से भी आपका उदारतापूर्वक व्यवहार रहेगा। इसके अतिरिक्त अपनी व्यवहार कुशलता, बुद्धिमता तथा धैर्य से कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगे तथा सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

लग्न में बृहस्पति की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप एक विद्वान पुरुष होंगे तथा वैदिक धार्मिक या ज्योतिष सम्बन्धी विषयों का अध्ययन करेंगे तथा इस क्षेत्र में आप परिश्रमपूर्वक कोई विशिष्ट उपलब्धि तथा यश अर्जित करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी आपकी स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा सुखैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके उनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। पुत्र संतति से आप युक्त होंगे तथा इनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग मिलेगा। साथ ही पिता के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी सेवा करने में तत्पर रहेंगे। इससे आपको आत्मसन्तुष्टि की अनुभूति होगी। परिवार की उन्नति एवं समृद्धि में आपका प्रमुख सहयोग रहेगा तथा समाजिक जनों के मध्य प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

आप आस्तिक विचारों के पुरुष होंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में निष्ठा रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक सम्पन्न करेंगे। साथ ही तीर्थयात्रा आदि के भी योग बनेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग के मध्य आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा उनसे पूर्ण सम्मान सहयोग तथा लाभ मिलता रहेगा। इस प्रकार आप स्वस्थ बुद्धिमान विद्वान पराक्रमी तथा धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा सर्व भौतिक सुखों को अर्जित करके सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अन्य जनों से अपना वायदा पूरा नहीं करेंगे तथा अपना अधिकांश समय अनावश्यक वार्तालाप में ही व्यतीत करेंगे। आप इतनी बातूनी प्रकृति के व्यक्ति होंगे कि अन्य लोग आसानी से आप पर काबू नहीं पा सकते हैं। आपका स्वभाव आधुनिक विचारों से युक्त रहेगा तथा विनम्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आपकी एक मुख्य विशेषता यह रहेगी कि आप किसी को भी अनावश्यक रूप से अपना मित्र नहीं बनाएंगे तथा अत्यंत ही सोच समझकर ही किसी से मित्रता करेंगे जब आप पूर्ण रूप से सन्तुष्ट हो जाएंगे।

आप आंतरिक मन से पारिवारिक जनों की पूर्ण चिंता करेंगे परन्तु प्रत्यक्ष में उपेक्षा के भाव को ही प्रदर्शित करेंगे। इससे कई बार पारिवारिक जनों के मध्य अनावश्यक मतभेद की भी संभावना रहेगी तथापि उनसे आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग मिलता रहेगा तथा परिवार की खुशहाली के लिए आप सदैव प्रयत्न तथा परिश्रमशील रहेंगे। आप विभिन्न स्वादों के प्रिय रहेंगे तथा अवसरानुकूल इनका आस्वादन करते रहेंगे। वृद्धावस्था में आपको नेत्र संबन्धी कष्ट की भी संभावना रहेगी। इसके अतिरिक्त नौकरी या अन्य साधनों से आप इच्छित मात्रा में धनार्जन करेंगे। साथ ही विदेश भ्रमण आदि से भी लाभ की संभावना रहेगी। इस प्रकार वैभवशाली जीवन व्यतीत करने में आप समर्थ रहेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति अच्छी रहेगी तथा किसी भी वस्तु या विषय को आसानी से नहीं भूल पाएंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा वे बुद्धिमान आदर्श तथा आज्ञाकारी होंगे तथा आपको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आर्थिक रूप से भी उनकी स्थिति सुदृढ़ रहेगी एवं सामाजिक मान सम्मान से भी युक्त रहेंगे। साथ ही परस्पर कमियों या गलतियों की आप उपेक्षा करेंगे जिससे परिवार में शान्ति तथा खुशहाली बनी रहेगी तथा सभी परिवार की मर्यादा तथा सम्मान के लिए चिन्तित रहेंगे। मित्र एवं संबंधियों से भी आपके सामान्यतया मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग मिलता रहेगा।

आप एक साहसी तथा पराकमी पुरुष होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं विद्वता से उपलब्धियां अर्जित करेंगे। साथ ही यदि कोई परेशानी या समस्या उत्पन्न होगी तो दृढ़ता पूर्वक उसका सामना करेंगे। जो आप कहेंगे वहीं करेंगे भी यह आपके व्यक्तित्व की विशेषता रहेगी। आप एक सिद्धांतवादी पुरुष होंगे तथा अपने सिद्धांतों पर दृढ़ रहेंगे चाहे उनका फल कुछ भी हो। साथ ही वाहन, दूरदर्शन या टेलीफोन आदि संचार तथा भौतिक साधनों की भी आपको प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक जीवन में इनका उपभोग करते रहेंगे। संगीत एवं कला आदि के प्रति भी आपके मन में रुचि रहेगी तथा रिक्त समय में इनसे मनोरंजन करेंगे। आप की दूर समीप की यात्राएं होंगी तथा इनसे यथोचित लाभ एवं ख्याति प्राप्त होगी साथ ही अध्ययन में सूचना संबंधी लेखों में आपकी रुचि रहेगी। आप स्वयं भी लेखक या संपादक हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त आपकी मित्रता कीर्तिवान, क्षमाशील, सत्यवक्ता तथा उत्तम शील स्वभाव के व्यक्तियों से होगी। साथ ही जीवन में सुखोपभोग करके आप एक आदर्शवादी पुरुष होंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में मीनराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख संसाधनों से भी युक्त होंगे एवं आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप एक वैभवशाली व्यक्ति भी होंगे तथा समाज में अपना यथोचित स्तर बनाए रखने में समर्थ होंगे।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपको किसी श्रेष्ठ या वृद्ध व्यक्ति से वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। स्वपरिश्रम, बुद्धिमत्ता एवं योग्यता से भी आप इच्छित धन सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपको अचल सम्पत्ति की अपेक्षा चल सम्पत्ति से विशिष्ट एवं शीघ्र लाभ के योग बनते हैं। अतः चल सम्पत्ति पर विशेष निवेश करना चाहिए।

जीवन में आपको सुन्दर विस्तृत एवं आकर्षक आवास की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से यह सुसज्जित रहेगा। इसकी स्वच्छता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी समृद्ध कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा संबंधों में अनुकूलता रहेगी। इसके अतिरिक्त आप प्रारंभ से ही उत्तम वाहन प्राप्त करेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी शिक्षित, बुद्धिमान एवं सरल स्वभाव की महिला होगी तथा अपनी कर्तव्य परायणता तथा उत्तम कार्य कलापों से सभी सदस्यों को प्रसन्न तथा प्रभावित रखेंगी। परिवार के सभी लोग उन्हें वांछित आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित नैतिक, आर्थिक एवं अन्य प्रकार से सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आपकी चहुमुखी उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा। आपकी माता के प्रति श्रद्धा एवं आज्ञाकारिता का भाव रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इससे आपके परस्पर संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी रुचि रहेगी तथा छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंकों से सफलताएं प्राप्त करेंगे। इसी परिपेक्ष्य में आप स्नातक परीक्षा ससम्मान उत्तीर्ण करेंगे इससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में अग्रसर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप किसी उच्च तकनीकी या व्यावसायिक पाठ्य क्रम में भी उच्चस्तरीय डिग्री अर्जित करने में समर्थ होंगे।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं अनुकूल निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे अवसरानुकूल आप इच्छित लाभ एवं सफलता अर्जित कर सकते हैं। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी शीघ्र एवं आसानी से करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन के प्रति भी आपकी श्रद्धा एवं रुचि होगी तथा यत्नपूर्वक इनके ज्ञानार्जन में रुचिशील होंगे। आधुनिक विज्ञान, भौतिक विज्ञान गणित या ज्योतिष में भी आपकी प्रबल रुचि होगी एवं परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञानार्जन करेंगे। इस क्षेत्र में आप कुछ नवीन कार्य या सिद्धान्तों का भी प्रतिपादन कर सकते हैं जिससे आपके प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा लोग एक विद्वान के रूप में आपको सम्मान प्रदान करेंगे।

पंचमभाव में मेष राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंग में आप भावनात्मक आकर्षण तथा सम्मान का भाव रखेंगे। आपके प्रेम में मर्यादा नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण होगा तथा मनोरंजन के लिए ऐसे संबंध स्थापित नहीं करेंगे। अतः आपके प्रेम की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्र संतति अवश्य होगी। आपकी संतति बुद्धिमान प्रतिभाशाली एवं पराक्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में भी सर्वदा तत्पर होंगे। वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में माता-पिता का सहयोग एवं सलाह अवश्य लेंगे। इससे संबंधों में मधुरता तथा सद्भावना बनी रहेगी। माता की अपेक्षा पिता के प्रति उनके मन में विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे पिता के माध्यम से ही करना सुविधाजनक समझेंगे परन्तु आदर दोनों का समान होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में वे आपकी तन-मन-धन से सेवा करेंगे एवं अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार बच्चों के संदर्भ में आप एक भाग्यशाली व्यक्ति माने जायेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में आपकी संतति अत्यधिक योग्य एवं प्रतिभाशाली सिद्ध होगी तथा प्रारम्भ से ही इच्छित उन्नति का प्रदर्शन करेंगे जिससे उनका भविष्य उज्ज्वल होगा। आप भी उनकी शिक्षा के लिए किसी भी प्रकार की कमी नहीं करेंगे तथा अच्छी से अच्छी एवं आधुनिक संस्था में उन्हें शिक्षा प्रदान करायेंगे। इसके अतिरिक्त वे सुन्दर, स्वस्थ, विनम्र स्वभाव सक्रिय एवं निपुण होंगे तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य सामाजिक जनों को प्रभावित तथा प्रसन्न करने में समर्थ होंगे तथा वे भी बच्चोंको वांछित स्नेह एवं प्रोत्साहन देंगे। इससे आपकी भी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी फलतः बच्चों से आप सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक है। अतः इसके प्रभाव से आप का शत्रु या विरोधी पक्ष प्रबल रहेगा इसका मुख्य कारण यह रहेगा कि आप अपनी ही इच्छा से अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा अन्य जनों की इच्छा या सलाह को कोई महत्व नहीं देंगे। आपका उच्च स्तर, कार्य प्रणाली तथा अन्य प्रकार से खुशहाली आपके शत्रुवर्ग के लिए ईर्ष्या का कारण होगी। साथ ही आपको अपने सम्बन्धियों तथा सहयोगियों से भी समय समय पर विरोध का सामना करना पड़ेगा। आप सामान्यतया दीवानी तथा फौजदारी मुकद्दमों में लिप्त रहेंगे तथा इन पर आप मुक्त भाव से व्यय करेंगे जिससे आपको इनमें सफलता प्राप्त हो सकें। आप एक चतुर चालाक तथा बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा साम दाम दण्ड भेद से किस प्रकार से कार्य सिद्ध किया जाता है इसके विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा। इस प्रकार अपनी इस कार्य प्रणाली से आप शत्रु वर्ग तथा मुकद्दमे बाजी में विजय प्राप्त कर सकेंगे।

आपको सेवक वर्ग की सामान्यतया अत्यधिक आवश्यकता रहेगी आप एक व्यस्त व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त कार्यों को सम्पन्न करने में असमर्थ रहेंगे अतः नौकरों की नियुक्ति आपके लिए आवश्यक कार्य होगा लेकिन यदा कदा सेवक वर्ग आपके गुप्त रहस्यों को उजागर करेंगे फलतः समाज में आपके मान सम्मान में न्यूनता रहेगी। साथ ही वे चोरी आदि से भी हानि प्रदान कर सकते हैं अतः इनके चुनाव में सावधानी का परिचय दें।

आपके पास आराम दायक जीवन व्यतीत करने के लिए पर्याप्त मात्रा में धन रहेगा लेकिन अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए आपका अनावश्यक व्यय भी होगा जिससे ऋण आदि के भार से दब सकते हैं। आप एक सम्मानीय परिवार के सदस्य होंगे तथा आपके मामा मामियों का स्तर भी उच्च रहेगा। यद्यपि वे आपको पसंद करेंगे परन्तु आपको इच्छित सुख एवं सहयोग प्रदान कम ही करेंगे तथा आपकी कार्य प्रणाली से भी वे सन्तुष्ट नहीं रहेंगे लेकिन अत्यधिक आवश्यकता के समय वे आपको अपना सहयोग प्रदान कर सकते हैं। साथ ही उत्तम स्वास्थ्य के लिए खान पान का पूर्ण ध्यान रखें तथा अनावश्यक रूप से भोजन में अनियमिता न रखें नहीं तो प्रौढ़वस्था में आप किंचित परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा शुक्र भी सप्तम भाव में ही स्थित है सामान्यतया सप्तम भाव में मिथुन राशि से जातक का सहयोगी सुशील विनम्र कला प्रेमी तथा हास्य प्रिय होता है। शुक्र के प्रभाव से वह संगीत एवं अभिनय में रुचि रखने वाला सुंदरता का प्रेमी आधुनिक विचारों वाला एवं सांसारिक कार्यों में दक्ष होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की विनम्र महिला होंगी तथा सांसारिक कार्यों को चतुराई से सम्पन्न करेंगी। संगीत एवं कला के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण होगा एवं इस क्षेत्र में उन्हें कोई विशिष्ट उपलब्धि की भी प्राप्ति हो सकती है शुक्र के प्रभाव से उनमें आधुनिकता की भी स्पष्ट छाप होगी तथा आधुनिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों के प्रति विशेष इच्छुक होंगी। कर्तव्य परायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा एवं समाज तथा परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी।

आपकी पत्नी अतिसुंदर आकर्षक एवं गौर वर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी अत्यंत ही दर्शनीय होगी एवं शरीर के सभी अंग प्रत्यंग पुष्ट एवं सुडौलता से युक्त होंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा व्यक्तित्व में भी निखार आएगा। अपने सौन्दर्य को बनाए रखने के लिए वह आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का भी प्रयोग करेंगी। वह हमेशा उत्तम एवं आधुनिक परिधानों को धारण करना पसन्द करेंगी तथा सुंदरता के प्रति विशेष आकृष्ट होंगी।

आपका विवाह संबन्धियों के सहयोग से होगा तथा इसमें महिला संबंधी की भूमिका प्रमुख रहेगी। शुक्र के प्रभाव से आप प्रेम विवाह भी कर सकते हैं विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं आकर्षण बना रहेगा। आप दोनों शिक्षित बुद्धिमान एवं कला साहित्य के प्रेमी होंगे अतः जीवन में मूल्य एवं सिद्धांतों में समता रहेगी जिससे समय प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को एक दूसरे सलाह तथा सहमति से पूर्ण करेंगे इससे आपस में विश्वास तथा सम्मान का भाव रहेगा।

आपका विवाह किसी समृद्ध एवं सम्माननीय परिवार में होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति उनकी सुदृढ़ रहेगी। विवाह के बाद सास ससुर से संबंधों में मधुरता रहेगी तथा उन्हें यथोचित स्नेह की प्राप्ति होगी साथ ही आप भी उन्हें उचित मान सम्मान प्रदान करेंगे।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनका यथोचित ध्यान रखेंगी। देंगी देवर एवं ननद भी उनके सद्व्यवहार से प्रसन्न रहेंगे तथा उन्हें यथोचित सम्मान एवं स्नेह प्रदान करेंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी तथा

इससे लाभदायक उन्नति होगी। साथ ही स्त्री या स्त्री वर्ग से साझेदारी में विशिष्ट लाभ एवं उन्नति के योग बनेंगे तथा आपस में विश्वसनीयता भी बनी रहेगी।



Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj

Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आपके पास आध्यात्म या ज्योतिष के ज्ञान संबन्धी प्रतिभा जन्म से ही रहेगी तथा इनके प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी साथ ही परिश्रम पूर्वक इसका ज्ञान अर्जित करके इस क्षेत्र में सम्मान एवं ख्याति अर्जित करेंगे। आप स्वाभाविक रूप से अन्तर्प्रज्ञा शक्ति की प्रबलता से युक्त रहेंगे। आपके पूर्वाभास तथा भविष्य वाणियां सामान्यतया सत्य ही सिद्ध होगी। साथ ही इस विद्याओं के द्वारा अपनी परेशानियों में भी न्यूनता करने में समर्थ रहेंगे तथा इन शास्त्रों में इच्छुक व्यक्तियों को अपना मित्र बनाएं। इसके अतिरिक्त आर्थिक दृष्टि से भी आप जीवन में इसका उपयोग कर सकते हैं।

आपको पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी तथा इसके द्वारा आप धनऐश्वर्य से युक्त होकर आरामदायक जीवन व्यतीत करेंगे। प्रौढ़ावस्था में आपको और अधिक चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। मित्रों के द्वारा भी कुछ लाभ होने की संभावना रहेगी। शादी के समय में आप प्रचुर मात्रा में दहेज प्राप्त करेंगे जो धन आभूषण वाहन तथा आधुनिक घरेलू सामान के रूप में होगा। यदि आप चाहे तो इसी धन से आराम से अपना जीवन व्यतीत कर सकते हैं। बीमा कराने में आप शीघ्रता करेंगे क्योंकि आप सर्वप्रथम किसी भी वस्तु की पूर्ण सुरक्षा चाहते हैं तथा अनावश्यक हानि न हो इसका प्रबन्ध पहले ही कर देते हैं। आप को जीवन में चोरी या डकैती का सामना कम ही करना पड़ेगा तथा ऐसी घटनाएं होगी भी तो उससे कोई हानि नहीं होगी। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आपकी ईश्वर के प्रति पूर्ण आस्था रहेगी तथा अपने धर्म का श्रद्धा पूर्वक अनुपालन करेंगे। साथ ही पारिवारिक परम्परानुसार धर्म का आचरण करेंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही तीव्र होगी तथा नेतृत्व के गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही आपकी प्रवृत्ति स्वतंत्र होगी तथा धर्म गुरुओं का आप आदर करेंगे तथा उनका अनुसरण भी करेंगे। अध्ययन के क्षेत्र में भी आप विशिष्ट सफलता अर्जित करेंगे तथा प्रसिद्ध धार्मिक तथा तीर्थ स्थानों की समय समय पर यात्रा करते रहेंगे। लेकिन आप मुख्य रूप से अपने धर्म से संबन्धित तीर्थ स्थान की यात्रा करने के ही विशेष इच्छुक रहेंगे। ध्यान एवं योगिक क्रियाओं को भी समय समय पर करते रहेंगे तथा अध्यात्म के द्वारा अपनी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति में वृद्धि करेंगे। साथ ही भविष्य वाणियां करने में भी समर्थ रहेंगे जिससे क्षेत्रीय या राष्ट्रीय स्तर पर आपको सम्मान मिल सकता है।

आप समाज से अपने आपको एक दम जुड़े हुए लगते हैं। आप स्वतंत्रता प्रिय व्यक्ति होंगे तथा किसी अन्य के साथ या नियंत्रण में आपको कार्य करना अच्छा नहीं लगेगा इससे यदा कदा आपको अन्य जनों की आलोचना का भी सामना करना पड़ सकता है लेकिन सामाजिक जीवन में सफल रहेंगे तथा लोग आपकी आज्ञा का पालन करेंगे। धार्मिक एवं व्यवसाय संबंधी कार्यों के लिए आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं हो सकती हैं तथा इनसे आपको मान सम्मान ख्याति एवं धन ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। आप प्राणिमात्र के लिए कई लेख लिखकर तथा उनकी सेवा एवं सहायता के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। पौत्रों से आपको इच्छित सहयोग एवं आनन्द की प्राप्ति होगी। वास्तव में आप अपने पूर्वजन्म के कार्यों से ही इस जीवन में सुखऐश्वर्य अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। कन्या राशि पृथ्वी तत्व प्रधान है अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र श्रमसाध्य होगा परन्तु बौद्धिक एवं मानसिक क्रियाओं की भी इसमें प्रबलता रहेगी आप स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय के इच्छुक भी होंगे एवं परिश्रम पूर्वक कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।

आजीविका की दृष्टि से आप लिपिकीय कार्य, लेखक, कवि, चित्रकार, वास्तुकार, ज्योतिषी, जिल्दसाज, शिक्षक, पुस्तक लेखक, यंत्र निर्माण कर्ता, संशोधक, अनुवादक, वकील, दूतकार्य, टेलीफोन आपरेटर या दूरभाष विभाग तथा राजनीति में किसी उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति के व्यक्तिगत सहायक के रूप में वांछित उन्नति सफलता एवं प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। साथ ही उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा अतः आपको उपरोक्त विभागों एवं क्षेत्रों में ही उज्ज्वल भविष्य के लिए अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए एजेंसी दलाली पुस्तक विक्रय या प्रकाशन कार्य, अगरबत्ती पुष्पमालाएं, कागज के खिलौने कलात्मक वस्तुएं या वास्तुकला, वकालत, लेखाकार आदि के स्वतंत्र व्यवसाय एवं कार्यों से आप को इच्छित धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे अतः उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपना कार्य या व्यापार प्रारंभ करें।

जीवन में आपको मान प्रतिष्ठा तथा सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे जिससे आपके समाज में प्रभाव में वृद्धि होगी एवं सभी लोग आपको वांछित सम्मान एवं आदर प्रदान करेंगे। आप किसी सामाजिक सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक संस्था में किसी सम्माननीय पदाधिकारी या सदस्य के रूप में मनोनीत होंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस प्रकार अपनी अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट रहेंगे।

आपके पिता बुद्धिमान शिक्षित एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में सभी लोग उन्हें यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण अपनत्व एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी उच्चशिक्षा के लिए सदैव तत्पर होंगे। आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान रहेगा तथा आप भी अपने परिश्रम ईमानदारी एवं योग्यता से पिता की प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता होगी तथा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक समानता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को एक दूसरे की सलाह तथा सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक है। अतः इसके प्रभाव से आप एक दूरदर्शी व्यावहारिक तथा न्यायप्रिय व्यक्ति होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों के साथ साथ अपने पराक्रम एवं योग्यता से अपने जीवन की अधिकांश आकाक्षाओं तथा उमंगों को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। धन धान्य एवं भौतिक सुख साधनों से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही जीवन में पत्नी या किसी अन्य स्त्री के सहयोग से वांछित धनार्जन करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही विलासमय वस्तुओं के कय विक्रय, इलक्ट्रॉनिक्स उपकरण तथा कम्प्यूटर आदि के क्षेत्र में भी आपको आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। इस प्रकार आजीवन आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया सुदृढ़ ही रहेगी।

आपको बड़ी बहनों से जीवन में वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही वे आपको पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह प्रदान करेंगी। वे आपको समय समय पर आर्थिक तथा अन्य क्षेत्र में भी सहायता देंगी तथा आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे एवं अवसरानुकूल उनकी इच्छा के अनुसार ही सामान्य कार्य सम्पन्न करेंगे। आप मित्रता प्रिय व्यक्ति होंगे अतः आपके मित्रता का क्षेत्र विस्तृत रहेगा। मित्र मंडल में आप आदरणीय रहेंगे सभी मित्रजन आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। आपको एकांत पसन्द नहीं रहता तथा किसी न किसी मित्र की आवश्यकता हमेशा रहती है। इसके अतिरिक्त आप स्वयं भी ईमानदार एवं उदार व्यक्ति होंगे तथा समाज से आपको पूर्ण सम्मान प्राप्त होगा एवं प्रौढ़ावस्था में किसी विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति भी हो सकती है। साथ ही समाज एवं पड़ोसियों की सेवा एवं सहायता करने के लिए भी आप सदैव तत्पर रहेंगे। अतः सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। इसके प्रभाव से आप भौतिक वादी पुरुष होंगे तथा धनार्जन करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपका स्वभाव अन्य जनों के परोपकार के लिए भी व्यय करने का रहेगा। अतः आपको अधिक धन की समय समय पर आवश्यकता पड़ेगी लेकिन अपनी योग्यता तथा पराक्रम से प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। आप हमेशा धनवान एवं ऐश्वर्यशाली होने के इच्छुक रहेंगे साथ ही आर्थिक सुरक्षा के भी इच्छुक होंगे तथा इसमें सफल रहेंगे।

आपका मुख्य रूप से व्यय, दया दान एवं मित्रों तथा बन्धुवर्ग पर रहेगा। आपको इसका जब भी अवसर मिलेगा प्रचुर मात्रा में व्यय करेंगे। साथ ही भौतिक साज समान पर भी व्यय होगा लेकिन कभी कभी आपको ऐसे मामलों में सावधान भी रहना चाहिए क्योंकि आपकी प्रवृत्ति को देखते हुए लोग आपसे झूठ मूठ धन भी ँठ सकते हैं।

आप दूर समीप की यात्रा के शौकीन रहेंगे तथा इनसे आपको नवीन ज्ञान की प्राप्ति होगी तथा अन्य नई चीजों को भी आप सीखेंगे। अतः यात्रा से आपको प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। साथ ही युवावस्था में आप कई साहसिक कार्यों को भी सम्पन्न करेंगे। आप किसी नये सिद्धांत को भी प्रतिपादित कर सकते हैं। आपकी देश की यात्राओं के अतिरिक्त विदेश संबंधी कोई यात्रा भी होगी यह कार्यवश या स्वास्थ्य के कारण भी हो सकती है। इसके साथ ही बाएं आंख में भी कोई परेशानी रहेगी या किसी चोट आदि का होगा। लेकिन सामान्य रूप से आप सुख पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि तृतीय भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि चतुर्थ भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि सप्तम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि अष्टम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि सप्तम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुरुग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। इसलिए आप अपनी शक्ति व सामर्थ्य के अनुसार कार्य करते रहें। नौकरी करने वाले जातकों का स्थानान्तरण घर से दूर हो सकता है।

14 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उस समय आप अपने व्यवसाय में अच्छा विस्तार करेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलेंगे। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करें, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद अधिक है। आपको अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा व साझेदारी में लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ में व्यापारिक अनुकूलता नहीं होने के कारण आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं रहेगी। 14 मई के बाद एकादश स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से धनागम में वृद्धि होगी। आप बचत कर आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सफल रहेंगे।

आपको मित्र या पत्नी के माध्यम से धन लाभ हो सकता है। परिवार में मांगलिक कार्य में भी आपका धन व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। चतुर्थ स्थान के राहु आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं, जिससे आपका पारिवारिक माहौल खराब हो सकता है। माता के साथ आपके वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। अतः उस समय आपको अपने विवेक से काम लेना होगा।

14 मई के बाद आपकी पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह हो जाएगा। राहु के गोचर के बाद सामाजिक पद प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए वर्षारम्भ में गुरुग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है। उसका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है, परन्तु मई के बाद आपके बच्चे के लिए समय काफी अनुकूल हो रहा है।

उस समय उनको अपने कार्य क्षेत्र सफलता प्राप्त होगी। शिक्षा में सुधार होगा। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरुछोटी-मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो परहेज की आवश्यकता है।

14 मई के बाद गुरुग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। उस समय आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगा, जिससे आप स्वस्थ बने रहेंगे। मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अनुशासित होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। करियर में सफलता प्राप्त के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

14 मई के बाद समय बहुत अनुकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में यदि प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेना चाह रहे हैं तो समय शुभ है। व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

तृतीयस्थ शनि आपके छोटी-मोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में मानसिक द्वंदता के कारण आपका मन पूजा पाठ में नहीं लगेगा। 14 मई से गुरुग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे, जिससे आपको परिवार में सुख, समृद्धि एवं मानसिक शान्ति का अनुभव होगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- शनिवार को लोहे का तवा दान करें।



Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj

Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में द्वितीय भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि में अष्टम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप अपने व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। आपको कार्य क्षेत्र में मित्र, सहयोगी व जीवनसाथी का भी सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

02 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में आपके कार्य व्यवसाय में उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। अतः कोई नया काम प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती है। भूमि भवन से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को नुकसान भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम में निरन्तरता बना रहेगी। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे और आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में जीवनसाथी एवं भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं शनि दोनों ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में आपको किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो आपका पैसा डूब सकता है। निवेश के लिए ये समय उपयुक्त नहीं है। अतः इस वर्ष आप कोई निवेश न करें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके जीवनसाथी के साथ समन्ध मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो सकता है। आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

02 जून के बाद समय अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि आपकी पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी होगी। आपके माता पिता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा है। यदि आपकी दूसरा संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं रहेगा। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनकी शिक्षा-दिक्षा भी प्रभावित हो सकती है। उनको सफलता प्राप्ति के लिए लगातार कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है परन्तु 31 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। आपके मन में सकारात्मक विचार आएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

02 जून के बाद स्वास्थ्य के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से प्रभावित हो सकते हैं। अष्टमस्थ गुरुजल तत्व राशि में होने कारण कफ, पाचनतन्त्र व पेट संबंधित बीमारियों से परेशान कर सकते हैं परन्तु 31 अक्टूबर के बाद आप के स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। व्यवसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा के लिए समय अच्छा है।

02 जून के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपकी उच्च शिक्षा में भी रुकावटें आ सकती हैं। बेरोजगार जातकों को अभी कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान के राहु छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने स्थान से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण मनोनुकूल स्थान पर नहीं होगा। 02 जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। आप अपने जीवनसाथी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे। 02जूनके बाद अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा-पाठ व धार्मिक कार्य कम ही कर पाएँगे।

- सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को जल चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा लोहे का तवा दान करें।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटे और वीरवार का व्रत करें।



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं चतुर्थ भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष द्वितीय भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टम स्थान के गुरु आपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। किसी पर अधिक विश्वास करना आप के लिए लाभ प्रद नहीं रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें।

जून के बाद शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। जिसके प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में उन्नति मिलना शुरू हो जाएगी। इस समय आप कोई नया कार्य भी प्रारम्भ कर सकते हैं, जिसमें आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप भाग्य की अनुकूलता के कारण उन्नति करेंगे। 3 अक्टूबर के बाद शनि ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। उस समय कोई भी निर्णय बहुत सोच विचार कर लेना चाहिए। 26 नवम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्षका पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान का राहु आपके संचित धन में कमी ला सकते हैं। आय के सारे मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। आपको चोरी आदि से धन हानि भी हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। रोग दूर करने में भी पैसा खर्च हो सकता है।

जून के बाद आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू हो जाएगा। सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से भी आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन खर्च कर सकते हैं। 26 नवम्बर के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की भी प्राप्ति हो सकती है। परिवार या संबंधियों के मांगलिक कार्य व बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पाप ग्रह से प्रभावित होने के कारण आपका घरेलू वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी। परिवार में स्वार्थ की भावना उत्पन्न होगी और इसी स्वार्थ के कारण पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपकी माता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके अंदर वाणी दोष उत्पन्न हो सकता है अतः अच्छा होगा कि इस समय के अंतराल में आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना होगा।

जून के बाद पारिवारिक वातावरण अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। आपको छोटे भाई बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके पराक्रम में वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से संतान संबंधित परेशानी बनी रहेंगी। आपके बच्चों की उन्नति में भी व्यवधान आ सकता है, जिससे वे अपने लक्ष्य तक पहुंचने में कठिनाईयों का सामना करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतानोत्पत्ति में विलम्ब हो सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय गर्भाधान के लिए बहुत अच्छा योग बन रहा है। आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी और शिक्षा के क्षेत्र में कुछ विशेष करेंगे। संतान के लिए विवाह का प्रबल योग बन रहा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरुके कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। अपने खान-पान के साथ साथ अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित रखें। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

जून के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। उस समय आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। धार्मिक कृत्यों में रुचि बढ़ेगी जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। विद्यार्थियों में पढ़ाई के प्रति रुचि बनी रहेगी, साथ ही आलस्य का त्याग करें।

जून से गुरु एवं शनि का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। जिन जातकों की अभी तक नौकरी नहीं लगी है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा हो सकती है। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से घर से दूर की यात्रा हो सकती है। नौकरी करने वालों का स्थानान्तरण भी हो सकता है।

26 जून के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक अस्थिरता के कारण पूजा-पाठ में मन कम ही लगेगा। एकाग्रता नहीं रहने के कारण ध्यान, मन्त्र पाठ इत्यादि क्रियाएं नहीं कर पाएंगे। जून के बाद आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप किसी को गुरु भी बना सकते हैं। उनसे गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना भी कर सकते हैं।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पिली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- बुधवार या शनिवार को चिड़ियों को दाना डालें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में दशमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। 28 फरवरी से भाग्य आपके अनुकूल हो रहा है। कार्य व्यवसाय में सफलता मिलेगी। वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। द्वितीयस्थ राहु का नकारात्मक प्रभाव आपके व्यवसाय पर पड़ेगा।

24 मई को राहु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में हो रहा है। मानसिक अशान्ति एवं शारीरिक आलस्यता के कारण आपके कार्यों में कुछ व्यवधान आएंगे। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो साझेदार के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में आपको विवेक से काम लेना चाहिए।

धन संपत्ति

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी परन्तु आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधा पर भी अधिक खर्च करेंगे। चतुर्थस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा।

फरवरी के बाद पिता से लाभ मिलेगा। बच्चों की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे। लग्नस्थ राहु के प्रभाव से शारीरिक व्याधी दूर करने में भी आपके पैसे खर्च होंगे। 24 जुलाई से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं है। चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पीड़ित होने के कारण घरेलू वातावरण अशान्त बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होते रहेंगे। 23 फरवरी के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

24 जुलाई से चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा। माता पिता के लिए यह समय अच्छा रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु फरवरी के बाद बहुत बढ़िया हो रहा है। शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

24 जुलाई के बाद सफलता प्राप्ति लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी। आप अपनी मेहनत के बल पर ही लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा परन्तु किंचित मानसिक परेशानी बनी रहेगी। 28 फरवरी के बाद गुरु की दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि के संकेत हैं।

24 मई को राहु ग्रह का गोचर लग्न स्थान पर हो रहा है। उस समय स्वस्थ रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव होता रहेगा। आलस्य की भावना बनी रहेगी। सुबह सूर्योदय के पहले उठकर व्यायाम करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा, परन्तु फरवरी के बाद समय उत्तम हो रहा है। व्यावसायिक शिक्षा के लिए समय बहुत बढ़िया चल रहा है। विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

24 जुलाई के बाद प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले व्यक्तियों को सफलता प्राप्त होगी और अपने शत्रुओं पीछे छोड़कर आगे बढ़ेंगे

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। फरवरी के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नतिकारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

24 जुलाई के बाद आप पूरे परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

अपने जन्म स्थल से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

28 फरवरी से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं राहु के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नानादि से निवृत्त होकर सूर्य को जल दें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु लग्न भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यापारिक सफलता के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आय के सारे मार्ग खुलेंगे। आपके कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अत्यधिक लाभ होगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा। 29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण आपके कुछ विरोधी उत्पन्न हो सकते हैं परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं।

25 अगस्त से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है जिसके फलस्वरूप आप अपने व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आपको कर्मचारियों का पूरा सहयोग मिलेगा। इस सफलता के पीछे आपके भाईयों का सहयोग होगा। व्यापार का स्तर बढ़ाने के लिए अपना संचित धन भी खर्च कर सकते हैं। नौकरी करने वालों के लिए भी यह वर्ष अनुकूल रहेगा। अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। धनागम के योग प्रबल होंगे तथा आय के नये साधन मिलेंगे।

25 अगस्त के बाद आपका रुका हुआ धन मिल सकता है। मातुल पक्ष के लोगों से भी लाभ होगा। लग्न स्थान के राहु शारीरिक व्याधि दूर करने में पैसा खर्च करा सकते हैं परन्तु सामान्य काम-काज पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। छठे स्थान का शनि शत्रुओं से भी लाभ करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

घर परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह भी करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है जिससे परिवार में खुशहाली का माहौल बनेगा। भाई-बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलता रहेगा। समाज में आपकी पद-प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। मार्च के बाद संतान

को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

लग्न स्थान के राहु आपका स्वास्थ्य व पारिवारिक अनुकूलता प्रभावित कर सकते हैं। 25 अगस्त के बाद अपने बौद्धिक बल द्वारा आप अपने घरेलू वातावरण को अनुकूल बना लेंगे। अष्टम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

संतान

वर्षारम्भ में पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि से संतान के लिए उत्तम योग बन रहे हैं। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। यदि सन्तान विवाह योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

25 अगस्त से समय फिर से अच्छा हो रहा है। आपका सन्तान की शिक्षा में सुधार होगा और उनको उन्नति के अवसर भी मिलेंगे। 05 अक्टूबर के बाद समय और भी शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए सामान्य रहेगा। लग्नस्थ राहु के प्रभाव से बीमारी नहीं रहने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभव होगा। गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के फलस्वरूप स्वास्थ्य श्रेष्ठ व मन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण छोटी-मोटी बीमारियों से परेशानी हो सकती है परन्तु 25 अगस्त से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल होने के कारण समय बहुत अच्छा हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं तथा शीघ्र ही अपने लिए आय के नवीन स्रोतों का भी सृजन करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ प्रभावित होगा।

25 अगस्त के बाद आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। सभी बेरोजगारों को नौकरी मिल सकती है। सरकारी अफसरों या वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपकी छोटी-छोटी यात्राएं होती रहेंगी। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्रा भी होंगी।

29 मार्च के बाद आपकी विदेश यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा

लाभ मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास बढ़ेगा। आप अपनी पारिवारिक सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा का आयोजन करेंगे जिसमें आपके परिवार वालों का पूर्ण सहयोग होगा।

- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें। गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- अपने माता पिता की सेवा करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच या दुर्गा चालीसा का पाठ करें।



वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में अपने सहयोगियों के साथ अपने अधिकारियों को भी प्रभावित करेंगे। साल की शुरुआत में आपके कार्यों में देरी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है।

आप अपने लक्ष्य को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। शनि का गोचर आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी करेगा। आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना निर्धारित करनी होगी और इस ओर ध्यान देना होगा। जो व्यक्ति रोजगार की तलाश में हैं उन्हें अड़चनों के बावजूद सफलता प्राप्त होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक तौर से यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आने वाला है। आपको पहले महीने में प्रतीत नहीं होगा क्योंकि इस दौरान राहु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं है। आपको आर्थिक हानि का सामना करना पड़ सकता है। आपको इस दौरान यही सलाह दी जाती है कि इस समय अपनी वित्तीय योजनाओं को निर्धारित कर आगामी समय के लिए खुद को तैयार रखें। अप्रैल के बाद समय आपके लिए बहुत ही अनुकूल हो रहा है। आप बड़े काम करने में सफल होंगे।

23 सितम्बर के बाद गुरु का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः पहले से ही कुछ अतिरिक्त धन का संचय करें। आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है जिसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके दाम्पत्य जीवन में सामान्य उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। पंचम भाव का शनि संतान सुख में कमी कर सकता है। ऐसे में अपने बच्चों के साथ मधुर संबंध बनाना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 17 अप्रैल के बाद षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

आपको बड़े भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

गुरु के गोचर के बाद आपके घरेलू वातावरण में अनुकूलता आएगी। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बनेगा। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। पंचमस्थ शनि आपके बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है जिससे उसकी शिक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। इस समयान्तराल में गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए।

मई के बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा और उनकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। यदि आपकी संतान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ राहु के प्रभाव से स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। इस समय के अंतराल में दवा से अधिक दुआ आपके लिए लाभप्रद रहेगी। 17 अप्रैल के बाद षष्ठस्थ शनि ग्रह के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे जिससे आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता बनी रहेगी।

23 सितम्बर के बाद द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवर जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। व्यावसायिक व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा। विदेशी भाषा सीखने के लिए यह समय बहुत अच्छा है।

शनि एवं गुरु के गोचर के बाद समय काफी उत्तम हो जाएगा। आप सारे शत्रुओं को परास्त कर अपने करियर में आगे रहेंगे। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। बेरोजगार लोगों को इच्छित नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। छोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए अच्छा योग बन रहा है।

मई के बाद आप ज्यादातर यात्रा पर ही रहेंगे दूर की यात्राएं अधिक होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। इन सब यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान-पुण्य करेंगे। 1 मई से आपकी अपने इष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ घरेलू सुख-शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें और काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।



वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि छटे भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। व्यक्तिगत संबंधों में भी सुधार आएगा। जीवन के हर क्षेत्र में आपको सफल परिणाम देखने को मिलेंगे। अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। 18 फरवरी के बाद आपके व्यवसाय में कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में हैं तो अच्छा लाभ होगा और आपको मित्र का पूरा सहयोग मिलेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को कार्यस्थल पर ही मान सम्मान मिलेगा।

द्वादशस्थ राहु के कारण गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे परन्तु आपके पराक्रम के डर से कुछ कर नहीं पाएंगे। 8 अगस्त के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे और उसमें आपको सफलता प्राप्त होगी।

धन संपत्ति

यदि वर्ष के प्रथम दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण आपकी आर्थिक वृद्धि होगी जिससे आपके पुराने चले आ रहे सारे कर्जों से मुक्ति मिल सकती है। द्वादशस्थ राहु के कारण कुछ चुनौतियां आपके सामने आ सकती हैं।

8 अगस्त के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। अचानक आय के स्रोत खुलेंगे। रुके हुए या फंसे हुए पैसे आने शुरू हो जाएंगे। 15 अक्टूबर से गुरु ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में हो रहा है। उस समय आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। इसलिए आपको आर्थिक मामलों में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बना रहेगा। आपके मातुल पक्ष के लोगों के साथ समन्वय मधुर होंगे। आपके माता-पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद धर्मपत्नी के साथ संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाई बहनों

के साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपके विरोधी शान्त होंगे।

संतान

वर्ष के प्रथम दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल संतान के लिए अच्छा रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति के अच्छे योग बन रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। उसका विवाह भी हो सकता है। 15 अक्टूबर से अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं तो गलत संगत में पड़ सकते हैं, जो कि उनकी उन्नति में बाधा उत्पन्न कर सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान का गुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है। गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ या पेट संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है परन्तु 18 फरवरी के बाद गुरु का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।

छठे स्थान के शनि आपके अंदर रोगप्रतिरोधक शक्ति का विकास करेंगे जिससे आप स्वस्थ बने रहेंगे परन्तु 15 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। उस समय आप छोटी-मोटी मौसमजनित बीमारी या सर्दी-जुखाम से परेशान हो सकते हैं। इसलिए उस समय के अंतराल में सावधानी बरतना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए 18 फरवरी के बाद समय श्रेष्ठ है। छठे स्थान का शनि इच्छित प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त करा सकता है।

8 अगस्त से समय बहुत अच्छा हो रहा है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। जो जातक रोजगार की तलाश में हैं उनको मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी।

यात्रा-तबादला

18 फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। इस समय में आपकी यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक रहेगा। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

15 अक्टूबर को द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं और विदेशी संपर्कों से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन, गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि शुभ कर्म अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- राहु ग्रह का मन्त्र पाठ करें या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।



वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं छठे भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुलग्न स्थान में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं लग्न स्थान में आजाएंगे और पुनः मार्गशीर्ष होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक स्तर के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत हितकारी होगा। आपको प्रतीत होगा कि आपके कुछ सपने अभी भी अधूरे हैं और इसलिए आप सपनों को पूरा करने के लिए अथकपरिश्रम करेंगे और सफल होंगे। ग्रहगोचर अनुकूल होने के कारण ऑफिस में आई किसी भी समस्या का समाधान निकाल कर अपने अधिकारियों की नजरों में अच्छे बने रहेंगे।

12 अगस्त के बाद अचानक आपके कार्यों में उन्नति होगी। आपके कार्य व्यवसाय में पत्नी का पूरा सहयोग मिलेगा। अपने मित्र के साथ मिलकर कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे और उस काम में आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का पूर्वार्द्ध आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। आय के स्रोत खुलेंगे। रुके हुए या फंसे हुए धन की प्राप्ति होगी निवेश करने के लिए भी यह समय एकदम उपयुक्त होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में वृद्धि होगी।

12 अगस्त के बाद अचानक आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। धन संचित करने में आपके जीवनसाथी का मुख्य सहयोग होगा। पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। धार्मिक व मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। अपने पारिवारिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का पूर्वार्द्ध पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

मई के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी माता के लिए अच्छा नहीं है। आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण पारिवारिक माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव आपको अच्छा नहीं लगेगा। आप अपनी सहनशक्ति बढ़ाएं और बुद्धिविवेक के द्वारा पारिवारिक स्थिति अनुकूल बनाने की कोशिश करें।

आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान के लिए यह उत्तम समय चल रहा है।

12 अगस्त के बाद बच्चों के साथ प्रेम संबंधों में वृद्धि होगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल बना रहेगा। पूरा साल आप तंदुरुस्त और सेहतमंद महसूस करेंगे क्योंकि लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलने जाना।

मई के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो रहा है। आप आने अन्दर धैर्य बनाए रखें व कार्य के प्रति एकाग्रता बनाए रखें एवं स्वास्थ्य पर ध्यान दें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलने का पूर्ण योग बन रहा है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय श्रेष्ठ है। जो व्यक्ति अभी नौकरी के तलाश में हैं उनको मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी।

मई के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर तैयारी करते रहें क्योंकि अभी की मेहनत आने वाले समय में काम आएगी और उस समय आप अपने लक्ष्यको प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

नवम पर गुरु की दृष्टि के कारण लम्बी यात्रा होगी। धार्मिक यात्रा के भी प्रबल योग बन रहे हैं। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होती रहेंगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

मई के बाद यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है। क्योंकि लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वाहन दुर्घटना या यात्रा के अंतराल में चोरी होने के प्रबल संकेत बन रहे हैं। 12 अगस्त के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी जिसके चलते आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- आर्थिक उन्नति के लिए लक्ष्मी जी पूजा करें या संतोषी का व्रत व उपासना आपके लिए लाभप्रद रहेगी।
- गणेश जी के मन्त्र का पाठ करें।



वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं एकादश भाव रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में रोजी-रोटी के नये आयाम तलाशने का आप प्रयास करेंगे जिसमें आपको सफलता भी मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। सप्तमस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को जल्दवबाजी में कोई निर्णय नहीं लेने चाहिए। किसी प्रकार का परिवर्तन या बदलाव करने से पहले उस पर विशेष ध्यान दें। नहीं तो आने वाले समय के लिए यह निर्णय अच्छा नहीं होगा।

18 मार्च से सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि व्यापारिक व्यक्तियों के लिए अत्यधिक शुभ हो रही है। यह समय आपके व्यापार में कुछ उपलब्धियां लेकर आएगा। यह उपलब्धि किसी नए रोजगार, पदोन्नति या किसी व्यावसायिक क्लाइंट के साथ एक सफल योजना के रूप में भी हो सकती है। साझेदारी में काम करने वाले व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा और आप अपने साझेदार से संतुष्ट भी रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण संचित धन में वृद्धि होगी जिससे पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है। फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों से सलाह अवश्य लें।

18 मार्च के बाद समय और भी अच्छा हो रहा है। फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। आपके परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। उसमें आप धन व्यय करेंगे। साथ ही लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि यदा-कदा आपको मानसिक रूप से अशान्त कर सकती है। परंतु इसका सामान्य कार्य-कलापों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उत्साह एवं पराक्रम के साथ अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में तत्पर रहेंगे। इस वर्ष वाहन क्रय-विक्रय व भूमि क्रय-विक्रय करते समय सावधान रहें क्योंकि चतुर्थ स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की युति अच्छी नहीं होती।

घर-परिवार, समाज

द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार

में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। 18 मार्च से आपके छोटे भाईयों के लिये समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी, जिससे परिवार में खुशी का माहौल बनेगा। आपके परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो इस वर्ष विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपके बच्चे विवेक व बुद्धि से अपनी उन्नति के मार्ग बनाएंगे। पंचम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों को आलसी बना सकती है। उनका रहन सहन व दिनचर्या खराब कर सकती है तथा उनकी शिक्षा दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। अतः आपको उनकी दिनचर्या पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके दूसरे बच्चे की उन्नति होगी और उसके साथ संबंधों में मधुरता आएगी। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो इस वर्ष अवश्य विवाह हो जाएगा।

स्वास्थ्य

यह वर्ष आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा नहीं है। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से परेशान हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। कुछ समय ऐसा भी आएगा जब आप खुद को थका हुआ महसूस करेंगे। परन्तु घबराने की कोई बात नहीं है, क्योंकि कोई स्वास्थ्य संबंधित बड़ी समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आप तनाव व चिंता मुक्त रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। 18 मार्च के बाद भाग्य का सहयोग पूर्ण रूप से मिलने के फलस्वरूप आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों का नए-नए तकनीकी विषय की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासन, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

एकादशस्थ राहु के प्रभाव से अचानक ही आपको सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति व्यापार में अपना करियर बनाना चाहते हैं उनके लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए यह वर्ष आनन्ददायक रहेगा। इच्छित सभी यात्राओं का भरपूर लाभ उठाएंगे। 18 मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक तीर्थ यात्रा भी करेंगे।

व्यवसाय से संबंधित आपकी अनेक यात्राएं होंगी और सभी यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

अधिक व्यस्तता के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके दैनिक पूजा पाठ को भी प्रभावित कर सकती है। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। 18 मार्च से समय बहुत ही शुभ हो रहा है। उस समय आपका दैनिक पूजा पाठ नियमित रूप से होगा। धार्मिक कृत्य व दूसरों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट होंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमानजी को लड्डू का भोग लगाकर गरीबों में प्रसाद वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- पारद शिवलिंग अपने घर में स्थापित कर, सपरिवार उसका दर्शन करें। इसके प्रभाव से सभी दोषों का नाश होगा और आपके परिवार में सुख समृद्धि का वास होगा।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। व्यापार में आपको नए भागीदार भी मिल सकते हैं। व्यापार में हजारों व्यवधान आने के बावजूद भी आपको मुनाफा प्राप्त होगा, साथ ही कारोबार का भी विस्तार होगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। यह परिवर्तन आपके लिए लाभप्रद रहने वाला है।

13 जुलाई से अष्टम भाव में शनि ग्रह का गोचर आपके व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके ला सकता है। आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या विरोधियों द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन शत्रुओं पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे। फिर भी बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। लंबे समय से रुका हुआ धन वापस मिलने का योग है। नौकरी या व्यापार में नए प्रयोग से बचें। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि किसी स्त्री के माध्यम से लाभ या धनागमन का संकेत दे रही है। आयात-निर्यात करने वालों व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। एकादस्थ राहु के कारण आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। आर्थिक उन्नति के बहुत सारे अवसर मिलेंगे। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

13 जुलाई के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण धोखा या धन हानि का योग बन रहा है। अतः आपको शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। माता-पिता की बीमारी में भी आपका धन खर्च हो सकता है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष के पूर्वार्द्ध में अनावश्यक तनाव और विवाद की स्थिति

बनेगी। शत्रु भी सर उठायेंगे और उनके कारण आप अशान्त रह सकते हैं। साथ ही करीबी लोगों का उतना साथ नहीं मिलेगा जितना आप उम्मीद लगाये बैठे हैं। कोई साथ का व्यक्ति जो आपके कार्यस्थल से सम्बन्धित है धोखा दे सकता है या उसके कारण आपको कुछ परेशानी उठानी पड़ सकती है। जीवन साथी का सहयोग तो मिलेगा परन्तु वैचारिक मतभेद बहुत अधिक रहेगा जिसके कारण आप बहुत असहज महसूस कर सकते हैं।

वर्ष का उत्तरार्द्ध पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत ही शुभ रहने वाला है। परिवार में एक-दूसरे के साथ भवनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। आपके माता-पिता के लिए समय काफी शुभ है। परन्तु सास ससुर को शारीरिक कष्ट होगा। नाम प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में समाज में आपका एक अगल व्यक्तित्व होगा।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन्नति करेंगे। दूसरी संतान के लिए वर्ष का प्रथम भाग बहुत ही शुभ है। बच्चों के साथ प्रेम समन्वय में वृद्धि होगी। दूसरी संतान यदि विवाह के योग्य है तो विवाह हो सकता है।

13 जुलाई के बाद पंचम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकती है। जिससे उनकी शिक्षा दीक्षा भी प्रभावित होगी। अतः इस समय के अंतराल में आपको उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य की समस्या उत्पन्न कर सकती है, जिससे आप रक्तचाप, मधुमेह, एलर्जी या मस्तिष्क सम्बन्धी किसी बीमारी से परेशान हो सकते हैं। अतः अत्यधिक सावधानी बरतें और अपना ख्याल रखें। मानसिक तनाव बढ़ सकता है। अनावश्यक यात्राएं होंगी और उसमें भी शारीरिक कष्ट की सम्भावना रहेगी। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए अन्न दान कर सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपका स्वास्थ्य और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे। जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। सुबह जल्दी उठ कर टहलना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को 28 मार्च के बाद नौकरी में अवसर मिलेंगे। माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये यह समय काफी शुभ है।

विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं या विदेशी भाषा सीखना चाहते हैं। तो वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए श्रेष्ठ है। यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त कर उनसे आगे निकलना चाहते हैं, तो आपको नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं भी होंगी। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 28 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तर आप के लिए बहुत अनुकूल रहेगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। आप अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप तीर्थ यात्रा व धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। मन्दिर निर्माण, धार्मिक उत्सव व भण्डादि कार्यों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे। कर्म ही पूजा है, इस वाक्य को चरितार्थ करेंगे।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- सातमुखी रुद्राक्ष शनिवार की प्रातः धारण करें। आपको शनि की शुभता प्राप्त होगी।
- अपने घर में पारद शिव की स्थापना कर सुबह-सुबह उसका दर्शन करें एवं निम्न मन्त्र का पाठ करें-

ॐ नमः शिवाय।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(13/02/2020 - 12/02/2039)

शनि की महादशा आपकी कुण्डली में 13/02/2020 को आरम्भ और 12/02/2039 को समाप्त होगी। इसकी अवधि उन्नीस वर्ष है। आपकी जन्म कुण्डली में शनि षष्ठम भाव में अवस्थित है। इसे एक खतरनाक ग्रह माना जाता है। यह निश्चित रूप से एक अशुभ ग्रह है और परिश्रम के फल की प्राप्ति में विलम्ब करता है, किन्तु उससे वंचित नहीं करता। यह जातक के धर्म की परीक्षा लेने के लिए विभिन्न बाधाएं उत्पन्न करता है और उसे लक्ष्य प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में षष्ठम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि अष्टम, द्वादश और तृतीय भाव पर है और यह इन ग्रहों के कार्य को प्रभावित कर रहा है। षष्ठम भाव बीमारी, रोग, भोजन, रोजगार, सहायकों या नौकरों, ऋण, शत्रु, मामा, कंजूसी और तीव्र दुःख का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

षष्ठम भाव में अपनी ही राशि में स्थित महादशा स्वामी शनि भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है। इसलिए आप लापरवाही के कारण बीमार हो सकते हैं। लापरवाही के कारण रोग जटिल हो सकते हैं और गंभीरता की सम्भावना है। स्थिति अन्ततः असाध्य हो सकती है।

अर्थ और सम्पत्ति :

शनि की षष्ठम भाव में स्थिति अर्थ तथा सम्पत्ति में वृद्धि के लिए अनुकूल योग नहीं है। आपकी अपने सगे-संबंधियों के साथ-साथ अनेक लोगों से शत्रुता हो सकती है और आप लोगों के मातहत रहेंगे जो आपकी अर्थ तथा सम्पत्ति में वृद्धि के लिए शुभ नहीं है।

व्यवसाय :

व्यवसाय में आप दूसरों के अधीनस्थ होंगे। किन्तु ठेकेदारी, खनन, राजगीरी आदि में लाभ की सम्भावना है। आप इन क्षेत्रों में साहसी होंगे किन्तु झगड़ा भी होंगे जो आपको हठी और अतिभोजी बनाएगा।

पारिवारिक जीवन :

आपका विवाह आपके जान पहचान के जातक से हो सकता है। पारिवारिक जीवन ईर्ष्या और विवाद से भरा रहेगा क्योंकि आपके जीवन साथी आपको कुछ विशेषाधिकार से वंचित रखेंगे और कर्तव्य पालन नहीं करेंगे। उनका यह आचरण आपके जीवन को प्रभावित और पारिवारिक जीवन को दुःखमय बनाएगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

उच्च शिक्षा या ज्ञान वर्द्धन अथवा बौद्धिक क्षमता में वृद्धि के लिए समय बहुत अनुकूल नहीं है।

**अंतर्दशा :- शनि - बुध
(15/02/2023 - 26/10/2025)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 13/02/2020 को प्रारंभ होकर 12/02/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 2 वर्ष 8 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 15/02/2023 को प्रारंभ होकर 26/10/2025 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। बुध ज्ञान और बुद्धि का कारक है। सप्तम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के प्रथम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विभिन्न विषयों का ज्ञानार्जन करेंगे, धार्मिक बनेंगे। व्यक्तित्व और शरीर प्रभावशाली होंगे। वेशभूषा उत्तम होगी। जरूरत से अधिक चालाकी से बचाव करना उत्तम रहेगा। ज्ञान के दुरुपयोग से भी बचाव करें।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शनि - केतु
(26/10/2025 - 04/12/2026)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 13/02/2020 को प्रारंभ होकर 12/02/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 26/10/2025 को प्रारंभ होकर 04/12/2026 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। केतु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है। अष्टम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धन और स्त्रियों के पीछे भागते रहेंगे। संयम के अभाव के कारण मूत्र तंत्र की कोई व्याधि हो सकती है। जीवन में सावधानी और नियंत्रण अपनाना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शनि - शुक्र
(04/12/2026 - 03/02/2030)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 13/02/2020 को प्रारंभ होकर 12/02/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 2 मास की

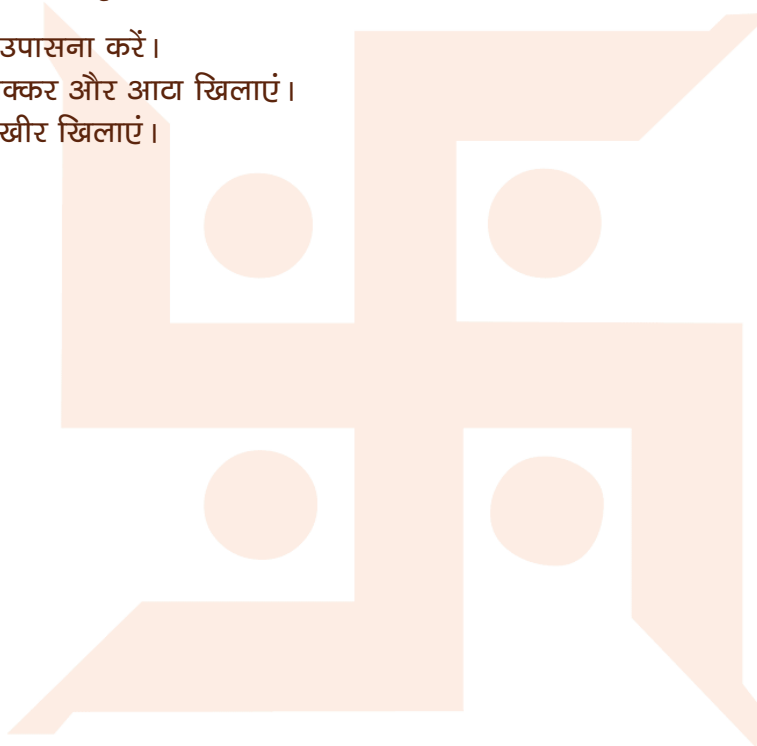
होगी जो आपके लिए 04/12/2026 को प्रारंभ होकर 03/02/2030 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। सप्तम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा, शिष्ट व्यवहार होगा। आमोद-प्रमोद में मन लगेगा। लोकप्रिय होंगे, विशेषकर विपरीत लिंग के व्यक्ति आपकी ओर आकर्षित होंगे। उनसे आवश्यकता से अधिक प्रगाढ़ता न बढ़ाएं, अन्यथा कोई व्याधि हो सकती है। विपरीत लिंग के व्यक्तियों के साथ व्यापार में साझेदारी करने से लाभ होगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें।
- चींटियों को शक्कर और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।



योग

भद्र योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः ।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः ॥
शार्दूलप्रतिमाननो द्विपगतिः पीनोरुवक्षःस्थलो
रम्या पीनसुवृत्तबाहुयुगलस्तत्तुल्यगात्रोच्छ्रयः ।
कामी कोमलसूक्ष्मरोमनिचयैः संरुद्धगण्डस्थलः ।
प्राज्ञः पङ्कजगर्भपाणिचरणः सत्त्वाधिको योगवित् ॥
शङ्खासिकुंजरगदाकुसुमेषकेतु-
चक्राब्जलाङ्गलविचिह्नितपाणिपादः ।
यात्रागजेन्द्रमदवारिकृतार्द्रभूमिः
सत्कुङ्कुमप्रतिमगन्धतनुः सुघोषः ॥
संभूयुगोऽतिमतिमान् खलुशास्त्रवेत्ता
मानोपभोगसहितोऽपि निगूढगुह्यः ।
सत्कुक्षिधर्मनिरतः सुललाटपट्टे
धीरो भवेदसित कुंचित केशपाशः ॥
स्वतन्त्रः सर्व कार्येषु स्वजनं प्रति न क्षमी ।
भुज्यते विभवस्तस्य नित्यमर्थिजनैः परैः ॥
भारं तुलायां तुलयेत्प्रयत्नैः श्रीकान्यकुब्जाधिपतिर्भवेत्सः ।
भद्रोद्भवः पुत्रकलत्रसौख्यो जीवेन्नृपालः शरदामशीतिम् ॥

॥ मानसागरी ॥ अ. 4/श्लोक 2, 1-5 ॥

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर बुध केन्द्र में हो तो भद्रनाम योग बनता है ।

इस योग वाला जातक सिंह के समान आकृतिवाला, हाथी के समान चलने वाला, स्थूल जंघा, विशालवक्षस्थल वाला, हृष्ट-पुष्ट मनोहर बांहो वाला, कामी, विद्वान्, बलवान तथा योगिचित् होता है । हाथ पांव में शङ्ख, चक्र, खड्ग, हस्ती, गदा, पुष्प, वाण, पताका, चक्र, कमल, हल तथा चन्द्रमा आदि चिह्नों से युक्त जातक भाग्यशाली होता है । सुगन्धित शरीर वाला, मधुर आवाज वाला होता है । मानी, भोगी, रहस्य कार्य को छिपाने वाला, धार्मिक, धैर्यवान, इच्छानुकूल काम करने वाला, स्वजनों को क्षमा न करने वाला तथा उसकी संपत्ति को दूसरा भोग करने वाला होता है । तुला में भार (बोझ) तोलने वाला, पुत्र स्त्री से सुख भोगने वाला तथा दीर्घायु होता है ।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है । फलस्वरूप गणितज्ञ, प्रतिष्ठित व्यवसायी, उच्च श्रेणी के प्रकाशक, वाणिज्य विशेषज्ञ उच्चवक्ता तथा अपने

कार्य क्षेत्र में प्रभावशाली व्यक्ति होंगे।

हंस योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः॥
रक्तास्योन्नतनासिकासुचरणो हंसप्रसन्नेन्द्रियो
गौरः पीनकपालरक्तकरजो हंसस्वनः श्लैष्मिकः।
शङ्खाब्जाङ्कुशमत्स्यदामयुगकैः खट्वाङ्गमालाघटै-
श्चंचत्पादकरस्थलो मधुनिभे नेत्रे सुवृत्तं शिरः॥
जलाशयप्रीतिरतीव कामी न याति तृप्तिं वानितासुनून्।
ओच्चः रसाष्टाङ्गुलसम्मितं तत्तनोस्तथायुरिहास्ति षष्टिः॥
वाह्लीकदेशादरशूरसेनगन्धर्वगङ्गायमुनान्तरालान्।
भुक्त्वा वनान्ते निधनं प्रयाति हंसोऽयमुक्तो मुनिभिः प्रमाणैः।

॥ मानसागरी ॥ अ. 4/श्लोक 2, 9 1-3 ॥

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर गुरु केन्द्र में हो तो हंसयोग बनता है।

इस योग वाला जातक ऊंची नासिका (नाक), सुन्दरचरण (पाँव), हंससदृश प्रसन्न इन्द्रिय वाला (जिसकी अङ्ग प्रत्यङ्ग हंस की तरह सुन्दर हों), गौरवर्ण, मधुरवाणी वाला, कफ प्रकृतिवाला, मछली, कमल, अङ्कुश, शङ्ख, दाम, खट्वाङ्ग, माला, जुआ, घड़ा इन चिह्नों से सुशोभित हाथ पाँव वाला, मधु के समान नेत्रवाला और सुन्दर गोलाकार शिर वाला होता है। जलाशय में स्नेह रखने वाला, अत्यन्त कामी, स्त्रियों से तृप्ति न पाने वाला, 86 अङ्गुल ऊँचा शरीर वाला तथा 60 वर्ष तक जीने वाला होता है। वाह्लीक सुरसेन, गन्धर्वादिदेशों में तथा गङ्गा यमुना के मध्य देशों में भोग करके वन में मृत्यु प्राप्त करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप- आप उच्चकोटि के विद्वान, राजनेता, मंत्री, शैक्षणिक क्षेत्र में ख्यातिप्राप्त, धार्मिक संस्था के अध्यक्ष, ज्योतिष के विद्वान या ज्योतिष विषय से सम्बंध रखने वाला, आध्यात्मिक गुरु, प्रवक्ता, संस्था के संस्थापक, शेयरब्रोकर, राजदूत, वित्तीय संस्था के स्वामी तथा विविध-क्षेत्र में ख्यातिप्राप्त करेंगे।

सेवा की दृष्टि से आप शैक्षणिक संस्थाओं के प्राचार्य, धर्मगुरु, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट, प्रशासनिक सेवा आइ. ए. एस. में विशेष ख्याति एवं सफलता प्राप्त करने में अग्रणी होंगे। आप राज्य में मंत्री, कूटनीतिज्ञ, उच्च शास्त्रकार, तथा विधिविशेषज्ञ के रूप में विश्वविख्यात होंगे।

व्यवसाय के दृष्टिकोण आप शैक्षणिक संस्था संचालक, कम्पनी स्वामी, पीले रंग की वस्तुएं, धातुओं के उच्च व्यवसायी, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट कन्सलटेंसी, वित्तीय संस्था के माध्यम से धन के लेन-देन से बहुत लाभ अर्जित करके धनी, ऐश्वर्यशाली, सम्मानित व्यक्ति के रूप में

अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

राजकुलोत्पन्न राजयोग

स्वोच्चत्रिकोणग्रहगैर्बलसंयुतैश्च
त्रयाद्यैर्नृपो भवति भूपतिवंशजातः।

॥ सारावली ॥ अ. 35/श्लोक 2 ॥

यदि जन्म के समय में तीन या उससे अधिक ग्रह अपने उच्च में, मूलत्रिकोण तथा स्वराशि में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति राजकुल में उत्पन्न होकर राजा होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र, बुध, गुरु

योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको समाज में श्रेष्ठ मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अपने परिवार या कुल में आप श्रेष्ठ तथा प्रभावशाली माने जाएंगे। अपने पारिवारिक प्रतिष्ठा की वृद्धि करेंगे। आप सफल होंगे।

शकट योग

जीवान्त्याष्टारिसंस्थे शशिनि तु शकटः॥
क्वचित्क्वचिद्भाग्यपरिच्युतः सन् पुनः पुनः सर्वमुपैति भाग्यम्।
लोकेऽप्रसिद्धोऽपरिहार्यमन्तः शल्यं प्रपन्नः शकटेऽतिदुःखी॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6/श्लोक 14, 17 ॥

यदि पत्रिका में चंद्रमा से 6, 8 या 12 वें स्थान में बृहस्पति हो तो शकट योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र, गुरु

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप जन्मभर दुःखी रहना, जीवन व्यथित रहना, प्रसिद्धि प्राप्त करना, सामान्य जीवन व्यतीत करना, भाग्यहीनता तथा पुनः भाग्य प्राप्ति के योग बनेंगे।

पुष्कलयोग

जन्मेशे सहिते विलग्नपतिना केन्द्रेऽधिमित्रर्क्षगे।
लग्नं पश्यति कश्चिदत्र बलवान्योगो भवेत्पुष्कलः॥
श्रीमान् पुष्कलयोगजो नृपवरैः संमानितो विश्रुतः।
स्वाकल्पाम्बरभूषितः शुभवचाः सर्वोत्तमः स्यात्प्रभुः॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6 ॥ श्लोक 19-20 ॥

यदि जन्मपत्रिका में लग्न का स्वामी और चंद्रमा जिस राशि में है उनके स्वामी एक

साथ केन्द्र में हों तथा अधिमित्र के घर में हो और कोई बलवान ग्रह लग्न को देखे तो पुष्कलयोग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल,बुध,शुक्र

योग की संभावना : 144 में 1

आपकी जन्म कुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप राजाओं/राजपक्ष से सम्मानित होंगे। आप धनी और प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे। आप सुखमयजीवन व्यतीत करेंगे, शुभवक्ता, जनप्रिय और उत्तम पद प्राप्त करेंगे तथा उत्तम वस्त्राभूषण से युक्त रहेंगे।

सरल योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः सरलयोगः।

दीर्घायुष्मान् दृढमतिरभयः श्रीमान्विद्यासुतधनसहितः।

सिद्धारम्भो जितरिपुरमलो विख्याताख्यः प्रभवति सरले॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6/श्लोक 57, 65॥

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश या अष्टम भाव अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो और अष्टम भाव का स्वामी 6वें, 8वें, 12वें भाव में स्थित हों तो सरलयोग बनता है। अष्टमस्थ पाप ग्रह (शनि के अतिरिक्त) अच्छा फल नहीं देगा।

योग कारक ग्रह : सूर्य

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु, दृढ़ निश्चयी, निडर, धनवान, विद्या, पुत्र से युत अपने उद्योग में सफलता प्राप्त करने वाला, शत्रुजीत एवं प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे।

पर्वत योग

लग्नाधिप्राप्तभूपतिस्थितराशिनाथः

स्वोच्चस्वभेषु यदि कोणचतुष्टयस्थः।

योगः स पर्वताख्यः।

स्थिरार्थसौख्यः स्थिरकार्यकर्त्ता क्षितीश्वरः पर्वतयोगजातः॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6/श्लोक 35, 36॥

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश जिस राशि में है, उस राशि का स्वामी अपनी उच्च राशि या स्वराशि में स्थित होकर केंद्र या त्रिकोण में स्थित हो तो पर्वत योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका सुख और धन दोनों स्थिर रहेगा। आप स्थिर कर्म करेंगे। मकान बनवाना, बाग लगाना,

कल-कारखाने की स्थापना आदि आपके स्थिर कार्य होंगी,

चामर योग :

भावैः सौम्ययुतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश ।
प्रत्यहं व्रजति वृद्धिमुदयां शूक्लचन्द्रइवशोभनशीलः ।
कीर्तिमान् जनपतिश्चिरजीवी श्रीनिधिर्भवति चामरजातः ॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6/ श्लोक 44-45 ॥

यदि जन्मकुण्डली में लग्न में शुभ ग्रह हों या लग्न को शुभ ग्रह देखते हों तथा लग्नाधिपति अस्त न होकर उत्तम स्थान में अपनी राशि का या स्वस्थानीय होकर बैठा हो तो चामर योग बनता है ।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है । फलस्वरूप आप शुक्ल पक्ष की चन्द्रमा की तरह वृद्धि को प्राप्त करेंगे । उसी तरह सुशील और सुन्दर भी होंगे । आप लक्ष्मीवान्, कीर्तिवान्, दीर्घायु और लोकपति होंगे ।

पृथ्वीपति योग

पत्न्यौ कुटुम्बस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे ।
शुभ स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुङ्गगे सर्वजनावनीशः ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 3/श्लोक 17 ॥

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव का स्वामी तीसरे शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) से दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि में या अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पृथ्वी का राजा होता है ।

योग कारक ग्रह : सूर्य, शनि

योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है । फलस्वरूप आप कई देशों में सेवा करने वाले राष्ट्राध्यक्ष, राजदूत और उच्चस्तरीय राज्याधिकारी होंगे ।

नौका योग

होरादिकष्टकेभ्यः सप्तर्क्षगतैः क्रमेण योगाः स्युः ।
सलिलोपजीविविभवा बह्वाशाः ख्यातकीर्तयो हृष्टाः ।
कृपणा बलिनो लुब्धा नौसम्भूताश्चलाः पुरुषाः ॥

॥ सारावली ॥ अ. 21/श्लोक 11, 21 ॥

यदि जन्मपत्रिका में लग्न से सप्तम स्थान तक ही सातों ग्रह स्थित हों तो

नौका योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र

योग की संभावना : 45 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में नौकायोग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप जल द्वारा जीविका करके अधिक विभव तथा धन लाभ कर्ता, प्रसिद्ध, यशस्वी, आशावान, प्रसन्न चित्त, कृपण, बली, लालची और चंचल स्वभाव के प्राणी होंगे।

सुनफा योग

सुनफा रविरहितैः वित्तसंस्थैः कैरववनबान्धवाद्विहगैः।

श्रीमान् स्वबाहुविभवो बहुधर्मशीलः

शास्त्रार्थविद्बहुयशाः सुगुणाभिरामः।

शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथ वा स्यात्।

सुतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने॥

॥ सारावली ॥ अ. 13/श्लोक 1, 4॥

यदि जन्मकुंडली में सूर्य को छोड़कर चंद्रमा से धनभाव में कोई ग्रह हो तो सुनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल, बुध, शुक्र, चंद्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप लक्ष्मीवान्, अपने परिश्रम से धनार्जन करने वाले, धार्मिक, यशस्वी, गुणी, शान्तप्रिय, सुखी, राजा या मंत्री होंगे।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-49 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य, राहु, शनि

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

अनेक वाहन प्राप्ति योग

सुखेश्वरे केन्द्रगते तदीशे लग्नस्थिते वा बहुवाहनाढ्यः।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-163 ॥

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थेश केन्द्रस्थ हो जिस राशि में सुखेश है उसका स्वामी लग्न में हो तो जातक को बहुत वाहनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक वाहनों का सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 5/श्लो.-35 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध, गुरु, शुक्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

गुल्म रोग योग

तथाभूते शनौ गुल्मरोगो वात्र विशेषतः ।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि अ.-5/श्लो.-35 ॥

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठस्थान में शनि षष्ठेश पाप युक्त या पाप दृष्ट हो तो जातक को विशेषकर गुल्म रोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि, मंगल

योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको गुल्मरोग (त्वचा रोग) होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वात (वायु) रोग योग

षष्ठाष्टमे मन्दे वातामयम् ।

॥ फलदीपिका-अ. 14/श्लो.-11 ॥

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठ या अष्टम भाव में शनि स्थित हो तो वात रोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप वात रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

गुल्म रोग योग

षष्ठाष्टमे सेन्द्रौ शनौ गुल्मजम्।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-11॥

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठ या अष्टम भाव में शनि के साथ चंद्रमा स्थित हो तो गुल्म रोग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र, शनि

योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको गुल्म/तिल्ली/यकृत रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यग्रहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।

अक्लेशजातं मरणं नराणाम्॥

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21॥

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः

सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप

मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः

सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्तराश्वंशतः।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुण्ठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,मंगल

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुण्ठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः

सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्तराश्वंशतः।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः।

सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्तराश्वंशतः॥

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,मंगल

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रहीन योग

पुत्रेश्वरे दारपतौ बलाढ्ये दृष्टे युते वा त्वरिनायकेन जातोऽनपत्यः ।
॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ-6/श्लो.-7 ॥

यदि जन्मकुंडली में पंचमेश एवं सप्तमेश बलिष्ठ होकर षष्ठेश से युक्त या दृष्ट हो तो जातक को पुत्र नहीं होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल, बुध, शुक्र

योग की संभावना : 288 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। अतः आप पुत्रहीन होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ॥
॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-14 ॥

यदि जन्मकुंडली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : सूर्य, चंद्र, शनि

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

द्वि-विवाहयोग

शुभग्रहेण संयुक्तः कलत्रेशेऽरिनीचगे ।
पापे कलत्रराशिस्थे विवाहद्वयमादिशेत् ॥
॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-18 ॥

यदि जन्मकुंडली में सप्तमेश शत्रु या नीच राशि में शुभ ग्रह से दृष्ट हो और सप्तम में पाप ग्रह हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल, बुध

योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो जीवनसाथी हो ऐसी संभावना है।

बहुस्त्री योग

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।

बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-31 ॥

यदि जन्मकुण्डली में लाभेश सप्तमेश से युक्त हों अथवा परस्पर देखते हों और बलिष्ठ हो या त्रिकोणस्थ हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र

योग की संभावना : 172 में 1

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका संबन्ध कई से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।

शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभागभवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-40 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : बुध, गुरु, शुक्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रैस्तगे चोपचयान्विते वा ।

कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-62 ॥

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरान्त भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र, बुध, गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरान्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सर्पदंश से स्त्री मृत्यु योग

कुटुम्बस्थानगे राहुः कलत्रे भौमसंयुते ।
पाणिग्रहे विवाहे च सर्पदंष्ट्रे वधूमृतिः ॥

॥ बृहद् पाराशरहोराशास्त्रम् ॥ अ.12/श्लो.-

यदि जन्मपत्रिका में धन (द्वितीय) भाव में राहु हो और सप्तम स्थान में मंगल हो तो विवाह के पश्चात् सर्पदंश से स्त्री की मृत्यु हो जाती है ।

योग कारक ग्रह : राहु,मंगल

योग की संभावना : 144 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आपके जीवनसाथी की मृत्यु सर्पदंश से हो जाए, ऐसा संभाव्य है ।

दीर्घायु में विवाह योग

॥ भारतीय ज्योतिष ॥ पृ. 301-9 ॥

यदि जन्मपत्रिका में शुक्र और बुध सप्तम भाव में हो तथा शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो विवाह अधिक आयु में होता है ।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध,गुरु

योग की संभावना : 288 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आपका विवाह अधिक उम्र में हो ऐसा प्रतीत होता है ।

द्विभार्या योग

॥ भारतीय ज्योतिष ॥ पृ. 302-6 ॥

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश सप्तमेश और राशीश द्विस्वभाव राशि में हों तो द्विभार्या योग बनता है ।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र,बुध

योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आपका दो विवाह संभाव्य है ।

द्विभार्या योग

लग्नेशेंगे द्विभार्यो जारो वा ॥

॥ बृहद्योग रत्नाकर ॥ पृ. 303 ॥

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश लग्नस्थ हो तो द्वि भार्या योग होकर जार (व्यभिचारी) रहता है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

धनेशे षष्ठे दारे पापे द्विभार्यः।

॥ बृहद्योग रत्नाकर ॥ पृ. 302 ॥

यदि जन्मपत्रिका में धनेश षष्ठ भाव में हो तथा सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्वि भार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल, शनि

योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः।

॥ बृहद्योग रत्नाकर ॥ पृ. 303 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएंगे, अर्थात् आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

धर्म कार्य में धन व्यय योग

व्ययाधिपसमायुक्तनवभागपतौ शुभे।

शुभांशे शुभमध्यस्थे धर्ममूलाद्धनव्ययः॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.8/व्ययभाव-4 ॥

यदि जन्मपत्रिका में व्ययेश जिस नवांश में हो वह शुभग्रह हो एवं शुभग्रह के अंशक में शुभग्रहों के मध्य हो तो धर्म कार्य में धन का व्यय होता है।

योग कारक ग्रह : बुध, शुक्र, मंगल

योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अपने धन का व्यय धर्मकार्य में करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पारिजात योग

“सपारिजातद्युचरः सुखानि ।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिसकी पत्रिका के “पारिजात” भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य, राहु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह “पारिजात” वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

“नीरोगतामुत्तमवर्गयातः ।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिस जातक की पत्रिका के “उत्तमवर्ग” भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : मंगल, बुध

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह “उत्तमवर्ग” में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

“सगोपुरांशो यदि गोधनानि ”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिस जातक की पत्रिका में “गोपुरांश” भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र, गुरु

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में “गोपुरांश” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

वेशि योग

”धनखेटैर्वेशी दिनेशात्”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ॥

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : मंगल, बुध, शुक्र, सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “वेशि” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।

